भौंक

भौक

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

Bhauk

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-32-3

दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2019)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा-सत्तैर

भौक

जेठ मासक एगारह बजे दिनमे, सबेर-सकाल, खा-पीब गाछीक मचानपर सुतैक खियालसँ पड़ले रही कि दछिनवरिया रस्ता दिससँ एक गोरे फाँढ़ बन्हने, माथपर तौनी उड़ियाइत लफड़ल अबैत रहैथ।

बीच गाछीमे पूबे-पच्छिमे मचान-खोपड़ी देने छिऐ। अपन ओछाइन-बिछाइन स्थाइये रूपेँ भरि आम–जाबे तक आमक ओगरबाहि चलैए–गाछीमे रखिते छी।

पूब सिरहाने बामा करे पड़बे कएल रही कि हुनका अबैत देखने रहिऐन। जहिना अपन-अपन जीवनानुकूल अपन-अपन विचारो पलिते अछि तहिना अपनौं पालनहि छी।

हुनका अबैत जे देखलयैन तँ अपने मनमे फुरि गेल- 'एकटा ओ वेचारे छैथ जे घरवालीक कारणे रौद तपै छैथ आ अपने छी जे पत्नी सबेर-सकाल खुआ-पीआ आराम करए गाछी पठा दइ छैथ.! ई दीगर भेल जे रंग-रंगक आम खाइक लोभे ओ हमरा ओगरवाह बना ओगरवाहिये करैले किए ने आमक गाछी अरियाइत कऽ पठा दैत होइथ।

गामक दच्छिनवरिया बाघमे जेते ऊँचरस जमीन अछि–माने जेकरा चौमास कहै छिऐ, चौमास भेल जे खेत चारू मौसममे फसलसँ लहलहा सकैए। भलेँ ओइ चौमास चासक सदगैत अछि आकि दुरगैत ई विचारणीय प्रश्न अछि। आमक गाछी लगल अछि। सालमे एक बेर आम फड़ैए, सेहो सभ साल सोल्होअना फरबे करत, सेहो नहियेँ कहल जा

सकैए। जँ फड़बो करैए तँ मात्र एक-सँ-डेढ़ मास लोक खाइए। भलेँ अमृते फल आम किए ने हुअए, मुदा ओ नसीब केतेक होइए, माने केते दिन तक खाइ छी, ईहो विचारणीय अछिए। खाएर जे अछि जेतए अछि से तेतए रहउ...।

ओ जखन दस लग्गाक बीच करीब पहुँचला तखन चिन्हलयैन जे दीनबन्धु काका छैथ।

दीनबन्धु काकाकेँ देखिते अपने उठि कऽ बैसैत बजलौं-

"काका, एना हकासल-पियासल केतए-सँ अबै छी?"

एक तँ जेठुआ रौदक देह तबधल रहैन तैपर सँ पत्नीक आदेश पूर्ति नहि भेल छेलैन, तइसँ मनो तबधल रहबे करैन। संजोग भेल, दीनबन्धु काका मचानपर आबि बैसला।

ओना, ताड़बला पंखा अपनो रखबे करै छी, मुदा कनी-कनी जे पुरबा हवा लहकी दैत रहै तइसँ पंखा झेलब छोड़ि, ओइ लहकीक आनन्द लइक विचार मनमे छेलए। मुदा रौदाएल दीनबन्धु कक्काक हालत देखि हाँइ-हाँइ पंखाक हवा दिअ लगलयैन।

करीब दस मिनटक पछाइत दीनबन्धु कक्काक मन थीर भेलैन। मन थीर होइते बजला-

"बड़का आफतमे पड़ि गेल छी..!"

'बड़का आफत' सुनि मन चौंकल। की आफत भऽ गेल छैन ..! मुदा अपनो मन बजैसँ रोकि रहल छल। किए तँ कोनो आफत सुनब एक भेल आ ओइ आफतक निमरजना करब दोसर भेल। ऐठाम तँ अपन आमक गाछीक मचानपर बैसल छी, मुदा तैयो जी जाँति बजैक साहस केलौं। 'जी जाँति'क माने भेल जे जे अपन शक्तिसँ हएत ओ करब आ जे नहि हएत ओ कहि देबैन जे हमरा बुत्ते नहि हएत। पुछलयैन-

"की आफतमे पड़ल छी काका?"

छगाएल मन दीनबन्धु कक्काक रहबे करैन, तँए प्रश्नक उत्तर की हेबा चाही तैपर सँ मन घुसकल रहबे करैन। अनधुन बजला- "एतेक हरानसँ रौदी भगत ऐठाम गेबो केलौं आ भेँटो ने भेल !"

दीनबन्धु कक्काक बातक कोनो भाँजे ने पेलौं जे की बजला?

भाँजपर चढ़बैत बजलौं - "कोन एहेन उताहुल भऽ गेल?"

मनक व्यग्रता बुझि आकि समैयक, दीनबन्धु कक्काक मन जेना व्यग्र-सँ-व्यग्रतम स्थितिमे पहुँच गेलैन। मुदा केतबो व्यग्र किए ने होनि, जाबे सहिट विचार–समतल मनोवृत्ति–नहि बनतैन ताबे कोनो विचारकेँ समुचित ढंगसँ बुझि केना पएब? तहूमे गाछीक मचानपर छी, जैठाम ओछाइन कएल मचान आ एकटा सुराहीमे पानि आ ऊपरमे स्टीलिया लोटा मात्र अछि। आन कोनो वस्तु ने खाइ-पीबैबला अछि आ ने आने कोनो जरूरतक पूर्ति लेल किछु अछि। ऐठाम कइये की सकै छी। तैयो बजलौं-

"काका, पानि पीब? आन चीज तँ अछि नहि, तमाकुल खाइ छी चुनौटी संगमे अछि।"

हमर बात दीनबन्धु काका सुनलैन आकि नइ सुनलैन से ओ जानैथ, मुदा मन जे व्यग्र रहैन तइसँ अपना बुझि पड़ल जे नीक जकाँ हमरा बातपर कनबाहि नइ देलैन। बजला-

"अखन ने तमाकुल खाइक मन होइए आ ने पानियेँ पीबैक!"

विचारक क्रममे अपनो विचार क्रमगत भऽ गेल छल। बजलौं-

"तखन?"

'तखन'क माने दीनबन्धु काकाकेँ जे लगल होनि मुदा बजला-

"देखहक जे भोरे–जलखैये केलाक पछाइत–रौदी भगत ऐठाम काजे गेल छेलौं से भेँटे ने भेल।"

पुछलयैन- "किए ने भेँट भेल गाममे रौदी नहि अछि की?"

दीनबन्धु काका बजला- “हँ! गामेमे नइ अछि। राम-रहीम बाबाक संगबे सभ कामाख्या जाइ छल तेकरे संग ओहो धऽ लेलक।”

रंग-रंगक लोक धरतीपर जहिना अछि तहिना रंग-रंगक बुधियो-विवेक, चालियो-ढालि आ किरियो-करम तँ अछिए। ने केकरो गाम-घरक ठौर-ठेकान अछि आ ने जाति-सम्प्रदायिक। सभ अपने ताले बेताल अछिए। सबहक विचार यएह छै जे सभसँ नीक हमहीं छी। बाँकी जेते अछि से सभ अधले अछि। भलैं ओ अपन जिनगियो आ अपन किरियो-कलाप बुझैत हुअए वा नहि...।

ओना, मनमे बहुत रास विचार जागल मुदा विचारक विचार करबोक तँ अपन-अपन जगह होइते छइ। ऐठाम तँ कोनो तेहेन जगहो नहियेँ देखि रहल छी जे दोसर बात पुछितिऐन। बजलौं -

“केहेन काज रौदी भगतसँ अछि काका?”

‘केहेन काज’ सुनिते दीनबन्धु कक्काक विचारक रंगक संग चेहरोक रंग एकाएक बदैल गेलैन। चेहरो आ विचारोक रंग तँ बदललैन मुदा मात्र ऊपरी! माने जहिना कोनो सुतल आदमीक सपना अदहापर अबिते नीन टुटि गेने अधडरेरेपर सपनाक रूप लटैक जाइए तहिना दीनबन्धु कक्काक सेहो छेलैन। बजला-

“पत्नीक मोबाइल हेरा गेलैन आकि चोरा लेलकैन से फरिछा कऽ तँ नै कहली, कहली हेन एतबे जे मोबाइल कियो लऽ लेलक अछि। तेकरे भाँज लगबए रौदी भगत लग गेल छेलौं। ”

पत्नीक मोबाइल कियो लऽ लेलकैन, से रौदी भगत केना बुझत जे के लेलकैन? ओ ओइठाम छल तँ नहि जे देखलकैन? जँ देखलकैन तँ तही समय किए ने कहबो केलकैन आ छीन कऽ दइयो देलकैन..? ओना, मनमे ईहो उठि रहल छल जे एक तँ पत्नीक पीड़ामे दीनबन्धु काका अपने पाण्डु रोगी जकाँ पीअर भेल जा रहल छैथ, तैपर सँ जँ हमहूँ पियरका रंग

घोरि कपारपर उझैल दिऐन सेहो नीक नहियेँ बुझि पड़ल। तँए एना कऽ बजलौं-

"रौदी भगत भाँज लगा देत?"

जेना केकरो उड़ैत आबि मच्छर आकि डाँस काटि लइ छै आ ओ छिलमिला उठैए तहिना छिलमिलाइत दीनबन्धु काका बजला-

"अपना इलाकामे ऐसँ बेसी जगताजोर भगत दोसर थोड़े अछि! रौदी ओहन भगत अछि जे आँतमे जँ कियो कोनो चोरेलहा चीज राखत तेकरा ओ ऊपरे-ऊपरसँ निकालि दैत।"

मन मानि गेल जे दीनबन्धु काका अखन एकभग्गू विचारक भऽ गेल छैथ तँए विचारकेँ ओत्तै रोकि बजलौं -

"मोबाइल हेरेलैन केतए?"

असियाएल दीनबन्धु काकाकेँ हमर बात सुनिते आरो आस लगि गेलैन। बजला-

"चारिम दिन पत्नी स्त्रीगणक संग देवरिया गेल छेली। ओत्तै मोबाइल हरेलैन।"

पुछलयैन-

"देवरिया किए गेल छेली?"

हलसल-फुलसल मने दीनबन्धु काका बजला-

"हालेमे, दस-बारह दिन पहिने, एकटा स्त्रीगणकेँ सपनौती भेलैन।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"की सपनौती भेलैन?"

दीनबन्धु काका जोर दैत बजला-

"एकरा सोल्होअना सपनौतीए नहि बुझह। हजारक हजार जनि-

जातियो आ पुरुखक संग धियो-पुताक सभ रोग–माने दैही-दैविक सभटा दुख–मेटा गेल, छुटि गेल।”

ओना, अपनो काने सैकड़ो मुँहक बात सुननहि छेलौं जे एकटा स्त्रीगण अपन गहबरक, ओना गहबर पहिने नहि छल, पीपरक गाछक निच्चाँमे आठ दिन पहिने बनल छल, एक चुटकी माटि जेकरा दइए ओकरा देहमे जे कोनो बर-बेमारी रहै छै, ओ निठाही छुटि जाइ छइ। मुदा अपन मन एहेन-एहेन अन्धबिसवासू हवा-बिहाड़ि केतेको देखि-सुनि चुकल अछि तँए बिसवास किए करब। कहियो मोहुक गाछमे सटलासँ रोग-वियाधि भागल, तँ कहियो एक चुटकी माटिसँ भगौले गेल अछि। केते रोग-वियाधि भागल आ केते लोककेँ भगौलक ई तँ सभ जानियेँ रहल छी...। तैयो दीनबन्धु काका ओहन विचारक नहि छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। पहिलुका विचारक (अन्धविश्वासक) जेते छैथ ओइमे सँ किछु धक्का-पंजा लगने समहरबो केलाह अछि मुदा सभ सम्हैरिये गेला सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। साँप जहिना साले-साल सौन मासमे केचुआ छोड़ि विष परिमार्जन करैए तहिना समैयक संग समयकर्त्ता नहि करैए सेहो तँ करिते अछि। खाएर जेतए जे अछि मुदा ऐठाम तँ दीनबन्धु कक्काक प्रतिष्ठा पत्नीक दाउपर चढ़ल छैन...। बजलौं -

“जखन रौदी भगत नइ भेटल, किए तँ कामाख्ये गेल अछि तखन कोनो ठेकान छै जे कहिया औत। कहाँ-दन ओम्हर–कामाख्या दिस– पुरुखकेँ स्त्रीगण सभ भेड़ा-भेड़ी, गदहा-गदही बना-बना बाधमे खुट्टा-खुट्टीमे ठोकि भरि दिन चरबैए आ साँझूपहरमे घरपर आनि पुरुख बनबैए।”

हमर बात सुनि दीनबन्धु काकाकेँ मनमे की भेलैन से तँ ओ जानैथ मुदा जहिना केकरो मिरचाइक कड़ूपनसँ सुरसुरी अबै छै तहिना सुसुआइत बजला- “बौआ, घरवालीक बातपर ओते धियान नहियोँ दइतौं, मुदा तोंहू तँ देखिते छहक जे गाम-समाज हौ आकि आने-आन

समाज, केकरो-मे-केकरो मेदहा[1] नइ अछि। तैसंग बेटो-पुतोहुक किरदानी देखिते छहक जे मिथिलांचलक महामंत्र–माता-पिताक सेवा–क लेल बिहार सरकारकेँ कानून बनबए पड़ि रहल छइ। तखन तोहीं कहह जे की नीक हएत?”

‘की नीक हएत’ सुनि मन वौआए लगल, एक दिस जहिना नव-नव तकनीक एने जिनगी सुलभ भेल अछि जइसँ परिवारक चिनमार तक नव तकनीक पहुँच गेल अछि तँ तहिना दोसर दिस अन्धबिसवास सेहो सौनक साँप जकाँ केचुआ छोड़ि-छोड़ि नव-नव रंग चढ़बैत विचारसँ लऽ कऽ बेवहार धरिमे आबि घरो-आँगना पहुँच गेल अछि..! बजलौं-

“काका की करबै, दुनियेँ जखन भौकमे पड़ि भकुआ गेल अछि तखन तँ अहीमे ने सभ छी।”

दीनबन्धु काका बजला-

“कोनो उपाय?”

बजलौं-

“हँ काका, उपाय किए ने रहत! ओना नइ भेटत मोबाइल, ओकर नम्बर लऽ कऽ आगू बढ़ू। भगता -भुगतीक विचार मनसँ हटाउ।”

“सएह!”

दीनबन्धु कक्काक मुँहक ‘सएह’ सुनि हमरो मुहसँ निकलल-

“हँ तँ सएह ने नीक।”

❑ *शब्द संख्या : 1403, तिथि : 14 जून 2019*

मनतरक पावर

सभ दिन जहिना अपन निर्धारित समयपर चाह-पान खेला-पीला पछाइत काज करए जाइ छी तहिना आइयो सबेरे सात बजे कोदारि-खुरपी नेने खेत दिस विदा भेलौं।

दरबज्जापर सँ निकैलते मनमे मौसमक बदलैत मिजाज देखि रंग-रंगक विचारो आ नव ढंगसँ करैयोक उमकी उठि रहल छल। जे सोभाविको अछिए। सोभाविक एना अछि जे जँ अहाँ आमक संग सेव रोपै छी तँ आम रोपैक संग उपजबैक ढंग सेहो सीखए पड़त, तहिना सेवक वास्ते सेहो सेवक ढंग सीखैये पड़त...।

मौसमक बदलैत मिजाज देखि अपनो मिजाजकेँ बदलब जरूरी अछिए। दस लग्गा आरो आगू बढ़लौं कि आगूए-सँ–माने दच्छिनसँ–लुटन भाय अबैत रहैथ आ अपने उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ जाइत रही। उत्तरे-दच्छिने रस्ता अछि।

लग अबिते लुटन भायपर सोल्होअना नजैर पड़ल। लुटन भाइक मुँह धुआँ-धुआँ भेल रहैन। मुदा जखन सभ दिनसँ लुटन भाइक संग हेमो-छेम आ बजो-भुकी चलि आबि रहल अछि तखन जँ नइ टोकितिऐन सेहो केहेन होएत! बजलौं-

“लुटन भाय! भोरे-भोर किमहर-किमहर?”

ओना, लुटन भायकेँ मन धुआँइक कारण दोसर दिसक छेलैन तँए किए ओ हमरा जवाब देब छोड़ितैथ। बजला- “की कहबह, औझुका

यात्रा भोरे-भोर बिगैड़ गेल!”

लुटन भाय एक बतरिये छैथ मुदा हुनकर बेसी प्रतिष्ठा गाममे रहने हमहूँ भाइये कहै छिऐन आ ओ हमरा हराशंखे कहै छैथ।

हराशंखकेँ समुद्री शंख नहि बुझब ओ हमर नाओं छी। नामो ओहन छी जे माता-पिताक देल अछि। आनो-आन सभ हराशंखे कहै छैथ, किए ने कहता? जखन हमर नामे छी...।

ओना, लुटन भाय पूर्ण मनतरिया छैथ, मुदा साँपक तँ विशेषज्ञे छैथ। पूर्ण मनतरियाक माने भेल, साँपसँ लऽ कऽ छुछुनैर, मूस बीच्छ इत्यादि कीड़ी-फतिंगीक काटल वा चाटलक बीख मनतरसँ उतारि दइ छथिन। आमदनियोँ नीक छैन आ समाजमे मान-प्रतिष्ठा सेहो एतेक छैन जे बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ अपनासँ उमेरगर धरि कियो 'लुटन बौआ', कियो 'लुटन बच्चा' कहै छैन आ अपनासँ छोट 'लुटन भैया', 'लुटन काका', 'लुटन बाबा' सेहो कहिते छैन। तेतबे नहि, सोझमे पड़ने प्रणामो-पाती सभ करिते छैन। ई तँ भेल लुटन भाइक बात मुदा अपना तेहेन नइ अछि, तँए ओ बेसी प्रतिष्ठित छैथ अपने कम छी। कम की छी जे नहियेँ छी। ओना, तइले मनक मियादिमे मिसियो भरि बेथ-बेथा नहियेँ अछि। अपन मिजाज अछि, अपना मिजाजे बुझै छी जे जेते बेसी लोकक प्रणाम-पाती हएत तेते बेसी अपन समैयो गमाएत, जेते अपन काजक समय गमाएत तेते क्षतियो अपने हएत। अनेरे प्रणामे-पातीमे अधिक समय चलि जाएत। तइसँ नीक ने हएत जे ओइ समयकेँ सार्वजनिक बना बहुजन हिताइमे लगा दिऐ।

लुटन भाय बजला जे भोरे-भोर जतरा बिगैड़ गेल। भोरो तँ सबहक अपन-अपन अछि। जहिना मनुखक भोर भेल 'बालपन', तहिना ने विचारक भोर भेल 'बालबोध', करखानामे रातुक ड्यूटी केनिहारक एक पालीबलाक साँझ पड़ल, तँ दोसर पालीमे काज केनिहारक भोरे ने भेल?

मन ओझराए लगल मुदा तेकरा सोझरा जिज्ञासा करैत बजलौं -

“से की भाय साहैब?”

‘भाय साहैब’ सुनि आकि मनक उत्सुकता बुझि लुटन भाय कनी थकथकेला। मुदा चटसार परहक लोक लुटन भाय छथिए। तहूमे चटाइपर बैस चटिया अपन भविस-ले जैठाम झरवैए से चटसार नहि, चाटीसँ साँपक बीख उतारनिहारक जे चटसार होइत ओइ चटसार परहक मनतरिया आ कानमे डाकैन दइबला लोक छैथ लुटन भाय।

ओना, जखन निचेनमे–माने जखन कोनो काज-उदम नहि रहल तखन–दुनू गोरे एकठाम होइ छी तँ कहबो करै छिऐन जे ‘लुटन भाय, अहाँ नव जुगक रहितो पुरान जुगक विचारसँ चलि रहल छी, जे समयानुकूल नइ अछि, तँए एक-ने-एक दिन समुद्रक फेन जकाँ बुझियौ आकि दूधक फेन जकाँ अनेरे छना कऽ फेका जाएब। ’ मुदा लुटन भाय हमरा विचारपर किए कान देता। आमदनियोँ छैन आ नीक मानो-प्रतिष्ठा छैन्हे।

भोरक समय छेलैहे रातुक सुतल मनो उठिये चुकल छल माने विचारो जगिये चुकल छल। मन एकाएक कहलक जे एना जे रामायणिक एक पाँति पढ़ि सम्पूर्ण रामायणिक रामकथा सुना दइ छिऐ तइसँ काज नहि चलत। विचारकेँ जाधैर बेवहारिक रूपमे जाँचल-परिखल नहि जाइए ताधैर ओ काँच-कुच, सड़ल-गलल सभ नीके रहैए मुदा जखन बेवहारक कसौटीपर कसि ओकरा जाँचल जाइए तखन ओ परेखमे अबैए। जखन ओ परेखमे अबैए तखन परखनिहार बुझै छैथ जे ई प्राण-पखेरु अछि आकि जीवनक जान-पखेरु..! मुदा ऐ लेल विचारक प्रगाढ़ताक जरूरत अछिए। ओना, तइमे अपनो अधकचड़े छी, किए तँ केतौ अधलाकेँ अधला बुझि बाजियो दइ छी, मुदा केतौ-केतौ एहेन नइ होइए जे अधलोकेँ नीक नहि कहा जाइए सेहो कहाइयो जाइए आ कराइयो जाइते अछि।

अधरतियेमे एक गोरेकेँ साँप काटि लेलकैन। हुनकर समांग दौड़ल

आबि लुटन भायकेँ कहलकैन। जहिना मरीज वा मरीजा, माने रोगी, कहालीकेँ देखि डॉक्टर अपन लक्ष्मीक आवाहन बुझै छैथ तहिना लुटन भाय सेहो बुझिते छैथ। दिनक पहिल काज बुझू आकि चारि बजे भोरक पहिल काज बुझि लुटन भाय विदा भेला। ओना, विदा होइसँ पहिने लुटन भाय ठोर पटपटा-पटपटा अपन देह बन्हैबला मंत्र पढ़ि देह बान्हि लेलैन तखन विदा भेला।

ओना, जिनका साँप कटने रहैन तिनका ऐठाम लुटन भाय पहुँचते लटुआएल सँपकटिया-रोगीक कानमे जोरसँ डाकैन देलखिन कि ओहीकाल ओकर प्राण छुटि गेलइ...।

अखन तक लुटनो भाय हजारोठाम बाजि चुकल छला जे केहनो जुआएल-सँ-जुआएल माने विषधर-सँ-विषधर साँप किए ने कटने रहौ, मुदा जँ ओइठाम पएर दऽ देब तँ कालकेँ के कहए जे महाकालो जँ आएल रहत तँ ओकरा बिना भगने कोनो उपाय नहि छइ...।

सुरसा जकाँ अपन रूप लुटन भाय बनौनहि छैथ। ओना, साँप कटलाहा मरै नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि। विष जखन सौंसे शरीरमे निजा जाइ छै तखन रक्तक संचालन बन्न भेने मरिते अछि। मुदा तेकरा लुटन भाय विधिक विधान बना टारि कऽ अपन जान बँचा लइ छैथ...।

बड़ीकालक बाद लुटन भाय मुँह खोलि बजला-

“हराशंख, मनक बात केकरा कहब। तूँ तँ लंगोटिया संगी छिअ तँए कहैमे कोनो संकोच नहि।”

लुटन भाइक मुँहक बात ‘लंगोटिया संगी’ सुनि मन तड़कल। तड़कल ई जे लंगोटियो संगी तँ एक्के रंगक नहि होइए। ओहो तँ अनेको रंगक अछि। एक भेल जे छोट-छोट बबाजी सभ जकाँ धरिया कहियौ आकि लंगोटा-कोंपीन पहीरि एकठाम रहि खेलेबो-धुपेबो करैए आ खेबो-पीबो करैए। मुदा हमरा संग लुटन भाइक एहेन सम्बन्ध तँ नहियेँ अछि।

तखन तँ भेल जे कोनो काज करैले अखड़ाहा बना ओइपर कच्छी, जंघिया वा लंगोटा बान्हि उतरलौं, सेहो तँ नहियेँ अछि! तखन केना हम हुनकर लंगोटिया संगी भेलिऐन? खाएर जे बजला से अपना मुहेँ बजला, अपने बेसी-सँ-बेसी एतबे ने कऽ सकै छी, जे हुनकर मुँहक बात अपना मुहेँ नहि बाजब। बजलौं- "लुटन भाय, मनक बातमे जे मैल बुझि पड़ैए ओकरा जेते जल्दी हुअए निकालि कऽ दोसरक कान तक पहुँचा अपन सफाइ कऽ ली।"

हमरा विचारसँ जेना लुटन भायकेँ सह भेटलैन तहिना बजला-

"हराशंख! तोहीं कहऽ जे हम केकरो प्राण विधातासँ छीन कऽ आनि दऽ सकै छिऐ? भाय! विषैला साँप कटलकै, मरल! तइमे हमर कोन दोख?"

नट खलीफा जकाँ लुटन भाय पेतरा तँ खूब भरि रहल छला मुदा जड़ि दिस बढ़िये ने रहल छला। बिटियबैत बजलौं -

"लुटन भाय, अहाँ समाजमे कहिया अनर्गल आकि अनुचित काज केलौं जे मुँहचुरु हएब।"

जेना हमरे हाथमे सौंसे गामक लोको आ लोकक विचारो हुअए तहिना लुटन भाय बुझलैन। बजला-

"कहऽ जे ई उचित भेल जे उमकलाल सभ समांग कोनो दशा बाँकी नइ रखलक!"

लुटन भाइक विचार भाँजपर फेर नहि चढ़ल। कोनो दशाक की माने? वैचारिक कहाकही आकि कोनो वस्तुजात-ले गारि-गरौवैलिक संग-संग मारियो-पीट? अदहे जीबे बजलौं-

"से की भाय साहैब?"

सत् सँ भेँट भेला पछाइत माने सत्यकेँ सत् बुझला पछाइत बुझनिहार जहिना अपनो बुझए लगैए जे की गलती भेल, तहिना लुटन

भायकेँ सेहो भेलैन। ओना, अखन तक लुटन भाय ऊपरे-घारे छला जे सभ साँपक बीख एक्के रंग होइए, जे मनतरसँ उतैर जाइए। ई नहि बुझै छला जे हजारो किस्मक साँपमे किछु एहेन साँप अछि जेकरा बीख् होइते ने छै माने ओ मात्र साँपक आकारमे अछि आ बेंग सभ बिछ-बिछ खाइए, तँए कि ओहन साँप नहि अछि जेकर बीख हेट करब अखनो धरि मेडिकलो साइंसक पहुँचसँ बाहर अछि।

एक-दू सँ साए धरि जहिना अंकक गिनती अछि , जइमे महतक कमी-बेसी होइते अछि तहिना साँपोक बीखक तँ अछिए जे कोनोमे बीखक मात्रा अछिये नहि, कोनोमे थोड़-थाड़ अछि तँ कोनोमे थोड़-बहुत। तहिना कोनोमे बहुत अछि तँ कोनोमे बहुत-बहुत। खाएर जे अछि ओ सपहरिया सबहक लेल अछि तइसँ हमरा कोन मतलब..!

जखन कोनो अपराधीकेँ न्यायालय अपराधानुकूल सजा दइए, तखन ओ अपराधी स्वयं बुझए लगैए जे हमर केहेन अपराध छल, तहिना लुटन भाय सेहो अपन जिनगीक अराधल वृत्तिक परिणाम, गारि-फज्झैत सुनला पछाइत नीक जकाँ बुझए लगल छैथ। मुदा तैयो गैंची माछ जकाँ गैंचियाइत बजला-

“हराशंख, तोहीं कहऽ जे बारह बजे रातिमे जखन सभ आरामसँ सुतल रहैए तखनो जँ केकरो साँप काटैए तँ दौड़ल आबि कहैए जे काका आकि बाबा आकि भइये, ‘हमरा समांगकेँ साँप काटि लेलक, से कनी चलू नइ तँ ओ मरि जाएत।’ तैठाम जँ ओकर जान बँचबए जाइ छी से अधला भेल?”

ओना, लुटन भाइक विचार दमगर जरूर बुझि पड़ल मुदा एहेन-एहेन चलैनिक चलैन केना भेल, तइ दिस जखन नजैर उठबै छी तँ बुझि पड़ैए जे पूर्वक लोक जहिना जीवनसँ पछुआएल छला तहिना जीवनक बेवहारसँ सेहो छेलाहे, तँए एहेन-एहेन बेवहार सोभाविक अछिए।

बजलौं- “लुटन भाय, दुनियाँक लोक बहुत आगू बढ़ि गेल अछि।

अपने छातीपर हाथ रखि बाजू जे अहाँक मनतरसँ बीख उतरैत तँ कियो-कियो मरि किए जाइए?"

हमर बात सुनि लुटन भाय सहमला, मुदा जिनगीक खेल तँ बहुत आगू धरि बढ़ि चुकल छेलैन, जइसँ अपन जीवनक संग जीवन-जापनक आमदनी, माने आर्थिक, प्रतिष्ठाक संग सामाजिक प्रतिष्ठा जे अखन धरि बनि चुकल छेलैन, तैसंग अपन मान-सम्मान सभ किछु अपना आँखिक सोझमे भँसियाइत देखि रहल छैथ। जइसँ कण्ठक स्वरमे फटल बसुली जकाँ आवाजमे घड़घड़ी आबि गेल छेलैन। ओही घड़घड़ाएल स्वरमे लुटन भाय बजला-

"आब की उपाय अछि?"

लुटन भाइक नि:वल स्वर सुनि मन पसीज गेल। बजलौं -

"लुटन भाय! खाली अहींटा नहि, दुनियाँक भौकमे सभ पड़ि गेल अछि। जइसँ सभ अपने बेथे कुहैर-कानि रहल छैथ।"

अपना संग आनो-आनकेँ देखि लुटन भाइक मनक होश जेना एलैन तहिना बजला-

"से केना हराशंख?"

बजलौं-

"लुटन भाय, ओहनो जुग-जमाना छेलैहे जइमे अहाँ सन-सन वृत्तिकारकेँ मानो-प्रतिष्ठा छल आ सामाजिक प्रतिष्ठित जीवनो छेलैन। मुदा आजुक परिवेशमे जखन बिसवासू इलाज (चिकित्सा) भऽ रहल अछि, तखन कान पकैड़ सप्पत खा लिअ जे आब एहेन वृत्तिक भीर नइ जाएब।"

पचास बर्खक जिनगीक मौज लुटन भाय अही समाजमे भोगि चुकल छैथ, तँए पैछला भरछल जीहकेँ दागब ओत्ते असानो तँ नहियेँ अछि...।

लुटन भाय बजला-

“लोक सभ जे दरबज्जापर आबि हल्ला करत जे कनी चलि कऽ देखियौ तखन की करब?”

कहलयैन-

“जे कियो कहऽ आबैथ हुनका कहबैन, ‘हमर मनतरक पावर बोल्टक नटे जकाँ ढील भऽ गेल।”

❑ *शब्द संख्या : 1598, तिथि : 17 जून 2019*

हाल-चाल

हटनी हाटपर मृत्तलाल भेटला। पैंसैठ-छियासैठ बर्खक मृत्तलाल शरीरसँ पचासी-नब्बे बर्खक बीचक बुझि पड़ला। ओना, दस-एगारह बर्खपर भेँटो भेलैथ। जखन विद्यालयमे नोकरी–शिक्षक रूपमे–करै छला तहिया भेँट होइ छला। हृष्ट-पुष्ट शरीर, मनक मुस्कानसँ चेहरा प्रफुलित देखने रहिऐन। ओना, चेहराक रंग-रूप देखि थोड़ेक धकमकेलौं। धकमकाइक कारण ई भेल जे चेहराक–मुँहक–रूपमे बहुत-बेसी बदलाव आबि गेल छैन। मुदा सोझमे पड़ला पछाइत जखन अपना यादास्तपर जोर देलौं तखन मन मानि गेल जे मृत्तलाले छैथ।

जिनगी भरिक परिचित मृत्तलाल जखन सोझहामे पड़ला तखन मुँह चोरा कऽ, कोनो कारणे, राखब उचित नहि बुझि बजलौं -

“मृत्तलाल भाय, की हाल चाल?”

ओना, अपन चेहरा ओत्ते नहि बदलल अछि जेतेक मृत्तलाल भाइक चेहरा बदैल गेल छैन। जइसँ अपना मृत्तलाल भायकेँ चिन्हैमे जेते भीर भेल तेते मृत्तलालकेँ हमरा चिन्हैमे नहियेँ भेलैन मुदा जेना संगी-साथीमे टोका-टोकीक कोनो नियम नहि अछि, माने भेँट भेलापर पहिने के टोकत, से नहि भेल।

मृत्तलाल भाय चिन्हला पछातियो अपनाकेँ अनचिन्ह बना राखए चाहलैन तेकर कि कारण भेलैन से तँ मृत्तलाले भाय जनता मुदा अपना बुझि पड़ल जे मृत्तलाल भाय जीवनक खेलक कोनो पाशा भरिसक हारि

चुकल छैथ तँए मुँह नुकबए चाहै छैथ।

जहिना पुछलयैन तहिना मृत्तलाल भाय बजला-

“गौरी भाय, की हाल-चाल रहत! देखिते छह जे भाँग-बथुआ कीनए हाटपर आएल छी।”

ओना, ‘भाँग-बथुआ’ सुनि मन कनी तत्मताएल जे एना किए मृत्तलाल भाय बजला। मुदा सागवालीक दोकानक आगूमे ठाढ़ देखलयैन तँ मन मानि गेल जे भरिसक बथुआ साग कीन रहला अछि तँए एना बजला अछि।

बथुआ सागक दोकानक आगूमे मृत्तलाल भाय आ खेसारी सागक दोकानक आगूमे अपने रही। बजलौं -

“भाय हमहूँ खेसारीए साग कीनैले आएल छी।”

मुँह छुटू लोककेँ जहिना बोलीपर मनक नियंत्रण नइ रहैए तहिना मृत्तलाल भाय सेहो छथिए। बिच्चेमे बजला-

“खेसारी जखन इनभेलिड भऽ गेल तखन ओकर साग केना भेलिड भेल?”

मृत्तलाल भाइक खोंचगर विचारकेँ मनेमे रोकि आगू बढ़ि बजैक विचार भइये रहल छल कि बिच्चेमे बजा गेल-

“मृत्तलाल भाय, अहाँ भलेँ खेसारीक पुरुखेकेँ किए ने दुइस दियौ मुदा पत्नी-सेवा पतिक धर्म नइ छी सेहो बात नहियेँ अछि।”

चटसार परहक लोकक बीचक मृत्तलाल भाय छथिए। जखने धर्मक नाओं सुनलैन तखने विचारकेँ लपकैत बजला -

“से की?”

बजलौं-

“पत्नी कहली अछि जे अगहनक पूर्णिमा बीत गेल आ पूस सेहो

चढ़ि गेल मुदा अखन तक केसैर नन्दनि खेसारी साग नइ खेलौं अछि , से हाटपर से नेने आएब।”

ओना, बेरुका चारिसँ ऊपर समय भऽ चुकल छल। समयमे धीरे-धीरे जाड़ पसरिये रहल छल, तँए दुनू गोरेक मनमे कछमछी सेहो आबिये गेल जे करवन हाटक काजसँ निवृत्त भऽ निकैल जाइ...। मुदा सम्बन्धोक तँ अपन महत् अछिए। तहूमे दस-एगारह बर्खपर मृत्तलाल भाय भेटला अछि, ऐ बीचक बँकियौता घटनाक समाचार सभ सुनब बाँकीए अछि, ओ जँ नहि बुझि लेब तखन सम्बन्धक महत्ते की रहल। सम्बन्धक महत् तँ तखन ने जीवनमे होइए जखन सम्बन्धक मानकेँ सम्मान भेटइ। मुदा जे जेतए अछि से तेतइ रहउ। सागकेँ झोरामे रखि बजलौं-

“भाय, बहुत दिनपर भेँट भेलौं हेन। बीचक सभ बात बुझब पछुआएले अछि।”

मृत्तलाल भाइक मनमे सेहो होइत रहैन जे अपन जिनगीक गवाह केकरो राखब जरूरी अछि। जिनगीक कोनो ठेकान अछि जे कखन छी आ कखन नइ छी। तहूमे जँ चालीस बर्खसँ निच्चाँक रहितौं तँ कनी दिनक आशो बनल रहैत जे अखन चालीस नहि पुरल अछि, मुदा मरद तँ चालिसेमे घपचालिस हुअ लगैए। हम तँ कहुना साठि टपि गेल छी। साठाक पाठा नइ छी से आन मानए वा नइ मानए मुदा अपने किए ने मानब।

तैबीच मृत्तलालो भाय बथुआ साग झोरामे रखि हरियरका काँच मिरचाइ कीनए लगला। साए ग्राम मिरचाइ लेबाक रहैन, एक्के बाकुट भेलैन, ओहो सागेमे फेँट कऽ रखि पाइयक हिसाब फरिछा निचेन होइत बजला-

“गौरी भाय, जिनगीक कोनो ठेकान अछि। बहुत दिनपर भेँट भेलौं, चलू कोनो चाहक दोकानपर बैस दुनू गोरे चाहो पीब आ जीवनक

विचार सेहो करब।"

मृत्तलाल भाइक विचार अपनो जँचल। किए ने जँचैत, हमरा कि आन जकाँ केकरो अकची-दोकची बाजि टारैक अछि, अपनो जिनगीक बात सुनबैक अछि आ आनोक सुनैक अछि...। बजलौं -

"भाय, चाहक दोकानपर चाहक जीवनक गप-सप्प बेसी रेड़कऽ चलैए तँए ओइठाम जिनगीक गप-सप्प करब सम्भव नहि अछि, चलू केतौ कातमे दुनू भॉइ बैस कऽ बतियाइत, चाह पीबैत चलि जाएब।"

सएह भेल। गामक छोट-छीन आँट-पेटक हाट, छोट-छीन हाटक माने गामक शुरूआती दौड़क हाटक जे रूप होइए तेहने हाट।

दुनू भॉइ थोड़ेक दच्छिन दिस ससैर कातमे बैस गप-सप्प शुरू केलौं...।

जहिना जीवनक कष्ट-पीड़ा जखन लोककेँ असहज भऽ जाइ छै आ मन वौराए लगै छै तहिना मृत्तलाल भाय वौराए लगला। ऐठाम वौराइक माने दुनियाँमे वौआएब नहि, परिवारक भीतर वौराएबसँ अछि।

जेना बीतल जिनगीक घटना अपन धार पकैड़ जखन उमड़ए लगैए तखन विचारक मुस्कियाएल बान्ह स्वत: कमजोर पड़ि या तँ टुटि जाइए वा डुमि जाइए, तहिना मृत्तलाल भायकेँ भेलैन...। मृत्तलाल भाय बजला-

"गौरी भाय, केते दिनपर दुनू भैयारीक भेँट भेल हएत ?"

बजलौं- "भाय, कहुना-कहुना तँ जुग[2] लगिचा गेल हएत!"

जुगक नाओं सुनि आकि अपन विचारक प्रवाह उद्वेलित छेलैन कि की, मृत्तलाल भाय साँस ऊपर खींचैत बजला -

"गौरी भाय, अपन जिनगीक चारू जुगक बात अहाँकेँ सुना दइ छी।"

अपना भयावह बुझि पड़ल, तँए बिच्चेमे टोकैत बजलौं- "भाय, समैयक हिसाबसँ जुगक चर्च करब। देखिते छी, जाड़ उमैह रहल अछि!"

एक्के साँसमे अपन सभ बात जेना मृत्तलाल भाय बाजए चाहि रहल छला तहिना साँस साधि धाराप्रवाह बाजए लगला-

“गौरी भाय, मिडिल स्कूलसँ दुनू भैयारी संगी छी , तँए जिनगीक तीत-मीठ जँ एकठाम बैस नहि करब तखन एहेन भैयारीए की?”

‘भैयारी’क नाओं सुनि टोकारा दैत बजलौं -

“जे अपने अकाट अछि तेकरा के काटि सकैए आकि तइमे कलमक नोकसिये की लगा सकैए ।”

बमकैत मृत्तलाल भाय बजला-

“गौरी, बीचमे केतौ टोक-टाक नहि करब। बुझले अछि जे बी.ए. पास केलाक पछाइत हाइ स्कूलक नोकरीक नॉ गैर पकैड़ आधा जिनगी खैप गेल। जखन सरकारी मान्यता विद्यालयकेँ भेटल तखन जिनगीमे कनी-मनी हरिअरी आबए लगल। मुदा भगवानो हमरे दिस तकै छला आकि की, पाँचटा बेटीए पठा देलैन। जहिना दरमाहाक गति बढ़ल तहिना बेटीक बिआहक दान-दहेज सेहो बढ़ैत गेल। अन्तिम बेटीक बिआह अपन जे जमा-जिगिर छल तइसँ कहुना पार लगि गेल ।”

बिच्चेमे बजलौं-

“चलू गंगामे डूम देलौं!”

हाइ रे बा! जेना कोनो दवाइ रिएक्शन करैए तहिना मृत्तलाल भाय बमैछ कऽ बजला-

“डूम की देब कपार..! जे पेंशन भेटैए से घरेवालीक हाथ चलि जाइए, अपना हाथमे एको पाइ थोड़े अबैए!”

घरवालीक नाओं सुनि मनमे अनेको विचार एकाएक जहिना घौदा लागल आम गाछसँ बिहाड़िक सिहकीमे खसैए तहिना खसल।

खसल ई जे जैठामक धरतीक माटि-पानिमे पत्नीकेँ अर्द्धांगिनी

मानल जाइए, तैठाम मृत्तलाल भाय एहेन बात किए बजला? सभ दिनसँ पति-पत्नीक बीच चलि आबि रहल अछि जे गाममे (माने घरमे) आकि बाहरमे पति कमाइ छैथ, ओइ कमाइमे सँ घरक खर्च–माने खेनाइ-पीनाइसँ आनो-आन काज–चलबैत जे बँचैए तेकरा पति अपना हाथ-मुट्ठीमे रखै छैथ मुदा मृत्तलाल भाय तँ तेकर ठीक विपरीत बाजि रहला अछि जे अपना हाथ-मुट्ठीमे एक्को पाइ नइ अबैए...।

ओना, ऐ बातकेँ दोहरा कऽ पुछैक मन नइ होइ छल मुदा मनमे जेना एहेन विचार उड़ी-बिड़ी लगा देलक, तहिना बजलौं-

"भाय, घरवालीक बात की कहलिऐ?"

मृत्तलाल भाइक मन जेना अखन पकपकाएल छेलैन तहिना पत्नीक बातकेँ घरक बात नहि मानि छिड़ियबैत बजला-

"गौरी, पाँचटा बेटीए कि अपना मने भेल, पहिने जेठ एकटा बेटा भेल, पछाइत जखन एकटा बेटी भेल तखने ऑपरेशन (परिवार नियोजन) करा लइतौं, दू भाए-बहिन रहैत, निचेनसँ परिवार चलैत रहैत। सरकारी आदेश सेहो सोल्होअना मना गेल रहैत।"

मृत्तलाल भाइक विचार कनी-मनी बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियोँ बुझलौं। दोहरबैत बजलौं -

"भाय, अहाँक विचार नीक जकाँ नइ बुझलौं। "

मने-मन मृत्तलाल भायकेँ जेना क्रोध चढ़ले जाइत रहैन तहिना बजला-

"गौरी, तोरासँ लाथ की, जाबे तक सरकारी दरमाहा नइ पेने छेलौं ताबे तकक जिनगी कोनो जिनगी रहल। संजोग भेल सोलह साल काज केलाक पछाइत जखन सरकारी दरमाहा उठए लगल तखन मनमे कनी आशाक आस भेल। मुदा...।"

'मुदा' कहि मृत्तलाल भाय चुप भऽ गेला। अपन जिज्ञासा उमैरिये

रहल छल, बजलौं- "की मुदा?"

मनक खुशीक बिना हँसीमे जे हँसपन होइए ओ मनक खुशीक हँसपनसँ ठीक विपरीत कहियौ कि उल्टा कहियौ, तेहने विपरीत दिशामे बढ़ैत मृत्तलाल भाय बजला-

"दुनियाँमे सभकेँ घरवाली छैन, मुदा विधाता हमरा अपन खानगी कोटामे जे रिजर्व रखने छला तइमे सँ देलैन।"

भूमिका बान्हि-बान्हि मृत्तलाल भाय बजै छला मुदा विषयक मुरामक भीर जाइते ने छला। बजलौं -

"भाय, देखिते छी जे जाड़ बढ़ल जाइए आ चद्दैरियो ने अनने छी। तँए जल्दी शंख फुकि जिनगीक लीला समाप्त करू।"

मृत्तलाल भाइक मनमे भरिसक भेलैन जे हमर बात सुनैसँ गौरी अकछा रहल अछि, तँए जल्दिवाजीमे मूल बात नहि बाजि लेब तँ जिनगीक गवाही के बनत। अही झमारसँ झुकैत मृत्तलाल भाय बजला -

"जखन नोकरी करै छेलौं–माने घरसँ चौबीसो घन्टा बाहरे रहै छेलौं–तखन जेतेक दरमाहा भेटै छल तइसँ बेसी पेंशन भेटैए, मुदा पत्नी जहिना पाँचो बेटीक जन्मदाता छैथ तहिना जीवनदाता सेहो छैबे करथिन, मुदा तइले तँ चाही पाइ। जइ दिन पहिल पेंशन उठबए गेलौं , घरोवाली पछोर लगि गेली। अपनो मनमे कनी भर भेल जे पाइ-कौड़ीक बात छी, पत्नी संगमे रहती तँ... ।"

बजैत-बजैत मृत्तलाल भाइक बोलती एकाएक बन्न भऽ गेलैन। कटही गाड़ीकेँ पछुआ पकैड़ जहिना आगू मुहेँ धकेलल जाइए तहिना पाछूसँ धक्का दैत बजलौं -

"हाइ रे बा! गाड़ीक पेट्रोल कि बिच्चेमे सठि गेल जे रूकि गेलौं भाय?"

मृत्तलाल भाय बजला- "पेंशनक पाइ दुआरे पत्नी बैंकपर कोनो

गंजन नहि छोड़ली। अन्तमे मनेजर साहैब विचार देलैन जे नामी-गामी शिक्षक छीहे, अहाँ बैसलो-बैसल ट्यूशन पढ़ाएब तैयो ढेरी कमाइ हएत।”

बजा गेल-

“ठीके ने कहलैन?”

विसर्जनक समय जहिना शंख फूकल जाइए तहिना अपन चारू जुगक विसर्जन करैत मृत्तलाल भाय बजला-

“आबक जुगक ट्यूशनो-जोकर रहलौं! जहिना पढ़ाइ बदैल गेल, पढ़बैक ढर्रा बदैल गेल तहिना ट्यूशन आ ट्यूशनक ढर्रो ने बदैल गेल। भाय यएह अपन हाल-चाल अछि।”

मनक वाक् तेना अवाक भऽ गेल जे बिना किछु बजने-भुकने घर दिस उठि कऽ विदा भेलौं।

❑ *शब्द संख्या : 1519, तिथि : 20 जून 2019*

अधमरु साँपक डँस

गाम अखनो गाम छी तहूमे मिथिलाक गाम। जहिना एक पीढ़ीक लोककेँ आपैत-बिपैत एने, मुख्य रूपसँ धारक कटाव भेने गामसँ उजैर अन्तए जा बसए पड़ै छैन तहिना कोसी-कमलाक उजारल-उखारल गामसँ हटिते (माने बाढ़िक क्षेत्रसँ) दोसर पीढ़ी अपन पुरुखाक डीहपर आबि बैस अपनो पूर्वजक आ आनोक पूर्वजक दुखनामा नइ सुनबै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो भइये रहल अछि आ आगुओ ताधैर होइत रहत जाधैर समरपित रूपमे गामवासी लोक नहि बनता। तखन तँ रहल जे उजरल-उपटल गामक प्रति सिनेह...।

गाम खाली किछु जमीनक भूखण्डेटा नइ छी, ओकर अपन सभ किछु छइ। इतिहास-पुराणक संग-संग कला, संस्कार, संस्कृति आ जीवन पद्धति सेहो छइहे।

आजुक परिवेश जे बनल जा रहल अछि ओ ओहन बनल जा रहल अछि जे मूल रूपसँ जिनगीए-केँ ओझिल बनेने जा रहल अछि। सुविधापूर्ण जिनगीकेँ पूर्ण रूपक जिनगी बुझि एक-दोसरसँ हटि-हटि आपसमे दूरी बनियेँ रहल अछि। स्पष्ट रूपमे ग्रामीण जीवनसँ दूर हटल शहरी वा परवासी जीवन सदृश परिवारोमे बनि रहल अछि, जइसँ जिनगीक हर पहलू प्रभावित भइयो रहल अछि आ आगुओ होइते रहत।

जइ धरतीपर अपना सभ रहि रहल छी, जैठाम अदौसँ अबैत विचारो आ विचारक संग जीवनो चलैत आबि रहल अछि तैठाम ओइ

चलैत जिनगीक चलैनमे, एहेन मोड़ आबि जाए जे ओइठामक शासन तंत्रकेँ ओकरा चलबैले दण्डक रूप तैयार करए पड़इ, एकरा लाज छोड़ि की कहल जाए। जेकर जीबैत-जगैत रूप माता-पिताक संग बेटा-पुतोहुक रूप अछिए।

मुदा किछु छी तँ गाम अखनो मिथिलाक गाम छीहे। कोनो तरहक लगनक समय हउ–जेना बिआह, उपनैन, मुड़न, यज्ञ, जाप पाबैन-तिहार इत्यादि–मिथिला वएह राजा जनक आ रानी सुनयनाक मिथिलाक रूप अखनो ठहा-ठही इजोरिया जकाँ मेघमे चमैकते रहैए। ई दीगर भेल जे केतौ कोसी-कमला माटिकेँ उखाड़ि कऽ वा बालुसँ तोपि कऽ दुइर केने अछि, तँ केतौ नहरक संग छहर दुइर केने अछि। केतौ गामक रस्ता -पेरा उपजाऊ माटिक खेतकेँ दुइर केने अछि ...। गामक मूल उपजाक श्रोतक की स्थिति अछि तइ बुझै-करैले ने बुझनिहार-केनिहारकेँ सरोकार छैन आ ने बुझौनिहार-करौनिहारकेँ। खाएर जे अछि सेहो बड़बढ़ियाँ नइ अछि सेहो बड़बढ़ियाँ...। हजारो बर्खक गुलामीक जिनगी जीबैक अभ्यस्त परिवारो आ परिवारजनो बुझिते-भोगिते एबे कएल छैथ, फेर आगुओ अपन सोचता आ भोगता।

गाम अखनो मिथिलाक वएह गाम छी जइ गाममे रंग-रंगक भगत-भगतैसँ झार-फूक केनिहारक संग ओझा-गुणीसँ गाम भरल नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ऊपरे-झापड़े जँ देखबै तँ बुझि पड़त जे फल्लाँ भगत, फल्लाँ गहवर, फल्लाँ स्थान मुदा जहिना कारखानादार वस्तु उत्पादन केलाक पछाइत बेचनिहार (एजेन्ट) तैयार करैए आ तइ माध्यमसँ जहिना अपन कारोबारकेँ दौड़बैत चलबैए तहिना गामक जे अन्धबिसवासू कारोबारक कारोवारी अछि, ओहो अपना गतिये नहि दौड़ रहल अछि सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो दौड़िये रहल अछि। अचरजक बात ई अछि जे परिवारोमे आ समाजोमे, तैसंग बेकतीक मुहोँसँ यएह निकलै छैन जे ‘अपने जँ दोसरकेँ लाभ (सेवा) नहि दए सकलौं तँ दोसरकेँ

हानियोँ करैक नैतिक अधिकार नहियेँ अछि।' तहिना परिवारोमे परिवारजनक मुहसँ यएह सदिकाल निकलै छैन जे 'परिवारक सेवामे लगल छी।' तहिना गामो-समाजमे देखिते छिऐ जे एक-सँ-एक सुरसा जकाँ, एक-सँ-एक बिरसा जकाँ आ एक-सँ-एक पुरषा जकाँ नइ छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो तँ सिकिया पहलमानसँ लऽ कऽ सिकिया नेतो आ सिकिया चिन्तको छथिए। मुदा मुसहरक बीच मूस केना पड़ा गेल अछि से ने देखब औझुका मूल भेल?

जहिना बेकतियोक मनक धारण नीके छैन जे हुनकर धरमो भेलैन, तहिना परिवारमे परिवारजनक सेहो भेबे केलैन आ समाजमे तँ सहजे विचारवानक छथिए। तैबीच जेहेन बेकतीक जीवन तेहने परिवारो आ समाजोक की नहि अछि, सेहो तँ अछिए। देखिते छी जे केहेन-केहेन टकुआतान पुरुख सभ समाजमे छैथ जे एकटा नान्हिटा फोटोक–नर्कक बनौआ चित्र–डरसँ लोक हरकंप कटनिहार भऽ गेल अछि। माने, फोटोमे नर्कक जे रंग-रंगक चित्र बना देखौल गेल अछि, तेकरा डरसँ...।

आब कहू जे अपन पूर्वज माण्डवी भेला अछि ओ अपन जीवनकेँ अपन हाथ-मुट्ठीमे रखि जीवन धारण केने छला। ओ कहाँ धर्मराजक आदेश मानलकैन? माण्डवी अपन मन-माफित जगह स्वर्गोमे लेबे केलैन किने।

परिवारक जे टूट भऽ रहल अछि, तइसँ जीवनक दूरी बनियेँ रहल अछि। जइसँ साफ देखिये पड़ि रहल अछि जे मनुख जानवर नहि छी, ओकरा सामाजिक जीवन चाही, दोसर दिस जखन भाए-भैयारीक दूरी अकास-पताल जकाँ बनि रहल अछि तैठाम आनो-आन जाति आ अपनो जातिक तँ विशाल समुदाय अछिए। तैठाम सामाजिकता केना बनल रहत? समाज तँ सहजे समुद्र छी, डोका-काँकोड़सँ लऽ कऽ अमृत-विष तक दइबला।

बरखा पानिक बुलबुला जकाँ मनमे विचार उठियो रहल छल आ अपने-अपने फुटियो रहल छल। खाएर.., तीन बजे बेरुका समय, दरबज्जापर चाह पीब अपन विचारक कीर्तन-भजनमे लगले रही। जेठ मासक उसार दिन रहने रौदो अपन सोल्हो कला पसारनहि अछि।

हकासल-पिआसल जकाँ दौड़ल आबि गोविन्द बाजल-

"भैया यौ भैया, बड़ जुलुम भेल! सोमना मरि गेल..!!"

'सोमना मरि गेल..!' मनमे झमार जकाँ लगि गेल। एकटा जवान आदमी, जेकरा भरोसे परिवार चलै छेलै, चारिटा बेटा-बेटी छै, जे सभ अखन अबोध अछि, बिआहो-दान आ पढ़बो-लिखब पछुआएल अछि, तैठाम परिवारमे जुलुम भेल! परिवारमे जँ एहेन झमार पड़त तँ जहिना ओ परिवार मेटाइयो सकैए तहिना तँ उठल ठाढ़ो रहियो सकैए..! मनक विचारकेँ थीर करैत गोविन्दकेँ कहलिऐ-

"बौआ, मन असथिर कऽ कऽ बाजह। ऐठाम कियो आन नइ अछि जे एना डरल छह।"

ओना, गोविन्दक उमेर बीस बर्खसँ ऊपरक अछि, मुदा स्कूल नइ देखने बुधियो बारह-तेरह बर्खक अछि। हमर देहक माने शरीरक भरोस गोविन्दकेँ भेल आकि बजलौं तइ विचारक , से नइ जाइन। शरीरक भरोस मनुखक विचार भूमिमे निवास करैए तँए मनुखकेँ देखि मनुखकेँ जिनगीक भरोस जगिते अछि।

गोविन्द बाजल-

"भैया यौ भैया, बड़ जुलुम भेल, सोमना जानिकऽ मारल गेल।"

'जानि कऽ मारल गेल' झगड़ा-झंझटमे एहेन होइए जे कहा-कही होइत पकड़ा-पकड़ी भऽ जाइए सेहो तँ तेहेन नहियेँ कहि रहल अछि। एक तँ गामक बात तहूमे पड़ोसीक। गोविन्दोक मुहसँ जे जुलुम निकैल रहल अछि सेहो दू जगह भेने दू रंगक रूप बनौनहि अछि। 'जानि कऽ

केकरो मारब', एक रूपमे भेल आ 'अपने कोनो कारणे मरब' दोसर रूप अछि। तहूमे गोविन्दो तँ अखन आरो घटि कऽ छोट भऽ गेल अछि।

घटि कऽ छोट होइक माने भेल जे स्कूल नइ देखने बौधिक रूपमे गोविन्द बीस बर्खक जगह बारह-तेरहपर आबि गेल अछि तहूमे तेहेन घबराएल सन अछि, जे आरो घटि कऽ नीचाँ आबि गेल अछि। लगले मनमे दोसर विचार उठि गेल। ओ उठि गेल जे घटबी लोककेँ सभ कथूमे घटबी लगले रहैए। गामो-घरमे कहले जाइए जे जइ किसानकेँ पहिल दिन खेतक रोपनी (धान रोपनी) मे बीआ घटि जाइ छैन हुनका सभ दिन सभ खेतक रोपनीमे बीआ घटबे करै छैन। ऐठाम मृत्युक प्रश्न अछि माने सोमनक मृत्युक। मृत्युक घड़ीकेँ जँ फास्ट घड़ी–जइ घड़ीक समय किछु मिनट वा किछु सेकेण्ड आगू चलैत हुअए–वा स्लो घड़ी–जे उचित समयसँ निच्चाँ उतैर चलैत–मानल जाए तँ ओ एकभग्गू भेबे कएल। ओना, दुनू दिस एकभग्गूए भेल मुदा दुनूक बी चक दूरीमे अकास-पतालक अन्तर भइये जाइए।

गुन-धुनमे मोन पड़ले छल कि सोमनक घर दिससँ एक गोरे अबै छला। ओना, बीचमे टाट लगल रहने थोड़ेक अढ़ छला मुदा ओहो वएह बात बजै छला जे बात गोविन्द बाजल छल।

दुनूक विचारक मिलान मनमे भइये रहल छल। मुदा तैयो अपन विचारकेँ सुदृढ़ बनबैसँ पहिने आरो मजगूती अनै दुआरे गोविन्दकेँ कहलिऐ-

"गोविन्द, तोरे बात शक्तिलाल सेहो बजै छैथ, तँए कनी हुनको शोर पारहुन।"

जहिना गोविन्दकेँ कहलिऐ तहिना ओ दौड़ले गेल। शक्तिलालकेँ बजौने आएल। शक्तिलालकेँ देखि अपनो मनमे आस लगल। बिना किछु पुछने शक्तिलाल बजला- "गाममे अतहतह होइए! जेहो नइ हेबा चाही सेहो सभ होइए..!"

शक्तिलालक बात सुनि हरदर मन मानि गेल, मुदा शब्दोक अर्थ तँ जगह-जगहपर अलग-अलग होइते अछि। जँ शिखर-तमाकुलक गप रहैत तँ उड़ौलो जा सकै छल मुदा मनुखक जिनगीसँ जुड़ल अछि! ई दीगर बात अछि जे सभ कियो बुझै जरूर छी जे शरीरान्त हेबे करत मुदा जेते बुझनिहार छी तेते माननिहारो थोड़े छी। घटी-बढ़ी तँ अछिए। खाएर जे अछि, अपन मन विचार देलक जे वक्ता जँ अपन विचारकेँ बेवहारिक पजामा पहिरा मंचपर आनैथ तँ ओ नीक भेबे कएल। तँए किए ने शक्तिलालेक मुहसँ घटनाक पूर्ण विवरण सुनि ली। बजलौं -

"शक्तिलाल, जखनसँ सोमन बिछानपर पड़ल तखनसँ जेते बात बुझल अछि से बाजू।"

सइयो बेर शक्तिलाल चारि दिनक बीच ऐ बातकेँ बाजि चुकल छला तँए सभ बात कण्ठस्त रहबे करैन, बजला-

"भाय साहैब, हम केकरो मुहेँ सुनल नइ बजै छी अपन जे कएल अछि से बजै छी।"

शक्तिलालक विचार सुनि अपनो मन मानि गेल जे एहेन-एहेन घटनाक विचार समय बदलने बदलैए। जेना-जेना समय बीतैत जाइए तेना-तेना विचारोमे बदलाव अबैत जाइए। जेना-जेना उनटौनिहार उनटबैत-पुनटबैत रहल, तेना-तेना उनटैत-पुनटैत रहल। ऐठाम तँ से बात अछि नहि, टटका घटना छीहे। बजलौं -

"अखुनका समय बहुत मूल्यवान अछि शक्तिलाल, तँए बेसी चौहद्दी–भूमिका–नहि बान्हि जेना-जेना जे भेल से बाजू।"

शक्तिलाल बजला-

"किछु दिन पहिने ओकर आँतक ऑपरेशन भेल छेलइ। भारी काज करैसँ डाक्टर मनाही केने छेलै मुदा माइयो तँ माइये ने होइए। जँ सीता सन माइक जन्मधरती मिथिला छी, तँ ओहन माए मिथिलामे नहि

छैथ जे साल-दू सालक बच्चाकेँ छोड़ि दोसर घर चलि जाइए।”

बजलौं-

“एते अलंकारमे बजैक जरूरत नइ अछि शक्तिलाल।”

शक्तिलाल बजला-

“भाय साहैब, जखने सुनलौं जे सोमन बेमार पड़ि गेल तखने दौड़ल गेलौं। जाइते सोमनकेँ पुछलिऐ जे की होइ छह ? तँ ओ कहलक जे पेटमे दर्द होइए, डाक्टर ऐठाम लऽ चलू। सोमनक माइयो आ पत्नियोँ लगेमे छेली। कहलयैन- लऽ चलू डाक्टर ऐठाम। मुदा ने माइये आ ने सोमनक पत्नीए हमर बात कान धेलैन। दुनू अड़ि कऽ डाक्टर ऐठाम नइ जा एकटा भगत ऐठाम पहुँच गेली। ओत्तैसँ सोमन मरल आएल अछि।”

बजलौं-

“संगमे आनो कियो गेल रहैन?”

शक्तिलाल बजला-

“भाय साहैब, अहाँ अनाड़ी जकाँ बजै छी, जहिना कारखानादार अपन एजेन्ट पसाइर अपन कारोबार दौड़बैत चलैए तहिना गाममे गहबरिया, भगता, मनतरिया सभ अपन-अपन कारोबार पसाइर-पसाइर कारोबार दौड़ाइये रहल अछि। सोमनक माइयो आ पत्नियोंक कानकेँ एना भरि देने छल जे उचित-अनुचितक विचारे दुनूक मनसँ पड़ा गेल । अधमरु साँपक डँस, अखनो समाजमे लोक झेलिये रहल अछि।”

की बजितौं, चुप्पे रहलौं।

❑ *शब्द संख्या : 1525, तिथि : 23 जून 2019*

के मानत?

भिनसुरका समय। चाह पीब विचारिये रहल छेलौं जे आइ कोन - कोन हलतलबी काज अछि। पहिने तेकरा पतिआनी लगा मनमे सहिआइर ली, पछाइत जे हएत से हएत। तइ बिच्चेमे पत्नी चारू-पाँचू बेटा-बेटीकेँ फुसला कऽ पनिया लेलैन आ टुसि देलखिन जे आइ शुक्र दिन छी जे तीनू बेरागनमे सभसँ नमहरो आ नीको अछिए, माने शुभ दिन अछि। तँए अदरा पाबैन कइये लेब।

अखाढ़ मास आर्द्रा नक्षत्रक समय, तँए एक पनरहिया अदरा पाबैन चलबे करत। भलेँ पियासल धरती पाइनिक अभावमे अपना देहसँ ‘लू’ पैदा करैपर किए ने बीर्तमान हुअए...।

एक मुहेँ चारू-पाँचो धिया-पुता बाजल-

“बाबू, आइ अदरा पाबैन हएत से आमक ओरियान करू।”

धिया-पुताक बात सुनि मन मनाही करैत विचार देलक जे माइयक समदिया पाँचू छी, तँए चोरकेँ नहि पकैड़ चोरक माइकेँ पकड़ब ने बुधियारी छी, मुदा ऐठाम तँ आगूमे पाँचो धिया-पुता आबि गेल अछि जे दुनू परानीक सझिया छी..!

ओना, भीतरे-भीतर तामस सेहो उठैत रहए आ खींस सेहो उठिते रहए। मुदा से तामस करवनो धिया-पुतापर उठए तँ करवनो पत्नीपर, तँ

करखनो आम आ अदरा पाबैनपर...।

कहू! जे भगवान अपन काज करबे ने केलैन माने बरखा भेबे ने कएल जे जमीन आर्द्र होइत, आ तइ भगवानकेँ अदराक आम आ खीर खुएबैन से एहेन खाइबला मुँहकेँ चुल्हिक खोंरनीसँ किए ने खोंरनाठयैन।

ओना, धिया-पुता एक्के बेर बाजल से भरिसक अपने जे नइ किछु बजलौं तँए आकि की, से नहि बुझि पेलौं। भरिसक ओ सभ ऐ धोखामे पड़ि गेल जे बाबू जखन किछु ने बजला तखन ओ ओरियानक पाछू लगि जेता। अखन भिनसर भेबे कएल अछि, पाबैन कहुना-कहुना तँ दुपहरमे ने हएत।

बाजए किछु ने कियो मुदा रहल सभटा लगेमे ठाढ़। मनक जे खींस रहए ओ खिखिर जकाँ खेंखियाइत पत्नीपर जा अँटैक गेल। पत्नीक सीमान लग खींस पहुँचते आरो खिसिया उठल।

खिसिया ई उठल जे समाजक जे देखौंस करब ओ हमरा छजत? एते दिन संग-संग रहला पछातियो जे मनुख पतिक जीवनकेँ नहि परेख सकली ओहन मनुख पति धर्मक पालन की कए सकै छैथ..! ओ अखनो तक ई नहि देखि रहली अछि जे डॉक्टरसँ ओझा (मंत्र-तंत्रबला) तक अपन एजेंसी पसाइर नेने अछि, ओ अखन तक एतबो नहि बुझि पेली अछि जे असलीसँ नकली आ नकलीसँ असलीक संग असली-नकली दुनू संग मीलि अपन महजाल पसाइर नेने अछि..! तैठाम जँ ओकरा सबहक जिनगीक संग अपन परिवारक जीवनकेँ लऽ जाए चाहब तँ पहिने अपन ओकातिक विचार सेहो ने कऽ लेब अछि।

ओना, भीतरे-भीतर मन आमक गाछी सभ दिस सेहो औनाइत रहए। किए तँ कोनो उपरारि गाम एहेन नइ अछि जइ गामक एक चौथाइसँ बेसी जमीनमे आमक खेती–गाछी-कलम–लगल अछि। सालमे एक बेर आम फड़ैए, जे भेल ओइ खेतक उपज, से एकोटा गामक गाछी-

कलम ऐ साल एहेन नहि बँचल रहल जे फड़ल हुअए। साए रुपैये किलो बाहरी आम आबि-आबि गाम-घरमे बिकाइए।

जखने गाम-गामक गाछी-कलम नहि फड़ल तखने मनकेँ मना लेलौं जे ऐबेर एकोटा आम नइ खाएब। सालमे एक दिन जामुन खाइ छी से ऐबेर दू दिन खा लेब। आ जँ सम्भव हएत तँ ओकर आँठियो बीछ कऽ घर-वैद रखि लेब। बेरपर काज एबे करत। किए तँ सर्दी-खाँसी जकाँ डायविटीज सेहो अनिवार्य जकाँ भइये गेल अछि।

तरे-तर पत्नीपर मन खींससँ अरखींस दिस सेहो बढ़ए लगल मुदा तेकरा रोकि-रोकि थतमारि कऽ जाँति -जाँति मनेमे रखने रही।

आगूमे धिया-पुता सभ ठाढ़ भेल मुँह दिस देखैत रहए।

मुहसँ जखन कोनो बकार नहि निकलैत रहए तखन पत्नी सोहरदे लगमे आबि बजली-

“अधासँ बेसी अदरा नछतर बीत गेल, मुदा अखन तक पाबैन नहि भेल अछि तँए आइ पाबैन कइये लइतौं। ”

एक तँ ओहिना भीतरे-भीतर मन तामसे कोयला भेल जाइत रहए, तइ परसँ पत्नीक विचार आरो मनकेँ खोंचारि देलक। तामसे देह लहैरते रहए मुदा भिनसुरका समय रहने तामसकेँ पेटसँ नहि निकालि पेटेमे दबने रही। किए तँ मन ईहो कहैत रहए जे भिनसुरके मुहूर्त्तसँ ने दिन भरिक मुहूर्त्त चलैए। माने ई जे जखने भोरे-भोर मुहाँ-ठुठी करब तखने भरि दिन अहिना होइते रहत।

खिसिया कऽ दरबज्जापर सँ उठि पढ़ुआ काका ऐठाम मन बदलैले विदा भेलौं। मनक विचार बदलैले की जइतौं तँ मनक तामस मिझबैले आगू बढ़लौं।

दरबज्जापर बैसल पढ़ुआ काकाकेँ देखिते प्रणाम नइ केलिऐन। किए तँ जहिना पढ़ुआ कक्काक मन वि साइन-विसाइन बुझि पड़ल तहिना

घोघ सेहो लटकल देखलयैन।

भाय, प्रणामो-पाती तँ सम-गम स्थितिक विचारेमे ने नीक होइए, जँ कियो बेथित, चिन्तित वा दुखी होइथ तैकाल क प्रणाम-पाती तँ व्यंग्य सेहो पैदा करैए जेकर माने विपरीतो दिशा दिस बढ़िते अछि।

मने-मन हँसियो लागए जे अन्हराकेँ अन्हारसँ भेँट भेल..! मुदा की करितौं, तँ जहिना मरण-हरणमे जिज्ञासु घरबैयाक संग धौना खसा चुप-चाप मुड़ी गोंति बैस जाइ छैथ तहिना हमहूँ पढ़आ कक्काक आगूमे धौना खसा बइस गेलौं।

विचारवान पढ़आ कक्काक मनमे बर्खाक बून ज काँ बुना-बुनी झहैरतो रहैन आ अपने पानिसँ उठि पानियेँमे फुटि-फुटि विलीन सेहो होइत रहैन। पाइनिक बुलबुला जहिना बर्खाक समय धरतीपर अपने जनमबो करैए आ फुटबो करैए तहिना पढ़आ कक्काक मन क विचारमे सेहो भरिसक होइत रहैन। बुलबुला चाहे झीसी-फुहीक मकैया वा जनेरैये किए ने हुअए आकि रबड़क बैलून जकाँ नम्हरे किए ने हुअए मुदा फुटैमे कियो-केकरो आशा थोड़े तकैए आकि अपने मुहेँ कहियौ आकि सौंसे धड़े कहियौ, फुटम-फुट भइये जाइए...।

कनियेँकालक पछाइत पढ़आ काका बजला -

“बुझलहक गोकुल, देखले दिनमे इज्जत जा रहल अछि!”

पढ़आ कक्काक बात सुनि मन धड़फड़ा गेल। धड़फड़ाइते फुटल -

“काका, अखन जाइयेपर अछि ने, गेल नइ ने अछि? सुइयाक नोकपर जेते जमीन चढ़ैए तेते जमीन ले तँ अठारह दिनक घमासान महाभारतक लड़ाइ भऽ गेल, अपनेक तँ इज्जतक प्रश्न अछि।”

ओना, अपना जनैत विचारकेँ वेगबान बनबए चाहलौं मुदा होशगर नैया जकाँ जहिना बीच धारोमे अपन नाहक धारा बदैल लइए, तहिना पढ़आ काका अपन विचारकेँ बदलैत बजला-

“बौआ, तोहर विचारपर पछाइत विचार करब, अखन अप्पन बात सुनेबह।”

अखन तक जे मनमे पत्नीपर पीत लहरल छल ओ प्रीत बनि पिताशयमे पचि गेल। पढ़ुआ कक्काक मुहसँ निकललैन - ‘अखन अपन बात सुनेबह’ सुनि केना कहितिऐन जे पहिने हमरे सुनू।

अखन तक जे प्रणाम करब पछुआ गेल छल तेकरा पुरबैत बजलौं-

“काका, अपने तँ..!”

‘अपने तँ’ पर धियान नहि अँटका पढ़ुआ काका बजला-

“बौआ, की कहबह! इज्जत बाँचब कठिन भऽ गेल अछि। परुकाँखन बौआकेँ माने ओइ बेटाकेँ जे अमेरिकामे दस सालसँ रहि रहल अछि, आम खाइले आबए कहलयैन। छुट्टीक दुआरे नहि आबि सकला। ऐबेर फोन-पर-फोन अबैए जे आठम दिन गाम पहुँच रहल छी। ओइठाम कि अपना सभ जकाँ अछि जे जखन मन हुअए बैग लिअ आ विदा होउ। ओइठाम तँ लोक कमाइले जाइए तँए खटब छइहे।”

की मनमे आबि गेल की नहि, से अखनो तक नहि बुझि पेलौं अछि, अनेरे हँसा गेल।

हमर हँसीकेँ हँसिया नहि बुझि पढ़ुआ काका की बुझलैन से तँ वएह जनता मुदा सौनक बदराएल मेघ जकाँ बजला-

“बौआ, अरामसँ सुतैले अपना सबहक देश-दुनियाँ अछिए, तइले लोक अमेरिका किए जाएत। अखन एहेन स्थिति बनि गेल अछि जे जँ बौआकेँ नइ अबैले कहबैन तँ कहता जे दस बर्खपर दस दिन-ले ऐबेर आमक मासमे गर भेटल अछि, तहूमे अबैसँ बाबू मनाही करै छैथ। आ जँ अबैले कहबैन आ आम नइ देखता तँ अनेरे कहता जे पिताजियो सेहो ठकि लेलैन।”

पढ़ुआ कक्काक बात सुनि मन मनाही केलक जे अने रे अपन दुनू

परानीक बीचक बात दुनियाँमे पसार करए चाहै छी आ दुनियाँक बात बुझैले छुटीए ने भेटैए। आब कि ओ जुग-जमाना रहल जे लोक दुनियाँकेँ घुमि-घुमि कऽ देखैले जाएत आकि दुनियाँकेँ मोबाइलमे समेटि पेंटक जेबीमे सदिकाल रखने रहैए। मुहकेँ बन्न केने रहलौं।

तैबीच पढ़आ कक्काक मनक पाशा जेना बदैल गेलैन तहिना बजला-

“बौआ, अपना सभ जखन गाममे रहै छी तँ गामे ने अपना सबहक देश-दुनियाँ सभ किछु भेल।”

ओना, नीक जकाँ पढ़आ कक्काक विचार नहि बुझि पेलौं मुदा गाम जँ देश-दुनियाँ बनि जाए तँ केकरा अधला लगतै? अपनो नीके बुझि पड़ल! बजलौं-

“उचिते किने..!”

बिनु लक्ष्य कएल गोला गाछपर फेकलासँ जहिना कोनो पाकल आम टुटि कऽ आगूमे खसिते मन उत्साहित होइए जे अर्जुन[3] सँ की हमर लक्ष्यवाण कमजोर अछि, तहिना मनमे भेल।

तैबीच गम्भीर होइत पढ़आ काका बजला -

“बौआ, शरीर-ले पौष्टिक आहारो तँ जरूरीए अछि किने।”

सह पबिते सहटैत बजलौं -

“एकरा के काटत।”

आरो गम्भीर होइत पढ़आ काका बजला -

“सन्तुलित भोजनमे फलोक अनिवार्यता तँ अछिए किने?”

अनायासे मुहसँ निकैल गेल-

“से तँ अछिए।”

पढ़आ काका बजला- “आमो ने फल छीहे।”

अपने बजा गेल-

“अमृत फल छी, भलेँ सालक एके-डेढ़ मास किए ने भेटए मुदा एहेन मीठगर-सुअदगर आ रसगर आन कोन फल अछि।”

जहिना चौबट्टीपर पूबसँ अबैत यात्री, पच्छिम दिसक रस्ता छोड़ि जँ दच्छिन मुहेँ विदा होइए वा उत्तरसँ अबैत यात्री मुड़ि कऽ पूब मुहेँ विदा होइए तहिना पढ़ुआ काका मुड़ैत बजला -

“पाँच हजार लोक अपना गाममे अछि। बारह साए बीघा गामक रकबो अछिए। तइमे चारि साए बीघासँ ऊपर गाछिए-कलम ने अछि।”

पढ़ुआ कक्काक बात ‘पाँच हजार गामक जनसंख्या’ सुनि मन आगू सुनैसँ पछुआ गेल। किए तँ गाममे जे टोले-टोल लोक अछि मन तेमहर चलि गेल। तँए आगूक बात कान लग तक आबि ओहिना ठाढ़े रहल मुदा नहि सुनि पेलौं। बजा गेल -

“काका, लोकेटा नइ अछि, ओही हिसाबसँ परिवारो अछि। तहूमे आब तँ सहजे सुतपुतिया भट्टा जकाँ घौंदा -घौंदे परिवारो फड़ए सेहो लगल अछि।”

हमर बात पढ़ुआ काकाकेँ अधला नइ लगलैन। ओ भरिसक थाहि लेलैन जे चीनीक रसक बोरमे डुमल जिलेबी जहिना रसा जाइए तहिना गोकुल सेहो विचारक रसमे रसपूर्ण भऽ गेल अछि तँए एना बचकन बोल मुहसँ निकैल रहल छइ।

अजमा कऽ पढ़ुआ काका आगू बजला-

“बौआ, हमहीं-तूहीं ने गामक लोक होइक नाते गामक कर्त्ता-धर्त्ता सेहो भेलिऐ।”

आगू बजैक क्रम पढ़ुआ काकाकेँ रहबे करैन मुदा वायु गुदगुदा कऽ पेटसँ निकैलते बजा गेल- “गामकेँ नीक बनाउ कि अधला बनाउ, गामक विधाता-ब्रह्म अपने सभ ने भेलिऐ।”

हमरा बाजबसँ भरिसक पढ़ुआ काका आँकि लेलैन जे जइ चीजक संग केकरो अपनत्व बढ़ै छै आ प्रेमपूर्ण ढंगसँ समर्पित होइत–बिसवास करैत–प्रेमपन जीवन बीतबए लगैए, तही आसक बाट-बटोही ने अपनो सभ भेलिऐ।

चीनीक बोरमे जहिना रस पीब जिलेबी रसभर बनैए तहिना पढ़ुआ काका सेहो रसाइत रसमे डुमल बात बजला-

“बौआ, गामक जेते नीक जमीन अछि–माने बारहो मास उपज दइबला–तइमे अपना सभ फलक खेती, खास कऽ आमक गाछी-कलम, लगौने छी!”

बिच्चेमे बजा गेल-

“हँ, से तँ लगौनहि छी!”

पढ़ुआ काका बजला-

“चारि साए बीघासँ कम गाछी-कलम अपना गाममे नहियेँ हएत?”

पढ़ुआ काका की बाजए चाहै छला आ की बाजि देलैन तइ बीचमे पड़िते अकबका गेलौं, जइसँ नाटक खेलेनिहार लोक जकाँ एकाएक चेहराक भाव बदैल गेल, जे पढ़ुआ काका आँकि लेलैन।

अपन विचारक भाव बदलैत पढ़ुआ काका बजला -

“बौआ गोकुल! गाम-गामक गाछी-कलम–आमक–मिला कऽ लाखो बीघाक खेती सालो भरिक मरा गेल आ हम अपनाकेँ दोबर होइक चेहरा ऐनामे देखि रहल छी..!”

एक तँ पहिनहि पढ़ुआ कक्काक बात सुनि मन विधुआ गेले छल तैपर तेहेन आरो लदगर विचार लादि देलैन जे विधुर जकाँ आरो मन बिधुआ गेल

थोड़ेकाल धरि चुप रहि हारल-मारल बटोही जकाँ बजलौं - “से की

काका?”

पढ़ुआ काका जेना निर्णायक दौड़मे पहुँच गेल छला तहिना बजला-

“जइ फलक खेतीमे सइयो बीघा जमीन बरदाएल अछि तइ गामक लोककेँ उचितो आहार भरि फल-सेवन नइ हुअए ई केते उचित छी?”

मन अकछा गेले छल। बजलौं-

“अहाँक बात के मानत?”

❑ *शब्द संख्या : 1721, तिथि : 29 जून 2019*

दियादीक फेड़

अमेरिकासँ परसू नीलकण्ठ भाय भातीजक बिआहक उत्सवमे शामिल हुअ गाम एला, मुदा से सुतरलैन नहि।

गाम-घरमे रहनिहार जे छैथ वएह ने गामक मान-मरजादा, चाहे जइ रूपमे हउ, रखैक हकदार छैथ। जँ कियो हकदार छथियो आ गाममे नै छैथ तँ ओ की रान्हता-पकौता...। यएह विचार मनमे उठल, तँए अपन दायित्व पूर करैक खियालसँ नीलकण्ठ भाय ऐठाम पहुँचलौं।

नीलकण्ठ भाय तीन साल जेठ छैथ, मझिला भैयाक इसकुलिया संगी छथिन।

अपन पत्नी आ दूटा बच्चाक संग कोठरीमे बैसल नीलकण्ठ भाय गप-सप्प कइये रहल छला कि पहुँचलौं। पहुँचते भैयाक संग भौजियोकेँ प्रणाम करैत बजलौं-

"दुनू परानीकेँ समलिते गोड़ लगै छी।"

अनभुआर जकाँ नीलकण्ठ भायकेँ बुझि पड़लयैन मुदा रधिया भौजी देखिते चिन्हि गेल छेली। एहनो भऽ सकैए जे नीलकण्ठ भाय भरि दिन घरसँ बाहरक काजमे लगल रहने बिसैर गेल होथि आ रधिया भौजी, डेरामे बैसल-बैसल गामे-घर दिस तकैत रहल होथि, तँए चिन्हैमे बेसी बोझ मनपर नहि दिअ पड़ल होइन।

गोड़क असीरवाद दैत भौजी बजली-

"बौआ, बड़ दुबड़ा गेलौं अछि!"

एक तँ भैया सनक पंच, जे भौजीक जँ घरबला छैथ तँ हमरो जेठ भाइये भेला, तँए निधोखसँ उत्तर देलिऐन-

"भौजी, मोटाइले तँ अहाँ सभकेँ छोड़ि देने छी, दुब्बरो भऽ कहुना जीबैत रही, तेतबे असीरवाद दिअ।"

गाम-घरक देखल-सुनल बीस बर्खक जिनगी रधिया भौजीक छेलैन्हे, तँए हमरा बातकेँ गहराइसँ नइ पकैड़, लुक्खीक फुलहर नाँगैर जकाँ ऊपरे-ऊपर पकैड़ बजली-

"अपन कनियाँक हाल कहू जे बीससँ तीस भेली अछि आकि दस?"

तैबीच चाह आबि गेल। तीनू गोरे माने हमहूँ, भौजियो आ नीलकण्ठो भाय, चाह पीबए लगलौं।

नीलकण्ठ भाय दस बर्खक पछाइत गाम एला अछि। माने जहिया नोकरी करए गामसँ गेला तहियासँ पहिल बेर गाम एला हेन। एक तँ पहिनौंसँ नीलकण्ठ भाय लाली-गोराइ छेलाहे, तैसंग दस बर्खक अमेरिका-प्रवासमे आरो दुधिया गोर भइये गेल छैथ।

रधिया भौजीक विचार सुनि आकि अपने यादास्त तेज भेलैन, से तँ नीलकण्ठ भाय जनता, मुदा अधचिन्हू जकाँ बजला-

"परिवारक सभ नीके-ना छथुन किने?"

बजलौं- "हँ, सभ ठीके-ठाक छैथ। अपना दिसक सभ ठीक-ठाक छी किने?"

ओना, नीलकण्ठ भाय बहुत छोट उत्तर देलैन- 'हँ', मुदा मनमे जेना किछु विचार उमैड़-घुमैड़ रहल छेलैन। मनमे भरिसक एहेन विचार चकभौर लऽ रहल छेलैन जे जिनगीक भूख मेटबए गामे किए सर-समाजसँ लऽ कऽ जिला-जवारक संग अपन देशो तँ छोड़िये देने छी, तरवनो जँ ठीक-ठाक नहि रहब तरवन लोक एहेन काजे किए करत..!

नीलकण्ठ भाइक मनमे जे नचैत रहल होनि मुदा अपनो मनमे किछु नाच उठिते छल। नाच उठै छल जे जिनगीक जे मूल समस्या–जिनगी चलैसँ सम्बन्धित–अछि, ओ तँ सबहक संग अछिए मुदा विचारोक तँ जिनगी अछिए। मनुखक जिनगी कहेन हेबा चाही आ केहेन बना जीब रहल छी, एहेन प्रश्न तँ सबहक संग अछिए।

एक दिस जँ देश, राज्य, समाजमे गाम-परिवारक लोक छैथ तँ दोसर दिस धरतीपर–अनेको देशमे–बसल लोक की नइ छैथ? छथिए..! तैठाम जँ मनुख-मनुखक बीच जे सम्बन्ध स्थापित होइए ओहो तँ एक विचार भेबे कएल, मुदा जखन एक-देशक सम्बन्ध दोसर देशक संग केहेन अछि, ऐठाम थोड़े भ्रम अछि, भ्रम ई अछि जे देश-देशक बीचक जे सम्बन्ध अछि ओ सम्बन्ध खाली माटि-पानिक नहि, मनुखक बीच विचारक दुनियाँक सम्बन्ध सेहो अछिए। तैठाम अनेरे ने मनमे निचोड़ आबि जाइए जे एक देशक लोक अपन जन्मभूमिक सेवा छोड़ि दुनि याँमे केतौ वौआ-भटैक रहला अछि। खाएर.., ई तँ अपन-अपन मनक विचार आ जिनगी जीबैक ढंग अपन-अपन अछि। कहलो जाइए जहिना पसिन–पसन्द–अपन-अपन तहिना विचारो अपन-अपन होइए। जखने अपन-अपन विचार हएत तखने काजो-बेवहारक ढंग अपन-अपन हेबे करत...। खाएर, नीलकण्ठ भाय लग आउ। विचारमे मोड़ दैत बजलौं-

“भाय, ऐठाम नीक लगैए।”

हमर विचारक प्रश्न नीलकण्ठ भायकेँ जेना इमानदार बना देलकैन आकि आने जकाँ बंगला गंगाक धार, जे सभ समुद्रसँ जुड़ल अछि, ओकर पाइनिक धार उनटा-सुनटा दुनू बहैए आकि आने जकाँ भेलैन जे समैयक हिसाबसँ झूठो बजै छैथ आ सच्चो तँ बजिते छैथ। खाएर जे भेल होनि मुदा नीलकण्ठ भाय बजला-

“गाम बिसैर गेलौं। जीवित बाल-बोधक संग चेतन-सियानक परिवारमे जखन समैये पेब मातो-पिता मोन पड़ै छैथ, तखन गाम तँ

सहजे माटि-पाइनिक छी। एक्के गाममे रंग-रंगक माटियो अछि आ रंग-रंगक पानियोँ नहि अछि सेहो केना नइ कहल जाएत? ओना, माटि अथबल अछि, एकठामसँ दोसर-ठाम धुसुक-फुसुक नइ कऽ पबैए तँए ओकर महत् कम छइ। मुदा पाइन तँ पानि छी। गंगाधारसँ प्रशान्त महासागरक संग डबरा-चभच्चा, कोंचाढ़ि धरि बास करैबला। एक्के गामक पानि रंग-रंगक जाइतिक चलैन बना चालैनमे चलैए।

गाम बिसैर गेला, तखन फेर एला किए? केते बिसरला आ केते मन छैन तइ अजमा कऽ बजलौं -

“अखन रहब किने?”

रहैक नाओं सुनिते जेना नीलकण्ठ भाइक पीठमे मच्छर काटि लेलकैन तहिना छिल-मिला कऽ बजला-

“दियादीक फेड़मे पड़ि गेल छी..!”

‘दियादीक फेड़’ सुनिते मन औनाए लगल। हम सभ गाम-घरमे रहै छी तँए कखनो घरक घराड़ी-ले, तँ कखनो मालक थैर-ले दियादीक फेड़मे पड़ै छी, मुदा नीलकण्ठ भाय तँ दुनू टपि सात समुद्र पार देशमे रहै छैथ तखन कोन ग्रह-नक्षत्र आबि कऽ हिनका दाबि देलकैन! अजमबैत बजलौं-

“की फेड़ कहलिऐ भाय साहैब?”

नीलकण्ठ भाय बजला-

“दस बर्खपर गाम पएर देलौं हेन, मुदा तइसँ पहिने ते गामेमे रहै छेलौं, कहाँ कहियो बुझि पड़ल जे एहेन बोनाह गाम अछि।”

नीलकण्ठ भाइक सभ बात नीक जकाँ तँ नहि बुझलौं मुदा ‘गाम बोनाह अछि’ ऐपर थोड़ेक मन अँटैक गेल। कोन नव बात नीलकण्ठ भाय बजला? पर्यावरणक अभियान जँ सफल भेल अछि तँ नीके भेल किने। स्वच्छ हवा आ स्वस्थ वातावरण रहने सभ किछु ने स्वस्थे

रहत...। दोहरबैत बजलौं- “भाय साहैब, की बोनाह कहलिऐ?”

‘बोन’ सुनि नीलकण्ठ भाय अपनाकेँ संयमित केलैन। संयमित होइक कारण मनमे पहिनहि उठि गेलैन जे केकरो कोनो सजाइयक रूपमे बनवास होइए, जेना रामोकेँ भेलैन आ पाँचो पाण्डवोकेँ भेल छेलैन, तहिना तेसर एहनो की नइ छैथ जे अपन मन फुरने बनेमे जा बसै छैथ, जेना ऋृषि-मुनी, जोगी, तपी सभ अनेको भेला अछि। फेर मन उनैट कऽ दोसर दिस चलि गेलैन। दोसर दिस जाइते मन देवलोक पहुँच भगवान सबहक किरदानी देखए लगलैन। कियो भाँगक संग आक -धथुरक बोन लगौने छैथ तँ कियो सखुआ शीशोक बोन सेहो लगौनहि छैथ। कियो रंग-रंगक बेल-फूलक बोन लगौने छैथ तँ कियो कुम्हार जकाँ चाक बैसा तौला-कराही सन मनुखोक बोन लगैबते छैथ..!

देवलोकक कारगुजारी देखि नीलकण्ठ भाइक मन नारदजी जकाँ देवलोकसँ मृत्युलोक तक पहुँच गेलैन। मृत्युलोकमे प्रवेश करिते रंग-रंगक बोन-झाड़ देखए लगला। कियो किताबक बोन साजि बीचमे बनवासी बनल रहै छैथ, तँ कियो चमचा-बेलचा सन-सन लोकक बोन बनि बसल सेहो रहिते छैथ। कियो आम (फल), अड़हुलक (फूल) बोन लगा बगबार मालीनक संग माली भेल छैथ...।

अथाह लोकमे माने देवलोकसँ मृत्युलोक धरि, अपन थाह नहि पबैत नीलकण्ठ भाय परिवारमे घुसि, बजला-

“बौआ, तीन दिनक छुट्टीमे पितियौत भाइक बिआहक दुआरे एक दिन पहिने एलौं। ऐठाम अबिते दियादीमे एक गोरेक मृत्यु भऽ गेल। बिआहो रूकि गेल आ अपने सेहो रूकले रहि गेल छी।”

नीलकण्ठ भाइक विचार सुनि मन चौंक गेल जे गामक बोनमे पड़ला अछि। मुदा से किए बजितौं। मनेमे रखि बजलौं -

“आगूक की विचार अछि?”

दस बर्खक अमेरिकाक प्रवासक बीच नीलकण्ठ भाय एते तँ सीखिये गेल छैथ जे समय केते मूल्यवान चीज छी। अपना सभ ने चूरा-दही-आम खा अमैया नीन सुतनिहार छी, मुदा अमेरिकाबला जँ से करत तँ पार लगतै..! एहने विचारक दोहरी बोनमे नीलकण्ठ भाय केंकिहारि काटि रहल छैथ। बजला-

“सएह सोचि रहल छी।”

नीलकण्ठ भाइक ठंढाएल मन देखि अपनो मनकेँ ठंढबैत बजलौं-

“जाइसँ पहिने एकबेर आरो भेँट देब।”

बजैत उठि कऽ विदा भेलौं। कनियेँ आगू बढ़लौं कि लाल काकाकेँ देखलयैन। सभदिना घरवारी तँ लाले काका छैथ, हुनका ऐठाम एलौं आ हुनकर भेँट केने बिना चलि जाएब, से केहेन होएत। तहूमे लाले कक्काक बेटा बिआहमे नीलकण्ठ भाय गाम आएल छला। भरिसक अपन-पितियौत भाइक बीचक सम्बन्ध अपना चश्मे देखब छेलैन। बेटा बिआहक यज्ञ लाल काकाकेँ बिथुत भइये गेलैन अछि, तँए मनमे थोड़ो-थोड़ कलेश हेबे करतैन। बजलौं- “काका, अहाँकेँ तँ पाकल जअमे पाथर खसल।”

माने बेटाक बिआह बाधित भेलैन।

गमैआ धार जहिना सभकेँ गमले रहैए, माने सुखले रस्ता जकाँ पाइनियोँक रस्ताकेँ बुझैए। तहिना ने गामक बीधो-बेवहार लोककेँ बुझलो अछि आ अंगेजलो तँ अछिए, तँए मनमे किए कोनो तरहक उबड़-खाबड़ लाल काकाकेँ बुझि पड़ितैन। बजला-

“जीता-जिनगी अहिना होइत एलैए आ चलैत रहतै।”

लाल कक्काक विचारक समर्थन करैत बजलौं-

“कोनो कि दुनियाँ आइये भेल अछि, माने औझुके बनौल छी आकि लोके आइयेक छी? अहिना होइत एलै हेन आ धार जकाँ चलैत-

बहैत बढ़ैत रहत।"

अपन पाशा बदलैत लाल काका बजला-

"की कहबह सुधीर, दियादक फेड़मे पड़ि गेल छी।"

लाल कक्काक बात कोनो भाँजेपर ने चढ़ल जे एना किए सभ दियादिये फेड़मे पड़ल छैथ? बिटियबैत-बिटियबैत बजलौं-

"से की काका?"

लाल काका बजला-

"जखन समाजमे छी तखन समाज जइमुहेँ चलत तही मुहेँ ने चलब समाजक नियम मानब भेल।"

सूहगर विचार सूहकाइर बजलौं -

"उचिते किने!"

ले बलैया! ढोंड़ साँपक मनतर जकाँ लाल काका बकए लगला -

"जहिना बेल खेनिहार अपन धोतीक ढट्ठा सम्हारि लइए तहिना बहरबैयाकेँ सेहो गाम अबैसँ पहिने सम्हैर कऽ एबा चाही। एक तँ अबिते सुनलैन जे मरण भेने काजक जरन होइए, से सुनिते गामसँ भगैले तैयार भेला। रोकैत-रोकैत अखन तक छैथ आब कहू जे नह-केश नेने गामक सीमा केना टपता?"

की बजितौं, एतबे बजलौं-

"लाल काका, एकबेर भौजियोसँ पुछि लियौन।"

❑ *शब्द संख्या : 1412, तिथि : 03 जुलाई 2019*

वाह रे आदत

पनरह दिनक पछाइत गाम घुमल छेलौं। बच्चेमे जखन जगरनथियाकेँ, जगरनाथ जाइबलाकेँ मुट्ठी भरि बेंतक संग जगरनाथक रस्ता कटैत गीत गबैत देखिऐन, ओ अखनो तक ओहिना मनमे जीवित अछि। ओना, जखन बच्चासँ चफलगर भेलौं आ जगरनाथ जाइ -जोकर भेलौं तहियासँ परिवारमे तेना ओझरा गेलौं जे मनक विचार पनरह दिन पहिने तक पूर नइ भेल छल। कहब जे परिवारमे अपने जानि कऽ ओझरेलौं आकि कियो ओझरा देलक?

अनकर बात नइ कहब, मुदा अपना दुनू भेल। जखन परिवारक डारि-पातकेँ सुखल देखै छेलिऐ आ ओकरा पोनगबैले अग्रसर होइ छेलौं, तखन अपनो लुइरिक अभाव छल, माने लुरि नइ छल आ जखन किछु खगता-बेगरता होइ छल आ किनको ऐठाम सहयोग लइले जाइ छेलौं तँ ओहो सही रूपमे सहयोग नहि दए ओझरा दइ छला, जइसँ, माने दुनू दिससँ पड़ने, खूब ओझरा जाइ छेलौं।

कोढ़ियोकेँ जखन एते भरोस होइते छै जे एक दिन हमरो कुहेस हटत आ सूर्यक लालिमाक दर्शन हएत, तखन तँ अपने केतबो कोढ़ि किए ने छी तैयो ओइसँ नीक छेबे करी किने।

अपनो जिनगीक कुहेस फटल आ किछु संगी-साथी जगरनाथ जाइक सेहो भेटला। जखने संगी-साथी भेटला तखने मन मानि गेल जे जगरनाथक दर्शन हेबे करत। तहूमे ओ संगी-साथी सभ एतेक बोल-

भरोस देबे केलैन जे जगरनाथ गेनिहारकेँ ने बटखर्चाक अभाव होइ छै आ ने गाड़ी-सवारीक। जगरनथिया गीत गबैत सिराक रस्ता सेहो कटैत बढ़ू आ खेनाइ-पीनाइ सेहो गौँआँ-घरूआ पुरबैत रहता...।

जखन भोजनेक समस्या मेटा जाएत तखन जिनगीक मूल समस्याक समाधाने ने भऽ गेल। दोसर, रहल गाड़ी-सवारी। तइले अपन पएर अछिए।

पनरह दिनक पछाइत जगरनाथसँ घुमल छेलौं , जँ अन्हरिया पख मानबै तँ सौंसे पख आ जँ से नहि इजोरिया मानब तैयो सेहो सौंसे पख। मुदा जे मनुख धरतीपर आबि गेल ओ तँ अपन अधिकार कर्तव्य सेहो लऽ कऽ आएल। तँए इजोरिया-अन्हरियाक सीमाक रेख नहि बना आधा इजोरिया आ आधा अन्हरियाक बीचमे जगरनाथक यात्रा भेल।

जगरनाथक यात्रा नीक रहल, तँए गाम अबैत-अबैत मन तिरपित भऽ गेल छल मुदा गामक सीमामे पएर रोपिते भनक लागल जे मनमोहिनी दीदीक टाँग टुटि गेलैन। ओ अपने बजै छला आकि कहलैन तइ बीचमे किछु अन्तर अछिए। मुदा ओ हमरा नहि कहलैन, दोसरकेँ कहलखिन जे 'मनमोहिनी दीदीक टाँग टुटि गेलैन।

मनमोहिनी दीदीक टाँग टुटि गेलैन, उड़ंतियो-सुड़ंती बात रहनौं मन जेना झमैक उठल। बाप रे! जुलुम भऽ गेल..! साठि बर्खक अवस्थामे टाँग टुटने शेष जिनगी अधमरू भइये जाइए।

जगरनाथ यात्राक जे खुशी मनमे छल तइपर जेना पानि पड़ि गेल। ओना, संगी-साथीक बीच रही, तँए संगपनो निमाहब तँ जरूरी रहबे करए। संगपनाक माने भेल एक विचार, एक रस्तासँ चलब।

घरपर अबैत-अबैत जेना गामक माया पकैड़ लेलक। पैछला सभ बिसैर गेलौं, माने मनसँ हटि गेल आ मनमोहिनी दीदी मनमे नाचए लगली। समाजमे रहने अपनो तँ किछु दायित्व बनिते अछि। जाधैर

गाममे नइ छेलौं ताधैर नइ छेलौं, मुदा जखन गाम आबि गेलौं तखन एहेन असाध रोगीक सेवा करब प्रमुख अछिए। ओना, भिनसुरका समय रहने ने नहेबाक ओहन मने छल आ ने खगते छल। तहिना खाइयोक नहियेँ छल। रस्तामे चाहो पीबिये नेने छेलौं आ पानो खाइये नेने छेलौं।

हाथ-पएर धोइ, कपड़ा बदैल सोझहे मनमोहिनी दीदीक ऐठाम विदा भेलौं। मनमे रोपि लेलौं जे रस्ता-पेरामे एक्को मिनट केतौं नहि बिलमब।

मनमोहिनी दीदी पिताजीक सहोदरे बहिन, मुदा परिवार अलग-अलग अछि। मनमोहिनी दीदीक पिता, माने हमर बाबा, अपना जनैत नीक घर-बरक संग हिनकर बिआह केलकैन। आजुक परिवेशमे बिआह दुरागमन संगे-संग हुअ लगल अछि मुदा किछु दिन पूर्व (पहिने) तक से नइ छल। बिआह चाहे बालपन हुअ आकि चेष्टगरमे हुअ, मुदा बिआहक किछु सालक पछाइत दुरागमन होइ छेलइ।

बिआह-दुरागमनक बीच जहिना नारीकेँ सासुर जाएब बर्जित छल तहिना पुरुखोकेँ छल। ओना, नारीक बीच सोलहन्नी छल मुदा पुरुखक बीच से नहि छल। किछु जाति-विशेषमे सासुर जाएब चलैनमे छल आ किछु जातिक चलैनमे नहि छल...। ऐ विचारकेँ अन्यत्र नहि बुझब माने जाति विशेषक बात नहि बुझब। जेकरा हिन्दू मानै छी तइ बीचक चलैन छी।

दुरागमनक पछाइत मनमोहिनी दीदी सासुर गेली। सासुरमे बसला पाँच सालक पछाइत पीसा–माने मनमोहिनी दीदीक पति–गाछपर सँ खसि मरि गेला। ओना, गाछपर सँ खसला पछाइत लगले नहि मरि गेला मुदा देहक हड्डी तेना टुटि गेल छेलैन जे लाखो रंगक सेवाक पछातियो छह मास पुरैत-पुरैत मरि गेला। अही छह मासक बीच परिवार नाको-दम–सेवा करैमे माने उठौनाइ-बैसौनाइसँ लऽ कऽ खुएनाइ-पीएनाइमे–भऽ गेलैन। संजोग एहेन भेल तैबीच मनमोहिनी दीदीकेँ एकटा सन्तान

सेहो भऽ गेल छेलैन।

पीसाकेँ मुइलाक पछाइत बाबा केकरो बात नहि मानि मनमोहिनी दीदीकेँ सासुरसँ अपना ऐठाम लऽ अनलैन। बाबाक मनमे एकटा दृढ़ विचार पकड़ने रहैन जे गाम-घरमे विधवाक जे दुर्गैत अछि, मनुखसँ नीचतम मनुख बुझब-मानब, ओ दुर्गैत अपन सन्तानक संग अपना सोझामे केना देखब!

गाम-घरमे अखनो विधवाकेँ लोक अशुभ बुझि शुभ काज करैकाल देखबकेँ अशुभ बुझिये रहल छैथ। ई तँ भेल नैतिकक दृष्टिसँ अनैतिक, मुदा बेवहारिक रूपमे आरो अनेको एहेन बेवहार अछि जे अमानवीय अछि...।

यएह सभ विचार बाबाक मनकेँ एते सक्कत बना देने छेलैन जे केकरो बात मानैले तैयार नहि भेला। जहिना कियो वैदिक, माने वेद जननिहार हजारो अवैदिकक विचार काटैले सदिखन तैयार रहै छैथ तहिना बाबा सेहो अपना ऊपरक जे कोनो आक्रमणक शंका रहैन सबहक जवाब मनक तरकशमे तीर जकाँ सजा लेलैन।

शुरूमे जखन मनमोहिनी दीदी अपना नैहर एली तखन बेटी जकाँ सभ बेवहार बाबा करै छला। समाजो तँ समाज छी, नीककेँ जहिना नीको बनबैए आ अधलो बनबैए तहिना अधलाकेँ सेहो आरो अधलो बनबैए आ नीको तँ बनैबते अछि। तँए समाजक जे गति-विधि अछि, ओइमे नीक-अधला सेहो गतिमान अछिए। ओना, समाजमे विधवाक गति-विधि सेहो अनेको रंगक अछिए। किछु जाति-विशेषमे बिआहक पछाइत कन्याक–माने लड़कीक–अवस्था किए ने सुकुमारियेक हुअ मुदा दोसर बिआह वर्जित अछि। जइसँ समाजमे किछु-ने-किछु दुर्गन्धक जन्म सोभाविक रूपेँ भइये रहल अछि। मनुखक गति-विधि आ समाजक गति-विधिमे जैठाम खाँच (दूरी) रहैए तैठाम एहेन-एहेन काज सोभाविक रूपेँ जगिते अछि। खाएर जे अछि...।

बाबाक विचार रहैन जे मनमोहिनीकेँ दोसर बिआह करा दिऐ, मुदा मनमोहिनी दीदीक मनकेँ एकटा प्रवल विचार पकैड़ नेने रहैन, ओ ई जे अपन सुखक जिनगी-ले बच्चाक (दोसरक) सुखक हरण करब नीक नहि..! वएह माता-पिता 'कुमाता आ कुपिता' सेहो कहबै छैथ..! तँए ठेहुन रोपि मनमोहिनी दीदी अड़र गेली जे दोसर घर नइ जाएब, जएह अछि तहीमे अपन घर स्वयं बसाएब...।

अन्तोअन्त बाबा अपना जीबैतेमे अपन आँगनसँ थोड़े हटि दोसर आँगन बना, अपन आधा सम्पैत मनमोहिनी दीदीकेँ दए अपने तरहक परिवार सेहो बना देलखिन।

एक तँ ओहुना जइ परिवारमे बेटा-बेटी दुनू रहल तहू परिवारमे बेटीक अपेक्षा बेटाकेँ माए-बाप बेसी दुलार-पियार करै छैथ, तैठाम एकमात्र सन्तानकेँ रहने आरो बेसी होइते अछि। आने-आन जकाँ रीतलालकेँ, माने मनमोहिनी दीदीक बेटाकेँ माइयक एते दुलार भेटल जे अकरमण्यसँ अकरमण्य भऽ गेल। माने ई जे खेती-बाड़ीसँ लऽ कऽ घर-सँ-बाहर धरिक भार मनमोहिनी दीदी अपना सिरे रखने छेली। जइसँ जुआन भेलो पछाइत रीतलाल घरक कोनो काजकेँ, नइ केने, किछु ने बुझै छल। ओना, रीतलालक बिआह सेहो भऽ गेल आ मनमोहिनी दीदीक पुतोहु सेहो बसै छैन, मुदा सिदहाक चाउरो आ आनो-आन वस्तु मनमोहिनी दीदी अपनेसँ पुतोहुकेँ नापि-जोखि कऽ दइ छथिन। तइ पाछू मनमोहिनी दीदीक अपन हस्तीक (मलिकपनक) मन छैन आकि बेटा-पुतोहुकेँ सिनेहसँ सेवा करब अपन कर्तव्य बुझै छैथ से मनमोहिनीए दीदी जनती।

पुबरिया घरक ओसारपर मनमोहिनी दीदी बिछानपर पड़ल अँगना दिस टक-टक देखि रहल छेली। हमरा जाइसँ पहिनहिसँ रीतलाल लगमे बैसल छेलैन। अँगना पएर दइते रीतलालकेँ कहलिऐ- "बौआ, दीदीक की

हाल छैन?"

रीतलाल किछु ने बाजि सोझहे हुचैक-हुचैक कानए लगल। अपन कानो ठाढ़ छल जे रीतलाल कि बाजि रहल अछि तइ सुनैले आ आँखियो देखि रहल छल जे दीदी कानि रहल छैथ आकि हँसि रहल छैथ, तहिना डेगे-डेगे पएर बढ़ैत पुबरिया ओसारपर गेल। ओना, अपनो आँखिये देखिते छेलौं जे अपना अछैत मनमोहिनी दीदी बेटाकेँ कोनो काज करए नहि दइ छेलखिन, मुदा से देखबेटा करै छेलौं। किए तँ मन मानि, रहल छल जे जाबे कियो काज करै-जोकर छैथ ताबे जँ घर-परिवारक काज करै छैथ तँ वएह ने भेल हुनकर परिवारक प्रति समर्पण। से समर्पण जँ परिवारमे माता-पिता बेटा-बेटीक बनल रहए तँ वएह ने भेल परिवारक प्रति निष्ठावान बनब। मनमोहिनी दीदीक रग-रगमे एहेन विचारो आ काजो समाएल छेलैन्हे।

बौक भेल सुग्गा जकाँ रीतलाल बौक बनल छल। बौक दुनू रंगक होइए, पहिल- जेकरा बजैक अंग-भंग होइ आ दोसर- जेकरा अंग-सुअंग रहितो अकरमण्यक आक्रमणसँ पीड़ित हुअए। रीतलाल दोसर तरहक अछि...।

रीतलाल बकर-बकर मुँह देखि रहल छल। ओना, मनमोहिनी दीदीपर मन सेहो लहरैत रहए, मुदा दीदी जिनगीक लीला विचारकेँ माने अपन मनक लहैरिक विचारकेँ, उठैये ने दिअ चाहैथ। किए तँ जहिना माता-पिताक मनमे सदिकाल बनल रहैए जे अपना अछैत बेटा-बेटीकेँ कोनो दुख नहि होइ, तहिना बेटो-बेटीक मनमे सेहो होइते अछि जे माता-पिताक सेवा सभसँ पैघ धर्म छी। मनमोहिनी दीदीक डाँरमे तेते चोट लगि गेल छेलैन, जे दर्जनो हड्डीक उदगम स्थलकेँ बेकम्मा बना देने छेलैन। किछु हड्डी टुटियो गेल छेलैन आ किछु छिटैकियो गेल छेलैन माने अपन जगह छोड़ि देने रहैन जइसँ मनमोहिनी दीदीकेँ बैसल-उठल नइ होइ छेलैन।

रीतलालकेँ चुप देखि अपनो मन हहैर कऽ मानि गेल जे सभटा बिपैत तँ रीतलालेपर खसल, तैबीच जँ हमहूँ किछु लादि दिऐ सेहो उचित नहियेँ हएत। मनमोहिनी दीदीकेँ पुछलयैन-

“दीदी, एना केना भेल?”

मनमोहिनी दीदी बजली-

“बौआ, कोठीक ऊपर बोरामे चाउर छल वएह जे हेट करए लगलौं कि देहेपर खसि पड़ल। नै सम्हरल, अपने तर पड़ि गेलौं आ डाँरेपर बोरा खसि पड़ल।”

एक दिस मनमे तामसोक लहैर उठैत रहए जे परिवारमे केहेन काज केहेन सदस्यकेँ करक चाही आ दोसर दिसक मनमे गुदगुदी सेहो लगैत रहए। अपने बजा गेल-

“वाह रे आदत..!”

❑ *शब्द संख्या : 1455, तिथि : 06 जुलाई 2019*

कटबी सुइद

दू सालसँ चलि अबैत रौदी किसानक सेखीकेँ नीक ज काँ उतारि देने अछि। ओना, किसानो रंग-रंगक छैथ जे अपन-अपन जिनगीक अनुकूल अपन-अपन ढंग सेहो बनाइये नेने छैथ मुदा से थोड़-थाड़, अधिकांश किसानक जेहेन जीवनाधार छैन ओहने आधारित जीवन संतोरवी काकाकेँ सेहो छैन।

एकरंगाह जिनगी रहितो संतोखी काका आन किसानसँ भिन्न ऐ मानेमे छैथ जे धैर्यवान किसानक जे जीवनगाथा मिथिलांचलक रहल अछि ओइ जीवनगाथाकेँ ई अपन जीवनमे उतारि अखन तक निमाहैत एला अछि। ओना, दुनियाँ छी, केतौ अकासक बर्खाक छुतियो ने पड़ैए तँ केतौ सालो भरि–माने तीन साए पैंसैठो दिन–एकबेर-दूबेर बरखा होइते अछि। तँए कहब जे एकठाम मनुखक बास अछि आ दोसरठाम नइ अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। मनुखो तँ मनुख छी जे लोहोसँ सक्कत आ विचारोसँ अखज अछिए। रहबो केना ने करत? जे लोहाकेँ पानि जकाँ बना बड़का-बड़का इंजन बना ठाढ़ कऽ दइए, पाथरक पहाड़केँ सीमेन्ट जकाँ बुकनी बना ईंटाक घर जोड़ि लइए...। मनुखो सएह छी ने। एहने अखज विचारक संतोखी काका सेहो छैथ।

जेठ मास अन्तो-अन्तपर आबि गेल, परसू अखाढ़ चढ़त, मुदा आन सालक जेठ आ ऐबेरक जेठमे जेठे नहि जेठपन सेहो भेबे कएल अछि। जेठक जेठपनक माने भेल- सूर्यक किरिणक प्रखर रूप, जे

अखाढ़क बर्खासँ तृप्ति भऽ किरिणक प्रखर प्रभावक असर कम करत, जइसँ धरतीमे सृजन शक्तिक आगमन हएत। मुदा सेहो तँ एकरंग एक गतिये नहियेँ चलैए। ओना, सभठामक अपन-अपन प्रभाव सेहो अछिए...।

अपना ऐठाम तीन रंगक जेठक[4] रूप अछिए। तँए सभ सालक जेठ मास एक्केरंग नहियेँ होइए। जइ साल पाछूसँ अबैत रौदी–रौदियोक अपन गणित अछि। ओ अछि एक सालक रौदी, दू सालक रौदी इत्यादि-इत्यादि–रहैए, तइ सालक जेठक तापक लहैर आ जइ साल मौसमानुकूल रहल तइ सालक जेठ आ जइ साल पैछला बरसातमे खूब बरखा भेल रहल तइ सालक जेठक लहैरिक लहरपन सेहो कम होइते अछि।

किसानी जिनगीक उतरल सेखीक बगए-वाणिक बीच संतोखी काका अपन धीरजक बन्हनकेँ ढील होइत देखि रहल छैथ। एक दिस दू सालसँ अबैत रौदी आ दोसर दिस मिथिलांचलक ओइ वंशजक वंशलोचन अपनाकेँ देखि रहल छैथ जे बारह बर्खक रौदीक उपरान्त जगत् जननी जानकीक आवाहन भेलैन।

अपन बीतैत जिनगीपर संतोखी कक्काक नजैर अनायास दौड़लैन। अही बेरटा रौदी भेल अछि सेहो बात तँ नहियेँ अछि, केत्ता रौदी जिनगीमे देखलौं हेन। दू सालक रौदी तँ साधारण रौदीक श्रेणीमे भेल।

भिनसुरका आठ बजेक समय, मुदा से घड़ीक समय, रौदक प्रखरता माघक बारह बजे दिनक रौदक प्रखरतासँ केते गुणा बेसी आ आन सालक जेठक रौदसँ दोबर-तेबर शक्तिशाली भेने संतोखी काका काज-उदम स्थगित कए देलैन। काज उदमक माने भेल अपन दैनिक जीवनक क्रिया-कलाप। ओना, समयानुकूल दैनिक क्रिया-कलापमे सेहो अन्तर अबिते अछि, मुदा से अखन नहि, अपन जरूरी काजकेँ सम्हारि संतोखी काका दरबज्जापर बैस मेघ दिस देखि रहल छला। आशा ईहो करै छला जे दू सालक रौदी भरिसक ऐबेर मेटा जाएत। मुदा कोनो बातकेँ

लिख कऽ मेटाएब वा लिखलेपर लिखैत जाएब वा मेटेलहेकेँ मेटबैत जाएब, ईहो तँ प्रश्न अछिए।

रौदीक विकराल आक्रमणसँ अपनो मन दहैल गेल। आब जीब कठिन अछि। समाजक भरोस सेहो टुटि रहल अछि। माने ई जे अपना कोनो वस्तु नै रहने समाजक बीच हथपैंचसँ सुदिक कर्ज धरि आ मंगनी-सँ-मोल धरि समाजमे आदान-प्रदान अदौसँ होइत आबिये रहल अछि, मुदा से अबैए बेकती-बेकतीक उदय-प्रलयसँ। मुदा जैठाम सामुहिक बिपैत अबैए तैठाम के केकर दाता बनत! जे दइबला छैथ ओ अपने आक्रान्त भऽ लइबला बनि गेल छैथ। दाता कियो ने, मंगनिहार ढेर..!

गाम दिस नजैर उठाबी तँ देखि पड़ए जे अपने पचास-साठि मन अन्न उपजौनिहार छी, जे नइ उपजल, रौदीक चलैत, तइसँ आक्रान्त छी, मुदा हमरा सन-सन जे परिवार अछि, सबहक गति तँ एहने भऽ गेल अछि। एक स्तरक जीवन जीनिहारक रंगे-रूपटा नहि, क्रिया-कलाप सेहो एकरंगाह भइये जाइ छइ।

जेते मन रौदी दिस बढ़ल जाए तेते–जहिना वनसँ सघन वन बनैए तहिना विचारसँ सेहो सघन विचार बनिते अछि–जइसँ सघन ओझरौठ मनमे सेहो बनले जाए...। सोझमे ईहो देखि रहल छेलौं जे परिवारक गाड़ी जइ गतिये चलैत आबि रहल छल तइमे एक-एक अंग-भंग भेल जा रहल अछि। भोजनसँ लऽ कऽ जिनगीक सभ खगता तेना धीरे-धीरे बढ़ि रहल अछि जे एकोटा पुराएब असाध भऽ जाएत। जखन गामे रौदीसँ मरमराएल जा रहल अछि तखन गाममे रहनिहार मरमरेबे करत..!

मन बदलल, माने एकटा विचार मनमे उगल। उगल ई जे जिनका बेसी खेत-पथार छैन वा जिनका कम छैन, माने अपने बीचमे ठाढ़ भऽ अपन चारियो बीघा खेतकेँ आधार बना तीन टुकड़ी गामकेँ बनेलौं। अपने जे बीचला टुकड़ीमे भेलौं, तइ तरहक परिवार दिस बढ़लौं। विचारकेँ आगू बढ़ेलौं। आगू बढ़िते मन संतोखी काकापर चलि गेल। जेतबे अपना

खेतो आ परिवारो अछि तेतबे ने हुनको छैन। ओना, संतोखी काकाकेँ सोझामे गामक आन-आन सभ 'काका' कहि आदर करै छैन। भलेँ संतोखी कक्काक सोझ-सँ-परोछ होइते ओइ विचारकेँ[5] कियो टटघरक ताखपर तँ कियो भीतघरक खोलियापर तँ कियो पक्काघरक खिड़कीपर रखि अपन असंतोषी विचारकेँ किए ने अगुआ लिअए। मुदा तइसँ संतोखी काकाकेँ कोन मतलब छैन। ओ तँ अजन्मा संतोख जकाँ जाबे धरतीपर जीबैत रहता ताबे कनियोँ-ने-कनियोँ प्राण, भलेँ ओ हुकहुकीए किए ने होइ, रहबे करतैन। खाएर.., गामो तँ गाम छी, ढंगर रहऽ कि बेढंगर, मुदा लोको तँ लोक छीहे जे केहनो ढंगरकेँ बेढंगर बना दइए आ केहनो बेढंगरकेँ ढंगर। मन हल्लुक करैले काका ऐठाम विदा भेलौं।

दरबज्जाक चौकीपर बैसल संतोखी काका घरक कोरो गनि रहल छला आकि ऊपरमे बरखा ताकि रहल छला से संतोखीए काका जानैथ मुदा छला ओ ऊपरे दिस तकैत।

कनी फरिक्के रही कि मनमे उठल जे दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम करबैन मुदा मुहसँ किछु बाजब नहि, किए ने आगू भऽ कऽ असीरवाद दैत उहए मुँह खोलता। बुझल अछिए जे गाम-समाजक लोकक बीच दीक्षाक बँटबारामे अनुभवक ज्ञान पछुआ जाइए। रंग-रंगक जोगी-फकीर सभ गाम-गाममे दीक्षाक परसादी बिलैहिये रहल अछि...।

संतोखी कक्काक लगमे पहुँचते पएर छुबि दुनू हाथ जोड़ि , जहिना रामदरबारमे लक्ष्मण-हनुमान दुनू हाथ जोड़ि दरबार सजबै छैथ तहिना आगूमे ठाढ़ भऽ गेलौं। ओना, मनमे एहेन विचार प्रवल छल जे किछु बाहरी सहायता भेने तत्काल मुसीबतसँ निकैल जाएब। जखने संकटसँ निकैल जाएब, तखन पछाइत बुझल जेतइ। मुदा से (माने विचार) रखलौं मनेमे, बजलौं किछु ने।

ऊपर-सँ-निच्चाँ माने माथ-सँ-पएर तक आ निच्चाँ-सँ-ऊपर माने पएर-सँ-माथ तक–माने खिस-नख कहियौ कि नख-सिख तक–हिया कऽ

देखि संतोखी काका असीरवाद दैत बजला-

"जगत, इन्द्र भगवान तँ सोल्होअना बेपाट भऽ गेल छैथ..!"

संतोखी काकाकेँ आगूक बात पेटेमे छेलैन तइ बिच्चेमे बजा गेल-

"जखन भगवाने बेपाट छैथ तखन दुनियाँ केना बँचत?"

संतोखी काका बजला-

"तखन की करबह?"

विचारमे विचार मिलबैत आकि मनक जरैनसँ संतोखी काका बजला, से ओ अपने जनता, मुदा अपन बोलती बन्न भऽ गेल। तँए चुपे-चाप लगमे जा कऽ मुँह बन्न केने बैस रहलौं।

विचार बदलैत संतोखी काका बजला-

"बौआ, केमहर जाएब से रस्ते ने देखि रहलौं अछि। बुझले छह जे गाममे ढोरबा-मंगला मारि केलक आ हमरो केसमे फँसा देलक। दसे दिनक पछाइत जब्ती-कुर्कीक आदेश भेल, थाना आबि कऽ दमकलो उठा कऽ लऽ गेल, अखनो ओत्तै पड़ल अछि, ने अपने हाजिर भेलौं हेन आ ने दमकल वापस आएल हेन, अखन हाथो खालीए अछि, केना कोट-कचहरी करब।"

संतोखी कक्काक विचार सुनि अपन मन कनी हरियाएल। हरियाएल ई जे दुनियाँमे लुटनिहारोक कि कमी अछि, कियो आगूसँ लुटैए तँ कियो पाछूसँ, कियो ऊपरसँ लुटैए तँ कियो निच्चाँसँ , तइ बीचमे पड़ल मनुखक रस्ता की हएत। अखन एते तँ देखै छी जे संतोखी काका जेहने रौदीमे पड़ल छैथ तेहने रौदीमे अपनो छी, तखन किए ने हुनके देखा-देखी अपनो करी। मन मानि गेल, बजलौं-

"काका! मरितो जँ अहाँ आगूमे ठाढ़ रहब तँ कोनो-ने-कोनो धरानी हमहूँ संग-संग ठाढ़ रहबे करब।"

हमर विचार सुनि जेना संतोखी काकाकेँ बाहरी बल भेटल होनि

तहिना सबल होइत सु-बले सुबल बजला- “बौआ जगत, विदेशी शासन केना देशी शासन 1947 ई.मे बनल से बुझैबला अछि। तइ दिनमे बच्चे रही तँए नीक जकाँ नइ बुझलौं। मुदा जखन देशी शासन बनल तखन रौदी मेटबैले कोसी नहरक योजना बनल। कोसी धारक दुनू कात बान्हो बनल, मुदा औझुका तारीखमे केते जन-मानसकेँ लाभ भेट रहल अछि?”

कोसी नहैरिक विषयमे किछु ने बुझल छल, तँए किए कहितिऐन जे जेतेटा योजना छल तइसँ केतेको गुणा बेसी खर्च भऽ चुकल अछि, गामक किसान परिवार टुटि कऽ दुनि याँ दिस पड़ेबो कएल आ पड़ाइयो रहले अछि, पीढ़ी-दर-पीढ़ी बढ़ि रहल अछि मुदा नहैरिक पानिसँ खेत पटत से अखनो सपने बनल अछि। चुपे रहलौं।

चुप देखि संतोखीए काका बजला-

“बौआ जगत, चेकोस्लोवाकियाक सहयोगसँ स्टेट बोरिंग केत्ता गाममे गड़ाएल, मुदा फल की आइ देखि रहल छी, पहिलुके जकाँ रौदी अखनो किए होइए?”

‘स्टेट बोरिंग’ सुनिते मन सुरखुराए लगल। बजा गेल-

“काका, अहाँकेँ नइ बुझल अछि जे तेहेन इंजनसँ ओ बोरिंग पानि देत जे गामक-गाम दहा जाएत, तइ दुआरे ओकर जे नालीक पजेबा छल ओहो उठा कऽ लोक लऽ गेल।”

संतोखी काका बजला-

“बौआ जगत, एकटा नीक उपाय जीबैक अछि, मुदा..?”

‘जीबैक उपाय’ सुनि मन जगि उठल। बजलौं -

“बिना समए गमौने ओ उपाय करब ने नीक हएत।”

संतोखी काका गम्भीर होइत बजला-

“बौआ जगत, अपनो आँखिक देखल अछि आ गामक महाजनीमे

कटबी सुइद चलै छल जइसँ केतेको परिवार बिलैट गेल। तहिना बैंकोक हिसाब ने कटबी सुदिक चलैए। ओकरो सुइद मूड़ बनि सुइद कमाइए।"

ओना, संतोखी कक्काक विचार नीक जकाँ नइ बुझलौं मुदा नहाइबेर भऽ गेल छल तँए बजलौं -

"काका, नहाइ-खाइबेर भऽ गेल। अखन गप-सप्पकेँ अहीठाम तक रहऽ दियौ।"

❑ *शब्द संख्या : 1435, तिथि : 09 जुलाई 2019*

तिलकौआ छत्ता

समय रौदियाह नहि भेल कि लगन वरीस पड़ल। लोको अक्कच्छ हुअ लगल जे एक्केमुहेँ बेटीक विदाइक गीत गाएब आकि बच्चाक मुड़नक सोहर..! लगनोक तँ अपन महत् छइहे। एकसंग उपनैन, मुड़न आ बिआहक लगन दिन-राति चलए लगल। अन्हरा-बैहरासँ लऽ कऽ नेंगरा-लुल्हा धरिक पार-घाट लगिये जाएत। जहिना बिआहक तहिना उपनैन-मुड़नक सेहो लगि गेल। एक-एक दिन सत-सतटा यज्ञ, तँए सत-सतठाम लॉडस्पीकर आ डीजेक धुन गाममे गदमिशान करए लगल।

एक दिस रामायणिक धुन तँ दोसर दिस भगवतीक गीत तँ तेसर दिस भोजपुरीक छमरछैंया गीत सेहो भरि गाममे अनधोल करिते अछि। भाय, यएह सभ यज्ञ ने परिवार आ समाजक धर्मनिष्ट कर्म भेल..!

धर्मनिष्ठ कर्म जेतेक जइ गाममे हएत तेते ओही गामक परिवारमे ने बढ़ि बाढ़ि औत। कनी तीत कि कनी मीठ आकि कनी नूनगर कि कनी कड़ू, सभ दिनसँ जहिना होइत चलि आबि रहल अछि तहिना ने आगुओ चलैत चलत।

अही घनघनौआ लगनमे सुकदेव आ गोपालक बीच बेटा-बेटीक बिआहक सम्बन्ध पक्का भेल। तीनबेर देखो-सुनी दुनू दिससँ भऽ गेल अछि। एक बेर परिवारक मरदा-मरदी दिससँ, दोसर बेर महिला जगत दिससँ आ तेसर बेर लड़का-लड़कीक संगी-साथी दिससँ...। खाएर जे भेल से भेल। अहिना जीता जिनगी होइत आबि रहल अछि, होइत चलैत

रहत। जखन डीजे आकि साउण्ड सर्भिस आकि गाड़ी-सवारी नहि छल तँ बिना साउण्डे-सर्भिसे आ बिना गाड़ीए-सवारीए बिआह की नइ होइ छल? होइते छल। मुदा जखन गाड़ी-सवारीक संग साउण्ड-सर्भिस भेल तँ लोक ओकर उपयोग किए ने करत।

तीन बेर देखा-सुनी भेला पछाइत बिआहक पहिल मोहर दुनू दिससँ लगि गेल जे जेठक दसराहा दिन सुकदेवक बेटा आ गोपालक बेटीक बिआह हएत।

दुनू दिसक बीच देखा-सुनीक पछाइत बिआहक बीच मात्र एकटा काज बाँकी रहल अछि। ओ रहल अछि लेन-देनक पक्का-पक्की करब। ओना, झटहा मारि दुनू-दुनूक पेटक बात बुझैत, मुदा तैयो मुफ्तक माल जेते बेसी हाथ लगए तेते नीक होइते अछि।

लड़काबला ऐ ताकमे जे बिनु कमेलहा हाथमे अनैक अछि आ लड़कीबला ऐ ताकमे जे जेते अजमा कऽ काज अराधलौं तइमे जेते बँचि जाए तेते ने नीक।

दुनू दिससँ सूहकार पाबि लेन-देनक दिन तय भेल। बिआहसँ सात दिन पहिने लेन-देनक दिन बनल।

भोरेसँ जहिना सुकदेव गोपाल ऐठाम जाइक तैयारीमे जुटि गेल तहिना गोपाल सेहो सुकदेवक सुआगतक बेवस्था करैमे जुटले छला। दस बजे दिनक समय बनल छल तँए खेनाइ-पीनाइ सेहो हेबे करत। भिनसुरका समय बनबैक माने कलौ भेबे कएल। आ बेरुका समय बनबैक माने ने जल-जलखै तक मात्र होइत अछि।

जहिना कोनो यात्रा करैकाल लोक घरक गोसाँइकेँ गोड़ लागि आँगनसँ निकलैए तहिना सुकदेव दादीकेँ गोड़ लागि बाजल-

“दादी, रतनपुरक जे गोपाल छैथ, हुनके ऐठाम बेटाक बिआह ठीक भेल तँए गप-सप्प करए जा रहल छी।”

किछु अख्यियास करैत पुरनी दादी बजली-

“बौआ, एक तँ ओ गाम कनाह अछि दोसर जइ परिवारसँ सम्बन्ध करए जाइ छह, ओ परिवार केते दिनसँ अपन परिवारक संग सम्बन्ध जोड़ए चाहै छल जे अखन तक नइ भेल। मुदा आइ जँ तूँ ओइठाम जाइ छह तँ आगूक रस्ता देखैत सभ किछु करिहऽ।”

गोपाल ऐठाम सेहो उत्सवक माहौल बनले अछि, किए तँ जे परिवार हीन बुझि सम्बन्ध नहि जोड़ए चाहै छल ओ जँ सम्बन्ध बनबए चाहि रहल अछि तखन किए ने उत्सवी माहौल रहत। गोपालक माए मने-मन खुशी जे खनदानक सेखी बढ़ि रहल अछि। तँए जसुमति अपन बेटाक बिआहक काज-बेवस्थामे सहयोग करैत गोपालकेँ कहली-

“बौआ! नीक खनदानकेँ कोनो नाँगैर नइ होइ छै, होइ छै ओकर अचार-विचार-बेवहार। काज केहनो–छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ–किए ने हुअए मुदा जँ ओकर संचालन अपन कार्यप्रणाली–काज करैक तरीका–सँ हुअए तँ ओ नीक होइते अछि। जइ परिवारक क्रियाकलाप जखने सफल रूपमे चलए लगत, ओइ परिवारकेँ सुफल तखनहिसँ भेटौ लगत। जखने परिवारमे सुफल हुअ लगत तखने ओ परिवारवान–गृहवान–सफल भेबे केला, यएह सफलता समाजक बेवहारिक रूपकेँ दृढ़सँ सुदृढ़ बनबैए।”

ओना, माइयक बात गोपाल नीक जकाँ नइ बुझि पेलक, मुदा अखन यज्ञ–काज-बेवस्था–केँ पाछू छोड़ि गप-सप्पमे समय लगाएबकेँ नीक नहि बुझि अपनाकेँ आजुक बेवस्थाक पाछू समय खटियाएब नीक बुझि गोपाल बाजल-

“माए, सभटा भगवानक हाथ-बाट छैन, जेहेन हुनकर विचार हेतैन से हेबे करत। अपन जे काज अछि से करै छी।”

गोपाल बेसी गप-सप्पमे समय ऐ दुआरे नइ लगबए चाहि रहल छल जे अखन हमरा ओतबे गप-सप्प आकि राय-विचारक खगता अछि

जेते जरूरत अछि, माने काज भरि। आजुक जे काज अछि वएह आजुक परीक्षाक समय छी। जेहेन आइक काज रहत तहिक आगू काल्हिक उदय हएत। कौल्हुके उदैयक पछाइत ने कौल्हुका काज काल्हि औत...।

ओना, जसुमति मने-मन बुझि गेल छेली जे गोपालकेँ अखन आजुक काज-बेवस्थाक धुनि सिरपर सवार भऽ गेल छै, तँए दोसर धुनि दिस मन बहैटिये ने रहल छइ। मुदा जखन परिवारक काज छी आ परिवारक सभकियो नइ बुझैथ सेहो नीक बात नहियेँ भेल। जाधैर परिवारक सभजन क्रियाशील नै भेल रहल ताबैये धरि काजक भार एक-एककेँ सुमझाबए पड़ै छै, मुदा जखने परिवारजन एक परिवार बुझि अपन काजक जिम्मा उठा स्वतंत्र ढंगसँ अपन-अपन काज करए लगैत अछि तखने सभ कार्यशक्ति अपने-आप परिवारमे लगिते अछि...। जसुमति गोपालकेँ कहली-

"बौआ, जहिना मस्तीसँ मस्त भऽ बेवस्थामे लागल छह तहिना लागल रहऽ, भगवान केकरो अधला केलखिन हेन जे तोहर कोनो अधला हेतह।"

माइक विचारकेँ गोपाल असिरवाद स्वरूप बुझि बाजल किछु ने मुदा हँसैत अपना काजमे लगि गेल।

जहिना भोरहरसँ भोर होइए, भोरसँ भिनसर होइए, भिनसरसँ दुपहर होइए, दुपहरसँ साँझ होइत दिनक लीलाक विसरजन होइए, तहिना काजोक अछि। जहिना काजक विचार, विचारक पछाइत संकल्प, संकल्पक पछाइत विकल्पकेँ खोजैत लोक आगूक डेग बढ़बैत चलैए तहिना गोपाल अपन बेटीक बिआहक समापन लेल वैदिक रीति[6] अपनबैत आगू बढ़ि रहल छल।

दस बजि गेल। सभ काजकेँ करैत-समटैत गोपाल उनटा गिनती सेहो कए लेलक। सभ काज नीके-नीक बुझि पड़लै। तैबीच एका-एकी गोपालक दियादोवाद सभ आ समाजक जे मुँहगर-कन्हगर, जिनका

गोपाल गप-सप्पमे सरीक होइले कहने छेलैन, सेहो सभ आबि-आबि एकत्रित हुअ लगला।

काजक रूप-रंग देखि गोपालक मनमे छेलैहे जे सभ काज अपन-अपन हिसाबे सेरिआइये गेल अछि। तँए गोपालक मनमे कनियोँ खॉंच-खरोंच नहियेँ छेलै, मुदा तैयो कनी-मनी शंकाक सिर गोपालक मनमे जगल रहबे करइ। किए तँ गाम-समाजमे एहेन अनेको बेर भऽ चुकल अछि जे केतौ तिलकक समय, तँ केतौ गप-सप्पक समय, तँ केतौ बिआहक समय काजमे बेवधान भेने काज बाधित भइये जाइए।

सबा दस बजेक लगभगमे सुकदेव चारि गोरेक संग चरिपहिया गाड़ीसँ गोपालक दरबज्जापर पहुँचल। चारि गोरेमे सुकदेव अपने, सुकदेवक सार, सुकदेवक पितियौत भाए आ लड़काका एकटा संगी सेहो छल। ओना, दुनू पक्षकेँ चारू गोरेक जानकारी छेलैहे, तँए कोनो तरहक कटाह गप-सप्पक अवसरे ने रहल।

दिनक भिनसुरका समय कहियौ कि छबो रीतुक (ऋृतुक) वसन्त कहियौ आकि मासक चैत कहियौ- एनमेन तेहने वातावरण काजक बनि चुकल छल। अपन दरबज्जापर बरतूहार सभकेँ पहुँचैसँ पहिनहि गोपाल दू जोड़ खराम, दूटा लोटा आ बाल्टीमे पानि भरि पएर धोइले रखनहि छल।

दरबज्जापर गाड़ीकेँ पहुँचते घरवारी आग्रह करैत बरतुहारकेँ कियो पएर धोइले तँ कियो रस्तामे कोनो तरहक बाधा-रुकाबटक तँ ने भेल, तँ कियो हँसी-चौलक जिज्ञासा करए लगला।

पएर धोइक आग्रह होइते सुकदेव दुनू सारे-बहनोइ तँ पएर धोलक मुदा सुकदेवक पितियौत भाए आ लड़काक जे संगी छला ओ पएर ई कहि नइ धोलैन जे आब की लोक माटिक गरदाबला रस्तापर खुलल पएरे चलैए, आब तँ जूता-मौजाक पएर, गिट्टी-सिमटीक सड़क आ हवादार

गाड़ीमे चलैए तखन पएर धोबक खगते की।

समाजसँ लऽ कऽ बरागत[7] धरिसँ दरबज्जा सजल। दरबज्जा सजिते एक्के बेर पतियानी लगौने चारि-पाँच गोरे, आगू-आगू पानि, पाछू-पाछू चाह-बिस्कुट आ तइ पाछू पान-सुपारी-सिगरेट-सलाइक डाली नेने बढ़ल।

चाह-पान चलल। गप-सप्प शुरू होइसँ पहिनहि गोपाल, सोना आ नगदक बैग नेने आबि चुपचाप सुकदेवक हाथमे दए देलक। सुकदेवो बैगकेँ बिना किछु बजने रखि लेलक।

सभ देखिते रहि गेल, जहिना जेरगर मुसहरकेँ रहितो बीचसँ मूस पड़ा जाइए तहिना अनेको लोक–आन गामसँ लऽ कऽ समाजोक लोक–रहैत कियो ने बुझि पेला जे बैगमे बाघ-सिंह अछि आकि साँप-छुछुनैर...।

भाय! धीरजोक तँ अपन मन अछि किने। किए ने मन विचार देत जे बेटा-बेटीक बिआह गोपाल आ सुदेवक बीच अछि तखन तेहाला अनेरे बकरी जकाँ मेमियाएत कथी-ले? खाएर जे होइए से नीके होइए। एक्के चीज ने केकरो मीठ लगैए तँ केकरो मीठ-सँ-जहर सेहो लगिते अछि। वा एना कहियौ जे जहर-मीठ सेहो लगैए। भाय! बीध केतौ बुढ़ भेलैए, बिना छान-बान सभ खोलने लड़काबला अन्न-ग्रहण केना करता...।

तिलकक विचार शुरू भेल। आह्लादित होइत गोपाल बाजल-

"जहिना सभ दिनसँ लड़काकेँ पैरक जूत्तासँ लऽ कऽ माथक छत्ता माने माथपरक छत्ता तकसँ सुशोभित करैत फूल-पान-मखानक डाली सेहो सजौल जाइए, सएह करब ने नीक हएत। तहूमे लड़कीक नानीए छह मास पहिने सभ किछु पठा देने छेलखिन, जे आब मरिये रहल छी तँए, पूर्ण तैयारी हमर रहल।"

चीज-वस्तुक नाओं सुनि सुकदेव ओहिना भड़ैक गेल जेना जमीन्दारक बेटा बजारक बास बनौने कोठीमे बखाड़ी बनबैसँ भड़कै छैथ। जे बात गोपालो आ गोपालक गौंओ सभ बुझि गेला।

सुकदेवकँ भड़कल देखि एकटा गौंआँ बजला- "कुटुम लोकैन! जखन सम्बन्ध स्थापित करए एलौं अछि तखन एना भड़कलौं किए ! अहाँक की विचार अछि से बतियाइत-चित्ते ने शान्तिसँ विचार करब?"

'बतियाइत चित्त' सुनि सुकदेव बेछोह दौड़ैत लोक जकाँ बाजल-

"सभ कथूक नगदे-नारायण दऽ दिअ।"

बंगलोरमे सुकदेव नोकरी करैए, ओहीठाम सभ परिवार रहबो करैए। खानदानक नाओंपर गोपाल कुटुमैतीक पक्षमे आएल , मुदा गाम आ बजारक पक्ष नइ बुझने कुटुमैती होइमे किछु-ने-किछु विचारभेद भइये जाइए। खाएर.., तैबीच गोपालक छोट भाए श्याम बाजल-

"जखन तिलकमे सभ कथूक दामे लेब तखन तिलकक मरजादा की रहल? आ जँ सभ किछु नगदे-नारायणक हाथे चलत तँ अनेरे तिलकक बीधक खगते की रहल..!"

'तखन खगते कथी' बजिते श्यामकेँ एकाएक मोन पड़लै- लड़कीक नानीए तिलकक सभ वस्तु–बरतन-बासन, कपड़ा-लत्ताक संग जूता-छत्ता–पठा देने छैथ। ओ वस्तु घरेमे रखि लेब सेहो केहेन हएत?"

तैबीच सुकदेवक पितियौत भाय–मुनेसर बाजल- "से तँ अहाँ ठीके कहै छिऐ जे सभ बीधक अपन-अपन गुण-धर्म अछिए। मुदा..!"

गपकेँ बिच्चेसँ लोकैत गोपालक एकटा गौंआँ- जीवानन, बाजल-

"गुणे-धर्मे ने गुणनफल सेहो होइते अछि।"

विचारमे माने गप-सप्पमे, तल-बिचल होइत देखि गोपाल काज-विचारकेँ समटैत बाजल- "गप-सप्प केतौ पड़ाएल जाइए, पहिने जलपान हुअ दियौ पछाइत जे किछु बाँकी रहत से फरिछा लेब।"

जलपान तँ शुरू भेल, मुदा जहिना सुकदेवक मनमे नचैत जे अनेरे छत्ता लऽ कऽ की करब। बंगलोरमे रहै छी, ओइठाम गाम जकाँ थोड़े अछि, ओतए तँ पक्का मकानमे रहै छी, बरखा होइकाल बरसाती पहीर सड़कपर निकैल भाड़ाक गाड़ीमे बैस करखाना पहुँचै छी, अनेरे छत्ताक कोन काज? कहुना-कहुना तँ अढ़ाइ-तीन साए छत्ताक दामो हेबे करत..! ऐसँ नीक...।

ओना, सुकदेवक मनमे ईहो उठि रहल छल जे तिलकौआ जे कपड़े-लत्ता हएत–माने धोती-कुरता-चद्दैर इत्यादि वा बरतने जे फुलही-थारी-लोटा आ पितरिया अढ़िया-तमघैल हएत, तेकरो कोन उपयोग आजुक परिवेशमे अछि? आब तँ लोक तेते सुकुमार भऽ गेल अछि जे के तीन किलोक लोटामे पानि पीअत आ पाँच किलोक थारीमे खाएत वा किलो भरिक गिलासे लऽ कऽ की करत..?

विचारक दौड़मे सुकदेव तेना ओझरा गेल जे खाएबे बिसैर गेल। हाथक आगूमे जे विन्यास रहै से मुँहमे लिअए, बाँकी बगलबला वौस ओहिना थारीमे पड़ल रहइ...।

सुकदेवक खेनाइ देखि गोपाल बाजल-

"समैध, सभ काजक अपन-अपन समय होइए, अखन जलपानक थारीपर बैसल छी। कोन वौस केहेन बनल अछि से कहू। जे नीक हएत से बाजब तखने ने परसनो परसब नीक।"

ओना, गोपालक मन भीतरे-भीतर खुशी होइते छल किएक तँ बेटी बिआहक पूर्ण बिसवास जागि चुकल छेलइ। किएक तँ वेना[8] पकड़ने जखन पक्का-पक्की होइए से तँ पकैड़िये लेलैन।

अपन विचारक वनमे बिचड़ैत सुकदेवक मुहसँ निकलल-

"समैध, जखन दुनू परिवारक बीच सम्बन्धक सभ किछु भऽ गेल तखन सम्बन्धकेँ स्थापित करैमे कोनो तरहक मलिनता बीचमे उपस्थित

नइ हुअए, सएह ने नीक हएत।”

‘सएह ने नीक हएत’ बाजि हारल नटुआ जकाँ सुकदेव अराड़िक दराड़िमे फँसि समझौताक पक्ष दिस बढ़ल।

एम्हर सोल्होअना जीतल जकाँ गोपालक मनक मथनी रसे-रसे चलिये रहल छल। मन मानि चुकल छेलै जे खानदानक बीचक दूरी आइ मेट रहल अछि, माने नव इतिहास परिवारक बनि रहल अछि। मने-मन गोपाल निर्णय केलक जे सुकदेवकेँ प्रबोधि कऽ राखब जरूरी अछिए।

जलपानसँ पहिने छत्ताक बात उठि चुकल छल, जइमे किछु मनभेद दुनू पक्षक बीच भइये गेल छेलै, जेकरा समटैत गोपाल बाजल-

“समैध, ‘गाए-गौरुक मिलान तँ ठेहुनो पानि दुहान!’ हम अहाँकेँ सभ किछु दऽ देब, भलेँ अहाँ ओ अहीठाम माने रतनपुरेमे छोड़ि दिऐ, ऐ लेल कोनो बात नहि। हमरा तँ ओकर खगता अछिए। जँ बेटीक बिआहमे बरकेँ छत्ता नइ हुअए, उपनैनमे बड़ुआकेँ मेघडम्बर नइ होइ से केहेन हएत। भलेँ ओ फेकाइये किए ने जाए..! मुदा बीध तँ बीध छी, बीध थोड़े बुढ़ हएत।”

अपना जनैत गोपाल सुकदेवकेँ प्रवोधि लेलक मुदा तैयो सुकदेवक मन नगदे-नारायणक मन्दिरमे बैसल टक-टक टका दिस देखि रहल छल।

❑ *शब्द संख्या : 1948, तिथि : 13 जुलाई 2019*

अपने जिनगी भार बनि गेल

पान-सात दिनसँ गाममे जहाँ-तहाँ फुसराहैटियो आ गलो-गुल चलि रहल छल मुदा किछु भाँज बुझि नहि पेब रहल छेलौं जे कथीक फुसराहैट चलि रहल अछि। स्त्रीगणक बीच सेहो आ पुरुखक बीच सेहो।

ओना, अपन मन चिन्तित जरूर होइत रहए जे गामक सभ कियो रुइआ जकाँ जइ बातकेँ धुनि रहल अछि, गाममे रहितो अपने किछु ने बुझि पेब रहल छी। नजैर उठा गाम दिस देखी तँ केतौ ने मरन-जरन आकि कोनो ठनके-पाथर खसल देखिऐ। से जँ रहैत तँ केकरोसँ पुछैक बाट ने खुजल रहैत, से तँ देखिऐ नहि। रस्ते-रस्ते चली आ भोगीलालक नाम बेर-बेर सुनिऐ। केकरो केना पुछितिऐ जे तूँ सभ कोन गप-सप्प करै छह, हमरो कहऽ।

ओना, भौजाइ-पितिआइन सभकेँ सेहो देखिऐन फुसराहैट करैत मुदा हुनकोसँ किछु पुछैक साहस नहियेँ हुअए, किए तँ अपने मन कहए जे स्त्रीगणक बीच चलैन अछिए जे बिनु बजौल कोहबर गेलौं तँ कनियाँ - माए पुछली- 'केतए एलौं?' हम पुछबैन जे 'की बात छी, अहाँ सभ कथीक विचार-विमर्शमे लागल छी?' तँ ओ सभ कहबे करती जे 'अहाँकेँ तइसँ कोन मतलब!'

अन्तो-अन्त किनकोसँ ने किछु पुछैक साहस भेल आ ने अपने साहस कऽ किनकोसँ किछु पुछलयैन।

मनक धन आगू घुसकल, घुसैकते फुरफुरा कऽ फुरल। फुरल ई जे

जहिना अकासमे जे चिड़ै उड़ैए ओ सभ असगरे-असगरे उड़ैए, कहाँ केकरो अकासमे घरो-परिवार छै आकि संगीए-साथी, तहिना किए ने गाममे घुमि उड़ैत चिड़ै सबहक विचारकेँ पकड़ी। भेल तँ भोगीलालक भाँज लगिये गेल अछि जँ एको-आधोटा शब्द आरो सुनि पड़त तँ अनेरे ने छलगोरिया–मूर्तिकार–जकाँ एक-एक खढ़-पातकेँ समेट-बान्हि मुरती गढ़ि लेब।

ओना, 'भोगीलाल' सुनि मनमे ईहो आबिये गेल छल जे अही महिनामे भोगीलाल भाय बैंकक नोकरीसँ सेवा-निवृत्त हेता। ई तँ सामान्य बात भेल। जहिना जे धरतीपर आएल तहिना से जेबो करत, तहिना ने सरकारी नोकरी हुअए कि प्राइवेट, तेकरो गति तहिना अछि। नोकरीक शुरूआत बहाली हएत, किछु साल काज करत पछाइत रिटायर हएत।

संजोग बनल, भोगीलाल भाय आठ बजे रातिमे घामे-पसीने तर-बत्तर भेल गाम अबैत रहैथ कि रस्तेपर देखलयैन। देखिते चिन्ह गेलिऐन।

घरक आगूक रस्ता धेने भोगीलाल खलिये देहे, माने हाथमे बैगो नै रहैन खलिये जाइ छैथ, तखन एतबो आग्रह नइ करितिऐन जे 'भाय चाह पीब लिअ पछाइत जाएब। जखन घरेपर जाइ छी, तखन अबेरे कोन भेल अछि।' तहूमे चारि मास पहिने जे भोगीलाल भायसँ भेँट भेल छल तखन अपने मुहेँ बाजल रहैथ जे मार्चमे सेवा निवृत्त हएब।

ओना, मनमे ईहो रहए जे गाममे जे पान-सात दिनसँ फुसराहैट भऽ रहल अछि सेहो भाँजपर चढ़ि जाएत। बजलौं -

"भाय साहैब, आब सेवा-निवृत्त भेलौं आबो चैनसँ रहब से नहि ?"

विपरीत दिशासँ अबैत कोनो पाथरक टुकड़ा माथमे लगिते जहिना सौंसे देहकेँ झनका दइए तहिना भोगीलाल भाइक मन झनैक उठलैन ...।

मुदा मुहसँ जहिना निकलल जे 'चैनसँ रहब से नहि', तहिना

भोगीलाल भाइक मन बेचैन भऽ उठलैन। ओहोमे दरबज्जाक रस्ता दिस बढ़ला, दुनू गोरे दरबज्जापर पहुँचलौं। दरबज्जाक ओसारक चौकीपर भोगीलाल भायकेँ बैसा अपने आँगन जा पत्नीकेँ चाह बनबए कहलयैन।

ओना, अनका जकाँ अपन धिया-पुता बोल-कहल नहियेँ अछि, मुदा तखन ओ सभ एकोटा दरबज्जापर नइ छल तँए अपने आँगन जा बजलौं।

लालटेनक इजोतमे चेहराक जे रंग-रूप भोगी भाइक देखलौं तइसँ अनेको विचार मनमे उठि चुकल छल।

अपनाकेँ एकाग्र केने चाहक भाँजमे पड़ल छेलौं। कहब जे ऐमे एकाग्र हेबाक की प्रयोजन? ..एकाग्र सिर्फ विचारेक दौड़ टा मे हएब टा नहि अछि। काजोक दौड़मे अछि। काजक दौड़मे एना अछि जे काजक जे करैक प्रक्रिया अछि, माने कोन अंग (काजक अंग) पहिने हएत, कोन पछाइत, तइमे एकाग्र हएब। ई नहि ने जे शुरूक काज पछाइत करब आ पछातिक काज पहिने करब। जखने से हएत तखने काजक रूपे उनैट-पुनैट जाएत, जइसँ काज हेबाक सम्भावने समाप्त भऽ जाएत।

चाह बनिते पत्नी आँगनसँ दूटा गिलासमे नेने दरबज्जापर पहुँचली। पत्नीक हाथमे चाह देखिते अपने आगू बढ़ि दुनू गिलास चाह पत्नीक हाथसँ लैत आगू बढ़ि भोगीलाल भाइक हाथमे देलिऐन।

एक-एके घोंट चाह पीने छेलौं कि भोगीलाल भाय बजला -

"बौआ खुशीलाल, अपने जिनगी भार बनि गेल।"

अखन तक कुशल-समाचार ऐ दुआरे नइ शुरू केने छेलौं जे भोगीलाल भाइक चेहरासँ किछु विशेष परेशानी देखि पड़ल छल।

भोगीलाल भाइक मुँहक बात 'अपने जिनगी भार बनि गेल', सुनि एकाएक बिजलोका जकाँ मन तड़तड़ा उठल जे एना किए भोगीलाल भाय बजला?

मनक संग विचारो पाछू मुहेँ उनटल- भोगीलाल भाय पाँच बर्ख जेठ छैथ। गौंआँ रहने एक्के स्कूलसँ दुनू गोरेक शिक्षा–पढ़ाइ–शुरू भेल। मुदा तइमे कनी दूरी बनल रहल। दूरी ई बनल रहल जे जखन ओ–भोगीलाल भाय–लोअर प्राइमरी स्कूलमे प्रवेश लेलैन, तखन हमर जन्म भेल। आ जखन ओ दू साल भट्ठा रगैड़ तीसरा –लोअर प्राइमरी–पास केलैन तखन अपने ओइ स्कूलमे प्रवेश केलौं। जखन लोअर प्राइमरी स्कूल टपलौं तखन ओ मिडिल सकूल टपि –माने चारि साल, चौथासँ सातमा धरि–हाइ स्कूलमे प्रवेश लेलैन आ अपने मिडिल स्कूलमे...। तहिना जखन अपने मिडिल स्कूल टपलौं तखन ओ हाइ स्कूल टपि गेला , आ ओहिना बी.ए. तक कौलेजोमे भेल।

बी.ए. केलाक पछाइत किछुए मास बाद, भोगीलाल भायकेँ स्टेट बैंकमे नोकरी भऽ गेलैन। अपने ताबे कौलेजक शुरूआतीए दौड़मे रही, माने आइ.ए.मे।

ओना, गौंआँ रहने जखन दुनू गोरे एकठाम होइ आ गप -सप्प हुअए तखन स्पष्ट बुझि पड़ए जे गप-सप्प करैक लहजा माने गप-सप्पसँ आकर्षित करैक गुण जे भोगी भायमे छैन ओ अपनामे नइ अछि, तँए अनुकरण करी। ओना, अखन तकक जे परीक्षाक–वर्ग सबहक–परिणाम रहल ओ भोगी भायसँ नीक रहल, मुदा बजैक जे गुण हुनकामे आबि गेल छैन ओ अपनामे आबिये ने रहल अछि।

बी.ए.मे जखन भोगीलाल भाय पढ़िते रहैथ तखने बिआह सेहो भऽ गेलैन। मनमे एहेन विचारे किए उठितैन जे पढ़ाइ समाप्त केलाक पछाइत बिआह करब। जखन समाजमे जन्मक तीन बर्खक पछाइतसँ एगारह बर्खक अवस्था धरि कन्या बिआहक चलैन चलि रहल अछि तखन बीस बर्खक बर ले–माने पढ़ाइ समाप्त केलाक पछातिक लड़का-ले–कन्या कान्ही मिला कऽ बैसल रहती सेहो बात नहियेँ अछि।

ओना, रग-रगमे जन-जनकेँ एहेन विचार मनमे नहियेँ छल, जे

अखन–माने स्वतंत्र परिवेशमे–पुरजोर भऽ गेल अछि, जे नोकरीए करैले पढ़ै छी, तँए नोकरीक हिसाबसँ सभ किछु करैक अछि। ओना, नोकरीक खियालसँ आकि बिऔहती कन्याक खियालसँ किछु परिवार समाजमे अछिए जे उमेर घटा कऽ, माने आयु कम करि कऽ स्कूलमे प्रवेश करैए।

नोकरी शुरू होइसँ पहिनहि भोगीलालकेँ एकटा सन्तानो–बेटा–भऽ गेल छेलैन। पाँच साल नोकरी पु रैत-पुरैत पत्नी मरि गेलैन। ओना, पत्नीक मरब, बाल-बच्चाक खियालसँ, बिजलोका संग ठनका जकाँ भोगीलाल भाइक जीवनमे खसलैन, मुदा तेकरा ओ निमरजना करैत पत्नीक माएकेँ, माने अपन सासुकेँ, तेल-कुरक नाओंपर महिनवारी नीक रकम दिअ लगलखिन। बैंकक नोकरी, जैठाम पाइये झहरैए, तैठाम तँ बीछनिहार चाही। जे जेहेन बीछनिहार से तेते बिहाड़िक आम जकाँ गाछीसँ उठा अनैए। नान्हिटा चुट्टी सन जीव, जे अण्डासँ जन्म लइए, माइयो-बापक ठेकान नइ रहै छै, सेहो जखन आन-आन चुट्टीक देखौंस करैत बिल (रहैक घर) खुनैक लूरि सीखि लइए तखन तँ मनुख मनुख छी। माया-कायाक बीचक सीमापर बैस दुनियाँकेँ देखनिहार।

भोगीलाल भाय अर्थक उतपैत करैक नीक-नीक फन्ना सभ सीख नेने छला। जइसँ बरखा जकाँ पाइ झहैड़िये रहल छेलैन। पहिल पक्षक माने पहिल पत्नीसँ भेल दुनू सन्तान माने एक बेटा , एक बेटीकेँ नीक वातावरणमे–नीक वातावरण भेल अपना बुझने नीक–पालन-पोषण केलैन। जहिना बेटाकेँ नीक शिक्षा दिया, रुपैआ-बले नीक नोकरी सेहो धड़ा देलैन, तहिना बेटीकेँ काज चलाउ शिक्षा दिया, नीक घर[9]मे बिआह सेहो कऽ लेलैन।

पहिल पत्नी मुइलाक साले भरिक पछाइत भोगीलाल भाय दोसर बिआह ठीक कऽ लेलैन। बैंकेक स्टाफक बेटीक संग बिआह केलैन। ओना, दोसर बिआह केलाक किछु दिनक पछाइत, सासुसँ विचारक दूरी बनब शुरू भेलैन जे दिनो-दिन बढ़िते गेलैन। मुदा जहिना एक दिस

सासुकेँ दुनू नाति-नातिनकेँ जिनगीमे ठाढ़ करैक भार माथपर छेलैन तहिना दोसर दिस भोगीलाल भायकेँ सेहो बैंकक काजमे बढ़ोतरी भेने, दुनूक बीच–माने सासु-जमाए बीच–गप-सप्पक क्रम समटा महिने-महीना रुपैआ (खर्च) देब जारी रखलैन। तैबीच भोगीलाल भायकेँ सेहो दोसर पक्षमे माने दोसर पत्नीसँ दूटा बेटा आ तीनटा बेटी सेहो भेलैन। बैंकक नोकरीक आमदनी, तँए भोगीलाल भायकेँ आर्थिक परेशानी परिवारमे कहियो ने बुझि पड़लैन। कहलो गेल छै जे 'आतुर काज दरबसँ होई..!'

चाह-पान होइत-होइत भोगीलाल भाइक मन जेना विचार क्षेत्रमे खसलैन, जइसँ गप-सप्पक बदलल क्रम शुरू भेल।

भोगीलाल भाय बजला-

"खुशीलाल, पहाड़ोसँ विकराल जकाँ जिनगी बनने आब भार बनि गेल अछि।"

ओना, मनमे ईहो उठल जे साधारण जिनगीक भार पहाड़ जकाँ किए हएत..! भेल तँ साढ़े तीन हाथक देह अछि तइमे बीत भरिक पेट भेल, से पहाड़ जकाँ किए हएत? सभकेँ कि सीमेन्टेक कारखाना बैसबैक छै जे पहाड़क जिनगी अपन बनौत, मुदा से सभ नइ बाजि, एतबे बजलौं-

"से की भाय साहैब?"

दर्दसँ आक्रान्त वा पीड़ा उठल कियो बेकती जहिना दर्दसँ छटपटा जोर-जोरसँ चिचिआ-चिचिआ दोसरकेँ कहैए तहिना भोगीलाल भाय बजला-

"बौआ खुशीलाल! तूँ गौंए टा नहि, एक-उमेरिया सेहो आ बच्चेसँ सभ दिन एकठाम बैस परिवारसँ समाज धरिक गप-सप्प करैत रहैबला लोक छह, माने सभ दिन गप-सप्प करैत एलौं अछि।"

बिच्चेमे बजा गेल- "एकरा के नकारत?"

सह पबिते भोगीलाल भाय बजला-

“बौआ, जिनगीक दौड़मे फन्नामे फन्ना लगल अछि से नइ बुझि पेलौं..! एना अपनो फन्नेमे सँ पोना निकालि-निकालि नीक उपारजनो केलौं आ नीक जिनगीक सुखो भोगलौं , मुदा..!”

भोगीलाल भाइक जिनगीक पह कनी-मनी फटब शुरूहे भेल कि बिच्चेमे दोहरबैत बजला-

“सेवा निवृत्तिसँ सात दिन पहिने ससपेंड कए काजसँ हटा देल गेलौं! आ तइ बीचमे–माने सेवा निवृत्तिक तिथिक बीचमे–बैंक पाँच दिन बन्ने अछि जइसँ काजक प्रक्रियामे ढिलाइ सेहो भइये गेल अछि। एक दिस ससपेंडक चिट्ठी हाथमे पहुँचल दोसर दिस ऑडिटमे कोन-ने-कोन फन्ना लगि गेल जइसँ लाखोक केस ऊपरमे चढ़ि गेल अछि..!

‘लाखोक केस’ सुनि मन चौंक गेल जे ई भरिसक पुलिसक डरसँ भोगीलाल भाय राता-राती गाम एला अछि। अपनो मनमे शंका हुअ लगल जे जँ कहीं अखन पुलिसक आगमन भऽ गेल तँ भरि रातुक आरामसँ सुतब हराम भऽ जाएत। बजलौं -

“भाय साहैब, खाइ-पीबैक राति सेहो भऽ गेल आ जखन आब सेवा-निवृत्त भऽ गाम आबि गेलौं तखन सदिकाल एकठाम बैसारो हएत आ गपो-सप्प हेबे करत। तँए अखन जाउ।”

भोगीलाल भाय उठि कऽ चलि देलैन।

❑ *शब्द संख्या : 1539, तिथि : 16 जुलाई 2019*

कलेश

आइ गुरु पूर्णिमा छी। सात दिनसँ जे बाढ़िक रूप-रंग इलाकामे बनल अछि तइसँ सभ मर्माहत छथिए, मुदा अपन-अपन सबहक जिनगी रहने, माने भेल अपन-अपन कारोबारपर ठाढ़ जिनगी रहने–सबहक मनमे सभ रंगक क्लेशो आ सभ रंगक रस्ता सेहो अछिए।

विवेकपुर गामक सुमैतलाल कक्काक मनमे एक्के रंगक कलेश नहि छैन, रंग-बिरंगक कलेश छैन। जेना, खेती मरि गेल, घर-अँगनामे बाढ़िक पानि एने अनेको वस्तु-जात भँसियो गेल आ सड़ियो रहल अछि, तैसंग गाम-टोल आ परिवारोमे दिन-राति एक-दोसरक बीच उकटा-पैंची आ कहा-कही भेने मन आरो बेथित भइये गेल छैन।

जहिना सौंसे गामक लोकक जिनगी बनि गेल अछि त हिना अपनो जिनगी बनियेँ गेल अछि जे घरमे राखल अन्न खेलौं , माल-जालकेँ गहुमक भूसी वा नारक कुट्टी खाइले देलिऐ आ भरि दिन एकटा अढ़ाइ-हत्थी लाठी नेने टोले-टोल वौआ-वौआ लोकक हालो-चाल बुझलौं आ घर-आँगन, खेत-पथारक दशो-दिशा देखिये रहल छी।

उत्तरबारि टोल होइत जखने पछबारि टोल दिस विदा भेलौं कि मनमे आबि गेल जे सुमैतलाल कक्काक घर कातमे मुहेँपर छैन, तँए ओम्हरेसँ टोलमे पैसब। जँ दरबज्जापर सुमैतलाल काका हेता तँ थोड़ेकाल बैस गपो-सप्प करब आ चाहो पीब।

सुमैतलाल काका मोन पड़िते हृदय जेना दहलए लगल। अपने

बुझि नहि पेब रहल छेलौं जे मन कि ए दहैल रहल अछि। करवनो हुअए जे बाढ़िक पानिमे जे भोरसँ घुमलौं हेन तँए जाड़सँ मन दहैल रहल अछि।

मुदा लगले भेल जहिना दिलसँ दिल लगि दिलेर बनैए तहिना ने दिल सेहो दिलमे लगि दिल्लगी करैए..!

बाढ़िक पानिसँ गामक संग आनो-आन गामकेँ झलकैत देखिऐ तँ हुअए जे अनेरे पूब-पच्छिम आकि उत्तर-दच्छिन तकै छी, अखन कोन काजक मुहूर्त्त जिनगीक लेल अछि मात्र एतबे बुझैक अछि।

मने-मन सोचिते विचारिते जाइत रही कि सुमैतलाल कक्काक घर लग पहुँच गेलौं।

सुमैतलाल काका खरिहाँनकेँ–घरक आगूक जगहकेँ–तीनू दिससँ अड़िया, लागल पानिकेँ टीनसँ उपैछ रहल छैथ।

सुमैतलाल काकाकेँ खरिहाँनक पानि उपछैत देखि अपना मनमे ग्लानि हुअ लगल। हमहीं कोन गामक बड़का हाकीम छी, कोनो कि हमरे केने गाम चलैए जे भिनसरसँ इनक्काइरी केने घुमै छी। आकि अपना खरिहाँनमे अहिना पानि नै लागल अछि। किए ने सुमैतेलाल काका जकाँ अपनो अपन खरिहाँनकेँ उपैछ सुखबै छी..?

सुमैतलाल काकापर नजैर पहुँच गेल छल तँए अपनापर नजैर जेना अँटकक चाही से नइ अँटकल। रस्तेपर सँ बजलौं -

"काका, गोड़ लगै छी।"

ओना, मनमे ईहो रहए जे अही पाछू ईहो कहिऐन जे 'काका, आब ते अपनो सभकेँ गामसँ पड़ाइन लागत!' मुदा अपने मन रोकलक। रोकलक ई जे सुमैतलाल काका सभ तरहेँ हमरासँ श्रेष्ठ छैथ, घटना घटल अछि माने बाढ़ि आएल अछि, तहूमे ऐ बेरक बाढ़ि सेहो अपन नक्शा-खतिआन सर्वे करा कऽ बदैल लेलक अछि, माने ई जे बान्ह सड़क भेने, किछु गाम बाढ़िक चपेटमे आबि गेल आ किछु बाढ़िक चपेटबला गामक

उद्धार सेहो भऽ गेल। माने बाढ़ि आएब बन्न भऽ गेल..! खाएर.., जखन सभ तरहेँ श्रेष्ठ सुमैतलाल काका छैथ तखन किए ने गोड़ लगैक असिरवादी तरे अपन अनुभव बजता, नइ जँ हमर विचारक खगता मनमे बुझि पडतैन तँ असिरवादमे किए ने किछु पुछता। जखन सबहक बीच पुछा-पुछी हएत तखने ने बक्कर-बकरी जकाँ पूछ पनपत आ बढ़ैत-बढ़ैत वएह पूछ पुछाड़ि करैत नाँगैर लग पहुँच नङ्गरियो बनत।

जहिना सुमैतलाल काका अपने विचारवान तहिना पत्नी सेहो विचारवाहिनी छैन्हे। सुमैतलाल कक्काक आगूमे ठाढ़ देखि सुमित्रा काकी, जे छीपली नेने पानि उपछै छेली, माने सुमैतलाल कक्काक संग खरिहाँनक पानि उपछै छेली, ओ चोटे आँगन दिस घुमि चाह बनबए विदा भेली। जेना ओ जानि चुकल छेली जे एहेन-एहेन समैमे, माने बाढ़िक विभीषिका सन समयमे लोकक जिनगी बेठेकान भऽ जाइए जइसँ भूख-पियास पचेबो करैए आ बिसरबो करिते अछि।

रस्तापर ठाढ़ भेल देखि सुमैतलाल काका बजला-

“बौआ, दरबज्जेपर चलह। निचेनसँ किछु गपो-सप्प करब।”

दुनू गोरे ससैर कऽ जाबे दरबज्जापर आबी ताबे सुमि त्रो काकी चाह नेने पहुँच गेली।

गप-सप्प करैसँ पहिने जहिना किनको-किनको एकरस खान-पान भेने, माने कोनो पेय वा भोज्य वस्तुक एकरंग प्रभाव भेने विचारक रस सेहो मिलए-जुलए लगैए तहिना अपनो भेल।

सुमैतलाल काका बाढ़िक विभीषिकाकेँ देखि जेना जीवन हारि रहल छला तहिना बजला-

“बौआ, जहिना जीवनक आदि तहिना ने जीवनक अन्त सेहो दुखदायी होइते अछि।”

बुझल बात अपनो अछिए, किए तँ तुलसी बाबा सेहो कहने छैथ।

तँए रामायणिक विचारक उत्कण्ठा आकि अपन मनक उत्कण्ठा बेसम्हार भऽ गेल, तँए बिच्चेमे बजा गेल-

"हँ से तँ अछिए।"

हमर उत्कण्ठा देखि आकि अपन उत्कण्ठा सुमैतलाल काकाकेँ जगलैन से वएह जनता मुदा बिच्चेमे विचारकेँ दोसर दिस मोड़ैत बजला-

"अखन अपना दुनू गोरे एकठाम बैस जहिना जीवन-मरणक दुखक विचार कऽ रहल छी तहिना ने सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि।"

हमरो नइ रहल गेल, बजलौं-

"से तँ आबिये रहल अछि।"

शतरंजक गोटीक उन्टा चालि जकाँ सुमैतलाल काका बजला-

"कियो अपन जन्मकालक दुख दोसर बच्चाक जन्म-दुख देखिये-जानिकऽ अनुमान लगबैए आ मृत्यु तँ अखन दूर अछिए, तँए ओहो अनुमानिते अछि। ओना, ओकरा अनुमानित नहियों कहल जा सकैए मुदा ओकरा अनुमानित ऐ दुआरे कहल जा सकैए जे सोझहामे मृत्यु देखला पछातियो लोक मृत्यु-दुख बिना कहनहि मरि जाइए।"

धरमागती कहै छी, सुमैतलाल कक्काक विचार नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं, जइसँ मन अकछए लगल। जे सुमैतलाल काका बुझि गेला। ओना, अपना मनमे उठि रहल छल जे अखुनका जे स्थिति अछि, बाढ़िक स्थिति, तइ दिशामे किछु गप-सप्प भइये ने रहल अछि आ अनेरे जीवन-मृत्युक हिसाब पहिनहि जोड़ए लगलौं। भेल तँ एतबे ने जे सचेत भऽ चेतैत जीवन-यापन करी। बजलौं-

"काका, सतासी ईस्वीमे जे बाढ़ि आएल छल ओइ समयमे लोकक घरमे औझुका जकाँ लत्तो-कपड़ा आ बरतनो-बासन आ चीजो-वौस नइ छल तँए कम छैत भेल, मुदा ऐबेर तँ..!"

1987 इस्वीक बाढ़िक चर्च उठिते सुमैतलाल काका जेना वर्त्तमानसँ भूत दिस बढ़ि गेला। भूत दिस बढ़िते मन गवाही देलकैन, तँए 1987 इस्वीक अनुभवक आधारपर विचारि बजला-

"जँ समतूल समय बनल रहत तखन औझुका भरपाइ करैमे , नोकसानक भरपाइमे पाँच बर्ख लागत।"

ओना, अपन अनुभवक आधारपर सुमैतलाल काका बजला, मुदा ने सबहक जीवन एक रंग अछि आ ने बाढ़िक प्रभावे सभपर एकरंग पड़ैए। किए तँ धाराक मुँहपर जे पड़ै छैथ, माने जिनकर खेत-खरिहाँन, घर-दुआर पड़ै छैन तिनकर क्षति आ जिनकर खेत -खरिहाँन, घर-दुआर धारासँ हटल रहल, खाली पानिक बढ़बारिसँ पानि लागल, तिनकर क्षतिमे अन्तर भइये जाइए जइसँ भरपाइ होइमे सेहो कम-बेसी समय लगैत अछि। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे बाढ़िसँ पूर्व, माने बिपैत अबैसँ पूर्व, सेहो सबहक स्थिति एक रंग नहियेँ रहैए जे एकरंगक बिपैत पड़लापर सभकेँ एके-रंग दुख झेलए पड़त। मुदा से सभ नइ बाजि, सामंजस करैत बजलौं-

"हँ, से तँ लगबे करत। मुदा जैठाम कहियो काल बाढ़ि आबैत तैठाम ने आ जैठाम साले-साल वा सालमे एकसँ अधिक बेर औत तैठामक स्थिति तँ भयावहोसँ भयावह भइये जाइए।"

हमर विचार जेना सुमैतलाल काकाकेँ जँचलैन, तहिना मुड़ी डोलबैत बजला-

"हँ, से तँ होइतो अछि आ सभ दिनसँ होइतो आबिये रहल अछि।"

सुमित्रा काकी चुपचाप ठाढ़ छेली आ हम दुनू गोरे माने सुमैतलाल काका आ अपने, विचारक झिक्का-झिक्की कइये रहल छेलौं कि आशानन भायकेँ अबैत देखलयैन। हुनका देखिते हमरो आ सुमैतोलाल कक्काक

उत्कण्ठा आरो उग्र भेल। किए तँ अपने दुनू गोरे बाढ़िक रूप -रेखा अपना आँखिये जे देखै छेलौं से तँ सोझेमे छल मुदा असगरे आशानन भाय बेपीड़ित भेल आबि रहला अछि तँए हुनकर पीड़ा किए ने दुनू गोरे पहिने सुनी। ओना, सुमित्रा काकी कछमछाए लगली जे बेपीड़ितकेँ पीड़ा कम करैले पहिने किछु जलथम्हन करब जरूरी अछि। होइते अहिना अछि जे जिनगीक जे कोनो बुनियादी खगता अछि–बुनियादी खगता भेल जे जइ बिना जिनगी समुचित ढंगसँ चलब कठिन होइए, पहिने तेकर निमरजना करी।

आशानन भाय अबिते बजला-

“काका, बुझू जे खेल भऽ रहल अछि। जहिना मदारी, बानरकेँ किछु नाच सिखा नचबैए तहिना अपनो सबहक दशा अछि।”

ओना, अपना मनमे उठैत रहए जे आशानन भाय बाढ़िक समाचार बजता मुदा बाजि रहल छैथ मदारी आ बानरक नाच..! नीक जकाँ आशानन भाइक विचार नहि बुझि पेलौं, तँए अपनाकेँ ओछ–माने कम बुझब–बुझि चुपे रहलौं।

मुदा सुमैतलाल काका आशानन भाइक बात बुझि गेला, तँए हुँकारी दैत बजला-

“हँ! से तँ भइये रहल अछि।”

ले बङ्और! दुनू गोरेक मुँह-मिलानी भऽ गेलैन आ अपने किछु बुझबे ने केलौं..! तैबीच, सुमित्रा काकी आँगनसँ चाह नेने पहुँच गेली।

अनदिना जकाँ सुमित्रा काकी चाह बनबै नइ छेली, भोरे तेते चाह बना कऽ थरमशमे रखि नेने छैथ जे दुपहर तक बनबैक काज नहि येँ पड़तैन।

चाह पीबिते आशानन भाइक मन जेना हल्लुक भेलैन तहिना बजला- “जिनगीक बुनियादी आवश्यकता जाबे समतूल नइ हएत, ताबे

ओ बेढंगपन ढंगसँ चलबे करत।"

आशानन भाइक सौंस विचार माने पूर्ण विचार तँ नहि बुझि पेलौं मुदा ढंग आ बेढंग तँ बुझबे केलौं। तँए बजा गेल -

"हँ, तइमे कोन कहैक बात अछि।"

देशक स्वतंत्रता लेल अंगरेज संग लड़ाइमे सुमैतलाल काका हिस्सा तँ नहि लेलैन मुदा जन्म तँ भइये गेल छेलैन, जइसँ गुलामी शासनसँ स्वतंत्र जिनगीक साँस तँ लेबे केलैन।

मुड़ी डोलबैत सुमैतलाल काका आशानन भाइक विचारक समर्थन केलैन मुदा बजला किछु ने। आशानने भाय बजला-

"जखन देश आजाद भेल तँ सत्ता-सँ-जनता धरि–सबहक मनमे छेलैन्हे जे किसानक देश भारत छी। प्रमुख कार्यक श्रेणीमे कोसी, कमला नदीक दुनू दिस बान्ह बनबैक संग दुनू दिस नहरो बनबैक योजना बनल। जइसँ अनेको रंगक खुशहालीक विचार सबहक मनमे जगबे केलैन।"

आशानन भाइक बात सुनि बजलौं -

"हँ, से तँ सभकेँ जगबे केलैन..!"

अपन विचारमे सह पबिते आशानन भाय बजला-

"बौआ, यएह कलेश मनकेँ तेना घेर नेने अछि जे किछु बकारे ने फुटैए..!"

आशानन भाइक विचार सुनि अपनो बकार नहि फुटल, मुदा पक्षमे मुड़ी तँ डोलेबे केलौं।

आशानन भाय बजला-

"ने देशक शासन किसानक हाथमे रहल आ ने कृषि उत्पादित वस्तुक औद्योगीकरण भेल जइसँ उद्योग बढ़ैत। जखन उद्योग बढ़ैत तखने रोजगारक जाल लगि जाइत, से नइ भेल। जेहेन जिनगी बनक चाहै छल,

से नइ बनि सकल।”

कलेशसँ कलित भेल सबहक आँखिक आगू दू हजार उन्नैस इस्वीक बाढ़िक विभिषिका नाचए लगल।

❑ *शब्द संख्या : 1509, तिथि : 20 जुलाई 2019*

कथा लेखन क्रम 2017-19

284. झीसीक मजा- शब्द संख्या : 453, तिथि : 1 जनवरी 2014

285. मति-गति- शब्द संख्या : 1807, तिथि : 07 जनवरी 2014

286. रिजल्ट- शब्द संख्या : 2343, तिथि : 16 जनवरी 2014

287. अपन सन मुँह- शब्द संख्या : 5696, तिथि : 25 जनवरी 2014

288. सुमति- शब्द संख्या : 3072, तिथि : 30 जनवरी 2014

289. फेर पुछबैन- शब्द संख्या : 346, तिथि : 31 जनवरी 2014

290. माघक घूर- शब्द संख्या : 1683, तिथि : 06 फरवरी 2014

291. खर्च- शब्द संख्या : 330, तिथि : 07 फरवरी 2014

292. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या : 342, तिथि : 10 फरवरी 2014

293. पेटगनाह- शब्द संख्या : 593, तिथि : 14 फरवरी 2014

294. बड़की माता- शब्द संख्या : 1224, तिथि : 18 फरवरी 2014

295. धरती-अकास- शब्द संख्या : 184 , तिथि : 19 फरवरी 2014

296. बकठाँइ- शब्द संख्या : 883, तिथि : 24 फरवरी 2014

297. चैन-बेचैन- शब्द संख्या : 936, तिथि : 09 मार्च 2014

298. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या : 645 , तिथि : 11 मार्च 2014

299. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या : 287, तिथि : 12 मार्च 2014

300. नीक बोल- शब्द संख्या : 565, तिथि : 13 मार्च 2014

301. सुआद- शब्द संख्या : 624, तिथि : 14 मार्च 2014

302. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या : 690, तिथि : 19 मार्च 2014

303. भोँटक गहमी- शब्द संख्या : 508, तिथि : 24 मार्च 2014

304. भँसैत नाह- शब्द संख्या : 597, तिथि : 26 मार्च 2014

305. पान पराग- शब्द संख्या : 1692, तिथि : 29 मार्च 2014

306. सिरमा- शब्द संख्या : 760, तिथि : 31 मार्च 2014

307. नौमीक हकार- शब्द संख्या : 1119, तिथि : 03 अप्रैल 2014

308. फोंक मकड़- शब्द संख्या : 1744, तिथि : 10 अप्रैल 2014

309. केते लग केते दूर - शब्द संख्या : 1252, तिथि : 14 अप्रैल 2014

310. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या : 326, तिथि : 16 अप्रैल 2014

311. खोंटकर्मा- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 19 अप्रैल 2014

312. किछु ने- शब्द संख्या : 503, तिथि : 22 अप्रैल 2014

313. झकास- शब्द संख्या : 1589, तिथि : 26 अप्रैल 2014

314. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या : 2919, तिथि : 01 मई 2014

315. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या : 611, तिथि : 04 मई 2014

316. अर्जुन रोग- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 7 मई 2014

317. गरदैन कट्टा बेटा- शब्द संख्या : 575, तिथि : 10 मई 2014

318. नैहराक धाड़- शब्द संख्या : 885, तिथि : 14 मई 2014

319. अवाक- शब्द संख्या : 1041, तिथि : 17 मई 2014

320. पोखैरक सैरात- शब्द संख्या : 923, तिथि : 20 मई 2014

321. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या : 409, तिथि : 22 मई 2014

322. धरम काँट- शब्द संख्या : 395, तिथि : 23 मई 2014

323. पल भरि- शब्द संख्या : 1116, तिथि : 24 मई 2014

324. किरदानी- शब्द संख्या : 5309, तिथि : 14 जुन 2014

325. सगहा- शब्द संख्या : 2860, तिथि : 22 जुन 2014

326. अकाल- शब्द संख्या : 1238, तिथि : 24 जुन 2014

327. उझट बात- शब्द संख्या : 1152, तिथि : 26 जुन 2014

328. कर्जखौक- शब्द संख्या : 1175, तिथि : 2 जुलाई 2014

329. उनटन- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 6 जुलाई 2014

330. रेहना चाची- शब्द संख्या : 1307, तिथि : 9 जुलाई 2014

331. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 11 जुलाई 2014

332. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या : 1229, तिथि : 14 जुलाई 2014

333. हारि- शब्द संख्या : 1240, तिथि : 16 जुलाई 2014

334. सोनाक सुइत- शब्द संख्या : 1135, तिथि : 17 जुलाई 2014

335. मरुभूमि- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 20 जुलाई 2014

336. असगरे- शब्द संख्या : 1557, तिथि : 24 जुलाई 2014

337. पुरनी नानी- शब्द संख्या : 1304, तिथि : 27 जुलाई 2014

338. कटा-कटी- शब्द संख्या : 1140, तिथि : 30 जुलाई 2014

339. केते लग केते दूर - शब्द संख्या : 1206, तिथि : 3 अगस्त 2014

340. गलती अपने भेल- शब्द संख्या :3386, तिथि : 06 अगस्त 2014

341. चोरक चोरबती- शब्द संख्या : 884, तिथि : 6 अगस्त 2014

342. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 10 अगस्त 2014

343. सजल स्मृति- शब्द संख्या : 2363, तिथि : 14 अगस्त 2014

344. सनेस- शब्द संख्या : 2654, तिथि : 16 अगस्त 2014

345. सए कच्छे- शब्द संख्या : 488, तिथि : 19 अगस्त 2014

346. एक मुठी घास- शब्द संख्या : 411, तिथि : 21 अगस्त 2014

347. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या : 318, तिथि : 24 अगस्त 2014

348. पुरस्कार- शब्द संख्या : 2414, तिथि : 24 अगस्त 2014

349. गावीस मोइस- शब्द संख्या : 687, तिथि : 29 अगस्त 2014

350. मनकमना- शब्द संख्या : 6110, तिथि : 19 सितम्बर 2014

351. घरवास- शब्द संख्या : 4879, तिथि : 26 सितम्बर 2014

352. समधीन- शब्द संख्या : 6098, तिथि : 04 अक्टुबर 2014

353. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या : 1616, तिथि : 7 अक्टुबर 2014

354. कलम हानि कऽ- शब्द संख्या : 2226, तिथि : 10 अक्टुबर 2014

355. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 14 अक्टुबर 2014

356. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या : 2596, तिथि : 20 अक्टुबर 2014

357. जितिया पाबैन- शब्द संख्या : 3706, तिथि : 24 अक्टुबर 2014

358. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या : 3690, तिथि : 30 अक्टुबर 2014

359. भैयारी हक- शब्द संख्या : 3131, तिथि : 4 नवम्बर 2014

360. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या : 3335, तिथि : 13 नवम्बर 2014

361. खुदियाएल- शब्द संख्या : 2887, तिथि : 17 नवम्बर 2014

362. खटहा आम- शब्द संख्या : 3515, तिथि : 22 नवम्बर 2014

363. ढकरपेँच- शब्द संख्या : 3759, तिथि : 30 नवम्बर 2014

364. असहाज- शब्द संख्या : 2865, तिथि : 04 दिसम्बर 2014

365. समरथाइक भूत- शब्द संख्या : 3853, तिथि : 07 दिसम्बर 2014

366. विदाइ- शब्द संख्या : 5131, तिथि : 17 दिसम्बर 2014

367. खलओदार- शब्द संख्या : 735, तिथि : 19 दिसम्बर 2014

368. मनुखदेवा- शब्द संख्या : 1027, तिथि : 22 दिसम्बर 2014

369. उमेद- शब्द संख्या : 3643, तिथि : 31 दिसम्बर 2014

370. गलगर भैंस- शब्द संख्या : 3392, तिथि : 4 जनवरी 2015

371. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या : 3328, तिथि : 9 जनवरी 2015

372. सुरता- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 15 जनवरी 2015

373. असुध मन- शब्द संख्या : 2353, तिथि : 19 जनवरी 2015

374. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या : 1410, तिथि : 21 जनवरी 2015

375. ठोररंगू- शब्द संख्या : 1531, तिथि : 23 जनवरी 2015

376. लगबे ने कएल- शब्द संख्या : 1449, तिथि : 25 जनवरी 2015

377. उकड्ड समय- शब्द संख्या : 1467, तिथि : 27 जनवरी 2015

378. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या : 1615, तिथि : 29 जनवरी 2015

379. चौरचनक दही- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 31 जनवरी 2015

380. अपन मन अपन धन- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 3 फरवरी 2015

381. टुटली मरैया- शब्द संख्या : 1951, तिथि : 7 फरवरी 2015

382. हकार- तिथि : 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या : 1911

383. दहेजुआ गाए- शब्द संख्या : 1908, तिथि : 15 फरवरी 2015

384. मेटाइत जिनगी- शब्द संख्या : 2129, तिथि : 20 फरवरी 2015

385. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!- शब्द संख्या:1996, तिथि : 23 फरवरी 2015

386. लेहाज- शब्द संख्या : 1906, तिथि : 26 फरवरी 2015

387. विचार हेरा गेल- शब्द संख्या : 1917, तिथि : 1 मार्च 2015

388. ओ दिन- शब्द संख्या : 1782, तिथि : 4 मार्च 2015

389. उरीन- शब्द संख्या : 3235, तिथि : 8 मार्च 2015

390. नहरकन्हा- शब्द संख्या : 1209, तिथि : 11 मार्च 2015

391. बटखौक- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 14 मार्च 2015

392. पसेनाक धरम- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 16 मार्च 2015

393. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या : 1103, तिथि : 18 मार्च 2015

394. हँसीएमे उड़ि गेलौं - शब्द संख्या : 1243, तिथि : 20 मार्च 2015

395. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या : 1234, तिथि : 23 मार्च 2015

396. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या : 1207, तिथि : 26 मार्च 2015

397. नोकरिहारा- शब्द संख्या : 1146, तिथि : 26 मार्च 2015

398. घसवाहि- शब्द संख्या : 1213, तिथि : 28 मार्च 2015

399. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या : 1319, तिथि : 1 अप्रैल 2015

400. छूआ- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 6 अप्रैल 2015

401. दोसराइत- शब्द संख्या : 1270, तिथि : 9 अप्रैल 2015

402. लछनमान- शब्द संख्या : 1173, तिथि : 13 अप्रैल 2015

403. हमर कोन दोख- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 17 अप्रैल 2015

404. मौसी- शब्द संख्या : 1393, तिथि : 21 अप्रैल 2015

405. नटकिया गति- शब्द संख्या : 1313 24 अप्रैल 2015

406. खाए चाहैए- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 27 अप्रैल 2015

407. मधुमाछी- शब्द संख्या : 1892, तिथि : 07 मई 2015

408. दनगर घास- शब्द संख्या : 2775, तिथि : 13 मई 2015

409. सझिया खेती- शब्द संख्या : 3135, तिथि : 23 मई 2015

410. मुफतिया माल- शब्द संख्या : 3231, तिथि : 29 मई 2015

411. मथाहाथ- शब्द संख्या : 2923, तिथि : 02 जून 2015

412. पहपैट- शब्द संख्या : 1369, तिथि : 05 जून 2015

413. इजोरिया राति- शब्द संख्या : 1512, तिथि : 07 जून 2015

414. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 12 जून 2015

415. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या : 605, तिथि : 14 जून 2015

416. डकरा हाल- शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015

417. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015

418. गठूलाक गारि- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015

419. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015

420. गामक बान्ह- शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई 2015

421. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई 2015

422. सीरक गाछ- शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई 2015

423. हरदीक हरदा- शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई 2015

424. जाम- शब्द संख्या : 3355, तिथि : 29 जुलाई 2015

425. गण्डा- शब्द संख्या : 2304, तिथि : 5 अगस्त 2015

426. हाथी आ मूस- शब्द संख्या : 3016, तिथि : 11 अगस्त 2015

427. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या : 3625, तिथि : 17 अगस्त 2015

428. फलहार- शब्द संख्या : 2350, तिथि : 25 अगस्त 2015

429. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 31 अगस्त 2015

430. क्रियाशील- शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015

431. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015

432. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015

433. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टूबर 2015

434. गजपट खेती- शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टूबर 2015

435. समुद्री विद्या- शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टूबर 2015

436. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टूबर 2015

437. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या : 679, तिथि : 13 अक्टूबर 2015

438. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टूबर 2015

439. धोखा- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टूबर 2015

440. खसैत गाछ- शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टूबर 2015

441. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्वर 2015

442. प्रीगर शत्रु- शब्द संख्या : 1087, तिथि : 26 दिसम्बर 2015

443. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 31 दिसम्बर 2015

444. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या : 2616, तिथि : 4 जनवरी 2016

445. एक घोंट पानि- शब्द संख्या : 2516, तिथि : 10 जनवरी 2016

446. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द : 3371, तिथि : 16 जनवरी 2016

447. माइक वचन- शब्द संख्या : 2999, तिथि : 21 जनवरी 2016

448. पान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 26 जनवरी 2016

449. आजुक जिनगीक आइ परीक्षा- शब्द : 1676, तिथि : 01 फरवरी 2016

450. शुभचिन्तक- शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016

451. करिछौन लाली- शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016

452. मोहरा- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016

453. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016

454. जेना हाथी रही- शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016

455. कठफल- शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016

456. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016

457. झूठे- शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016

458. लाही- शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016

459. परतीहा खढ़- शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016

460. उजगी- शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016

461. हाथक जिनगी- शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016

462. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016

463. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016

464. अपने केलहा- शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016

465. बत्तु- शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016

466. कछमछी- शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016

467. गैत-वीध- शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016

468. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016

469. एक दिन- शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016

470. दुधियाएल बरखा - शब्द संख्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016

471 गलफूलू- शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016

472. बिटगरहा- शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016

473. आब नइ आगि लगैए?- शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016

474. कटौज- शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016

475. बाल बोध- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016

476. डभियाएल गाम- शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016

477. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016

478. मरियाएल मन- शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016

479. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016

480. कन्हा भँट्टा- शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016

481. जिगेसा- शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016

482. गुलेती दास- शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016

483. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016

484. दुरकाल- शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016

485. कलंक- शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016

486. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016

487. बगदल गाम- शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016

488. बत्तीसोअना- शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016

489. कचहरिया रोग- शब्द संख्या : 1651, तिथि : 12 सितम्बर 2016

490. दिन घटि गेल- शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टुबर 2016

491. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टुबर 2016

492. गामक सुरता- शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टुबर 2016

493. खतियाएल घर- शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016

494. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016

495. अनका बेर ओंघी - शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016

496. देव उठान- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016

497. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016

498. भोरक सपना- शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016

499. बालमण्डली- शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016

500. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016

501. माघक चाह- शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016

502. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016

503. माघक घूर- शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016

504. पाही पट्टी- शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016

505. बीरांगना- शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016

506. स्मृति शेष- शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017

507. मनकेँ फुसलबै छी- शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017

508. चहकल विचार- शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017

509. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017

510. बीरांगना : 2- शब्द संख्या : 1992, 29 जनवरी 2017

511. पकिया चेला- शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017

512. कान फुटल कप- शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017

513. वर्थ डे- शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017

514. जानक मोल- शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017

515. गामक कटान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017

516. कर्ज- शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017

517. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017

518. अपन गारि अपन दुआरि - शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017

519. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017

520. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017

521. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017

522. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017

523. जारैनक दुख मेटा गेल - शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017

524. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017

525. हरवाहि- शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस (01 मई) 2017

526. क्रान्तियोग- शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017

527. उचितवक्ता- शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017

528. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017

529. विघटन- शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017

530. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017

531. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017

532. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017

533. मर्माहत- शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017

534. गुणहीन- शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाई 2017

535. समझौता- शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाई 2017

536. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाई 2017

537. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाई 2017

538. नमहर फेरा- शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाई 2017

539. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017

540. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017

541. बेटपन- शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017

542. छातीक हार- शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017

543. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017

544. पैंतीस साल पछुआ गेलौं - शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017

545. पुरान साड़ी- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 2453, तिथि : 24 अक्टुबर 2017

546. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टुबर 2017

547. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017

548. किछु ने फुरैए- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 12 नवम्बर 2017

549. महिरम- शब्द संख्या : 1984, तिथि : 20 नवम्बर 2017

550. बेर परहक भदवा- शब्द संख्या : 2726, तिथि : 29 नवम्बर 2017

551. सड़क-कातक खेत- शब्द संख्या : 2722, तिथि : 10 दिसम्बर 2017

552. दोहरी हाक- शब्द संख्या : 2700, तिथि : 21 दिसम्बर 2017

553. पाइक इज्जत- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 05 जनवरी 2018

554. सेहन्ता- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 11 जनवरी 2018

555. राक्षसक झड़- शब्द संख्या : 1649, तिथि : 15 जनवरी 2018

556. बेरपर- शब्द संख्या : 2585, तिथि : 19 जनवरी 2018

557. केकरा-ले केलौं- शब्द संख्या : 2649, तिथि : 23 जनवरी 2018

558. स्वाभिमानी जिनगी- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 28 जनवरी 2018

559. बाबाक बाग-बगिया- शब्द संख्या : 3089, तिथि : 3 फरवरी 2018

560. अब-तब- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 7 फरवरी 2018

561. अगिलह- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 11 फरवरी 2018

562. कुकुरपन- शब्द संख्या : 2229, तिथि : 28 फरवरी 2018

563. हेराएल जिनगी- शब्द संख्या : 3107, तिथि : 5 मार्च 2018

564. आशापर पानि फेर गेल- शब्द संख्या : 2447, तिथि : 9 मार्च 2018

565. देखल दिन- शब्द संख्या : 2592, तिथि : 27 मार्च 2018

566. इज्जत उतैर गेल- शब्द संख्या : 1905, तिथि : 30 मार्च 2018

567. संकट- शब्द संख्या : 2595, तिथि : 4 अप्रैल 2018

568. एकतीस मार्च- शब्द संख्या : 2814, तिथि : 10 अप्रैल 2018

569. गेल माघ उनतीस दिन बॉकी- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 15 अप्रैल 2018

570. बापक चलैत- शब्द संख्या : 2606, तिथि : 20 अप्रैल 2018

571. बेटाक चलैत- शब्द संख्या : 2889, तिथि : 25 अप्रैल 2018

572. प्रवल इच्छा- शब्द संख्या : 2301, तिथि : 30 अप्रैल 2018

573. ठका गेलौं- शब्द संख्या : 2052, तिथि : 18 जून 2018

574. हारि-जीत- शब्द संख्या : 3190, तिथि : 24 जून 2018

575. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या : 1095, तिथि : 27 जून 2018

576. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या : 1608, तिथि : 01 जुलाई 2018

577. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 5 जुलाई 2018

578. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या : 1584, तिथि : 9 जुलाई 2018

579. केकरो कियो ने- शब्द संख्या : 718, तिथि : 11 जुलाई 2018

580. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या : 1420, तिथि : 13 जुलाई 2018

581. उदय-प्रलय- शब्द संख्या : 1574, तिथि : 15 जुलाई 2018

582. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या : 1458, तिथि : 19 जुलाई 2018

583. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या : 1471, तिथि : 21 जुलाई 2018

584. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या : 2576, तिथि : 31 जुलाई 2018

585. करतब- शब्द संख्या : 2132, तिथि : 04 अगस्त 2018

586. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या : 924, तिथि : 19 सितम्बर 2018

587. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या : 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

588. चटवाह : शब्द संख्या- 2134, तिथि : 4 अक्टुबर 2018

589. भगैतिया- शब्द संख्या : 2177, तिथि : 8 अक्टुबर 2018

590. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या : 2196, तिथि : 12 अक्टुबर 2018

591. यादास्त- शब्द संख्या : 1870, तिथि : 15 अक्टुबर 2018

592. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 19 अक्टुबर 2018

593. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या : 1922, तिथि : 23 अक्टुबर 2018

594. दिवालीक दीप- शब्द संख्या : 2422, तिथि : 29 अक्टुबर 2018

595. हारि केना मानब- शब्द संख्या : 2054, तिथि : 02 नवम्बर 2018

596. अप्पन गाम- शब्द संख्या : 1940, तिथि : 06 नवम्बर 2018

597. परिछन- शब्द संख्या : 2661, तिथि : 11 नवम्बर 2018

598. झूठ सपना- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 15 नवम्बर 2018

599. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या : 2530, तिथि : 19 नवम्बर 2018

600. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या : 2381, तिथि : 24 नवम्बर 2018

601. पुस्तकालय- शब्द संख्या : 2333, तिथि : 29 नवम्बर 2018

602. विचारभेद- शब्द संख्या : 2553, तिथि : 04 दिसम्बर 2018

603. एकरवा बानर- शब्द संख्या : 2793, तिथि : 09 दिसम्बर 2018

604. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या : 2759, तिथि : 14 दिसम्बर 2018

605. रंगमे भंग- शब्द संख्या : 2237, तिथि : 20 दिसम्बर 2018

606. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या : 2590, तिथि : 17 जनवरी 2019

607. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

608 मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या : 3473, तिथि : 03 फरवरी 2019

609. फुइसिक रगड़- शब्द संख्या : 2225, तिथि : 07 फरवरी 2019

610. उखमज- शब्द संख्या : 3964, तिथि : 16 फरवरी 2019

611. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या : 2286, तिथि : 19 फरवरी 2019

612. अगुताइ भेल : शब्द संख्या : 1054, तिथि : 22 फरवरी 2019

613. थैंक्यू पापा : शब्द संख्या : 965, तिथि : 24 फरवरी 2019

614. किसुनपुराक हाट : शब्द संख्या : 995, तिथि : 25 फरवरी 2019

615. धनखेतीक बैगन : शब्द संख्या : 1051, तिथि : 28 फरवरी 2019

616. चितवनक शिकार : शब्द संख्या : 1071, तिथि : 02 मार्च 2019

617. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं : शब्द संख्या : 1086 , तिथि : 04 मार्च 2019

618. धुआ साड़ी : शब्द संख्या : 1132, तिथि : 06 मार्च 2019

619. राजरोग : शब्द संख्या : 1274, तिथि : 10 मार्च 2019

620. संकल्प : शब्द संख्या : 1520, तिथि : 12 मार्च 2019

621. एकटा नमहर दुख मेटा गेल : शब्द संख्या : 1349 , तिथि : 15 मार्च 2019

622. काजक मोल : शब्द संख्या : 1090, तिथि : 16 मार्च 2019

623. एतए बसब कठिन अछि : शब्द संख्या : 1010, तिथि : 19 मार्च 2019

624. स्वनिर्मित जिनगी : शब्द संख्या : 1091, तिथि : 22 मार्च 2019

625. कपटलालक मृत्यु : शब्द संख्या : 987, तिथि : 25 मार्च 2019

626. गामक ढहल समाज : शब्द संख्या : 966, तिथि : 27 मार्च 2019

627. लजगर लोक : शब्द संख्या : 1003, तिथि : 29 मार्च 2019

628. खरिहाँन उपैट गेल : शब्द संख्या : 1218, तिथि : 02 अप्रैल 2019

629. पगलपन : शब्द संख्या : 1113, तिथि : 04 अप्रैल 2019

630. छलाननक सराध : शब्द संख्या : 996, तिथि : 06 अप्रैल 2019

631. छाती बज्जर केलौं : शब्द संख्या : 1402 , तिथि : 08 अप्रैल 2019

632. नाँहकमे दोख : शब्द संख्या : 1463, तिथि : 16 अप्रैल 2019

633. सग्गा पिऔज : शब्द संख्या : 1530, तिथि : 20 अप्रैल 2019

634. गाछसँ नमहर फड़ : शब्द संख्या : 1003, तिथि : 22 अप्रैल 2019

635. जिनगीमे जान आएल : शब्द संख्या : 1198, तिथि : 25 अप्रैल 2019

636. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै : शब्द संख्या : 1080, तिथि : 26 अप्रैल 2019

637. चौरस खेतक चौरस उपज : शब्द संख्या : 998, तिथि : 29 अप्रैल 2019

638. सिकिया नेता : शब्द संख्या : 1023, तिथि : मजदूर दिवस, 2019

639. मुँह खुजिते नाक कटि गेल : शब्द संख्या : 1475, तिथि : 04 मई 2019

640. जेकरे भर तेकरे डर : शब्द संख्या : 1214, तिथि : 06 मई 2019

641. ललियाएल चेहरा करियाएल मन : शब्द संख्या : 1194, तिथि : 09 मई 2019

642. पुरुखक भर : शब्द संख्या : 1109, तिथि : 12 मई 2019

643. भकमोड़मे पड़ि गेलौं : शब्द संख्या : 1411 , तिथि : 15 मई 2019

644. अपन इमान मरि गेल : शब्द संख्या : 1071, तिथि : 17 मई 2019

645. गामक रूप बदैल देब : शब्द संख्या : 1004, तिथि : 19 मई 2019

646. कुभेला : शब्द संख्या : 992, तिथि : 21 मई 2019

647. देखौंस : शब्द संख्या : 945 , तिथि : 23 मई 2019

648. समयसँ पहिने चेत किसान : शब्द संख्या : 1326, तिथि : 25 मई 2019

649. काजक मेहपन : शब्द संख्या : 947, तिथि : 27 मई 2019

650. पनरह किलोक कदीमा : शब्द संख्या : 941, तिथि : 29 मई 2019

651. फेर नढ़रो बेल तर जेती : शब्द संख्या : 1553, तिथि : 01 जून 2019

652. काजक धुनि : शब्द संख्या : 1065, तिथि : 03 जून 2019

653 सोरहामे सुर्रा लगि गेल : शब्द संख्या : 1618, तिथि : 06 जून 2019

654. अगराही : शब्द संख्या : 944, तिथि : 08 जून 2019

655. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा : शब्द संख्या : 1556 , तिथि : 11 जून 2019

656. भौक- शब्द संख्या : 1403, तिथि : 14 जून 2019

657. मनतरक पावर- शब्द संख्या : 1598, तिथि : 17 जून 2019

658. हाल-चाल- शब्द संख्या : 1519, तिथि : 20 जून 2019

659. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या : 1525, तिथि : 23 जून 2019

660. के मानत?- शब्द संख्या : 1721, तिथि : 29 जून 2019

661. दियादीक फेड़- शब्द संख्या : 1412, तिथि : 03 जुलाई 2019

662. वाह रे आदत- शब्द संख्या : 1455, तिथि : 06 जुलाई 2019

663. कटबी सुइद- शब्द संख्या : 1435, तिथि : 09 जुलाई 2019

664. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या : 1948, तिथि : 13 जुलाई 2019

665. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या : 1539, तिथि : 16 जुलाई 2019

666. कलेश- शब्द संख्या : 1509, तिथि : 20 जुलाई 2019

667. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या : 2338, तिथि : 24 जुलाई 2019

668. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या : 2046, तिथि : 28 जुलाई 2019

669. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या : 1856, तिथि : 31 जुलाई 2019

670. भेँट-घाँट- शब्द संख्या : 1884, तिथि : 03 अगस्त 2019

671. कोसा- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 07 अगस्त 2019

672. दहेजक गाए- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 15 अगस्त 2019

673. चलती- शब्द संख्या : 1770, तिथि : 18 अगस्त 2019

674. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या : 1901, तिथि : 21 अगस्त 2019

675. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या : 2198, तिथि : 24 अगस्त 2019

676. अपन करखन्ना- शब्द संख्या : 1704, तिथि : 28 अगस्त 2019

677. लड़कपन- शब्द संख्या : 2150, तिथि : 03 अक्टुबर 2019

678. कुदृष्टि- शब्द संख्या : 2435, तिथि : 08 अक्टुबर 2019

679. हकार- शब्द संख्या : 2012, तिथि : 16 अक्टुबर 2019

680. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या : 2286, तिथि : 25 अक्टुबर 2019

681. दोहरी दहार- शब्द संख्या : 2154, तिथि : 02 नवम्बर 2019

682. पसेनाक मोल- शब्द संख्या : 1748, तिथि : 06 नवम्बर 2019

683. बुढ़ापा- शब्द संख्या : 2122, तिथि : 10 नवम्बर 2019

684. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या : 2092, तिथि : 14 नवम्बर 2019

685. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या : 2416, तिथि : 18 नवम्बर 2019

686. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 22 नवम्बर 2019

687. काजक रोप- शब्द संख्या : 2679, तिथि : 21 दिसम्बर 2019

688. खटसमाद- शब्द संख्या : 2909, तिथि : 27 दिसम्बर 2019



---

[1] मिलान

[2] बारह बर्ख

[3] महाभारतक अर्जुन माछक आँखि छेदनिहार

[4] जेठ मासक

[5] आदर सूचक विचारकेँ

[6] वैदिक रीति भेल कोनो काजक पराकाष्ठाक सुन्दर रूप

[7] बर पक्ष

[8] वेना भेल किछु अगुरवार रकमक लेन-देन, कोनो वस्तु दोसरक हाथसँ अपना हाथ अबैक बीचमे वेना चलैए।

[9] सुभ्यस्त घर